सम्पादकीय

हज़रत मसीह मौऊद (अ) मानव जाति के सेवक

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खुद को "मानव जाति का सेवक" कहा। लेकिन जानना चाहिए कि आपका मानव जाति का सेवक होना आध्यात्मिक आधार से है। यद्यपि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने शारीरिक लिहाज़ से भी लोगों की बहुत सेवा की और एक ऐसी जमाअत की स्थापना फ़रमा दी जो सवा सौ साल से मानव जाति के आध्यात्मिक सेवा के साथ साथ, शारीरिक सेवा में भी व्यस्त है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का स्थान और सम्मान एक आध्यात्मिक सेवक होने का है। हदीस में भी इस ओर संकेत है कि

يُفِيْضُ الْمَالَ حَتّٰى لَا يَقْبَلَهٗ اَحَدٌ

(बुख़ारी किताबुल अंबिया बाब नुज़ूल ईसा मसीह), अर्थात आने वाला मसीह माल लुटाएगा परन्तु लोग उसे स्वीकार नहीं करेंगे. अगर रूहानी माल मुराद लिया जाए तो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की यह महान पेशगोई सच्ची साबित होती है क्योंकि सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अत्याधिक रूहानी ख़ज़ाने लुटाए परन्तु दुनिया उस से लेने से इंकार कर रही है अगर दुनियावी माल मुराद लें तो फिर यह पेशगोई सच्ची साबित नहीं होती क्योंकि मौलवी माल लेने के लिए आसमान की राह देख रहे हैं। इंतज़ार में बैठे हैं कि कब मसीह आए और उन्हें माला माल करे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"हमारे अक्सर मौलवियों को यह धोखा लगा हुआ है कि वह सोचते हैं कि महदी की लड़ाइयों के माध्यम से बहुत सा माल उन्हें मिलेगा यहां तक कि वह संभाल नहीं सकेंगे और चूंकि आजकल इस देश के अक्सर मौलवी बहुत ग़रीब हैं इसलिए वे ऐसे महदी के दिन रात इंतज़ार में हैं कि शायद इसी के माध्यम से इन की नफ्सानी आवश्यकताएं पूरी हो जाएं अत: जो आदमी ऐसे महदी के आने से इंकार करे यो लोग उस के दुश्मन हो जाते हैं और उस को शीघ्र काफिर ठहरा देते हैं और इस्लाम के दायरा से निकाला हुआ समझा जाता है इसलिए मैं भी इन्हीं कारणों से उन लोगों की नज़र में काफ़िर हूँ क्योंकि ऐसे खूनी महदी और खूनी मसीह के आने को स्वीकार नहीं करता बल्कि इन बेहूदा अकीदों को अत्याधिक घृणा और तिरस्कार से देखता हूँ।"

(मसीह हिन्दुस्तान में रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 15, पृष्ठ 12)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"आप का काल्पनिक मसीह और महदी तो प्रकट हो कर और सारे काफिरों को कत्ल कर के उन का माल तुम लोगों को दे देगा और सारी नफ्सानी इच्छाएं पूरी कर देगा जैसा कि आप लोगों की आस्था है परन्तु मैं तो इस लिए नहीं आया कि आप लोगों को दुनिया के गन्दे माल में डाल दूं और आप पर सारी दुनिया की इच्छाओं के पूरा करने के दरवाज़े खोल दूं बल्कि मैं इसलिए आया हूं कि मौजूदा दुनिया के आनन्द में से भी कुछ कम कर के ख़ुदा तआला की तरफ खींचूं। अत: वास्तव में मेरे आने से आप लोगों का बहुत नुकसान हुआ है. मानो तेरह सौ सालों की इच्छाएं मिट्टी में मिल गईं या यूं कहो कि करोड़ों रूपए का नुकसान हो गया।"

(तिरयाकुल कुलूब रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 159)

इस्लाम आध्यात्मिक अस्तित्व के लिए जान और माल की पेशकश की मांग भी करता है जैसा कि फरमाया

اِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَ اَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ

विषय सूची

1	सम्पादकीय	1
2	पवित्र कुरआन	2
3	पवित्र हदीस	3
4	कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	4
5	मानवता और इंसानियत के सम्मान के बारे में कुरआन की शिक्षाएं	5
6	आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रहमतुन लिल-आलेमीन के रूप में	9
7	मानव जाति से सहानुभूति और इंसानियत की सेवा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सुनहरी शिक्षाएं	15
8	मानवता को तीसरे विश्वव्यापी युद्ध के विनाश से बचाने के लिए जमाअत अहमदिया की सेवाएं	19
9	होमियोपैथी के द्वारा हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे की महान सेवाएं	26
10	विश्व शान्ति के लिए हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्ला तआला की विश्वव्यापी कोशिशें	31
11	जमाअत अहमदिया की मानवता की सेवा के बारे में दूसरों की अभिव्यक्तियां	36

☆ ☆ ☆

الْجَنَّةَ (तौबा: 112) कि अल्लाह तआला ने मोमिनों से उनके अमवाल और उनकी जानें ख़रीद ली हैं ताकि उस के बदले में उन्हें जन्नत मिले। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा ने इस्लाम के या यूं कहें कि रूहानियत को स्थापित करने के लिए और आध्यात्मिकता की स्थापना के लिए, नि:संकोच जान तथा माल की कुरबानी की है अत: मूल और वास्तविक जीवन आख़िरत का जीवन है, जिस के मुकाबला में संसार का जीवन और सांसारिक माल तथा दौलत तुच्छ है अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है

وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ

यानी वास्तविक जीवन तो आख़रत का ही जीवन है काश वे इस बात को समझ सकते। और फिर फरमाता है,

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى

कि तुम दुनिया की ज़िंदगी को प्राथमिकता देते हो हालांकि परलोक की ज़िन्दगी ही बेहतर और स्थायी है। ख़ुदा मामूर और मुरसल इस के लिए आते हैं ताकि शिर्क और कुफ्र और झूठे विश्वासों और भ्रष्ट विचारों को समाप्त कर के, और मानव जाति को अल्लाह तआला के साथ जोड़कर, अख़िरत के सफर को आसान और प्रिय बना दें। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस दृष्टि से अपने आप का मानव जाति का सेवक घोषित किया है।

"आप ने आध्यात्मिक रूप से मानव जाति की क्या सेवा की यह एक न समाप्त होने वाला विषय है। नीचे हम आपकी कुछ महान सेवाओं का उल्लेख करते हैं। आप अपने आक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पूर्ण प्रतिरूप होने की हैसियत से सारे संसार की तरफ भिजवाए गए थे। आप ने जहां मुसलमानों के अन्दर पैदा ग़लत मान्यताओं और रस्मो रिवाज का सुधार फरमाया, वहां अन्य धर्मों की मान्यताओं की ख़राबियां भी उन पर प्रकट कीं और उन्हें बहुत ही प्यार और वास्तविक सहानुभूति के साथ सही मार्ग की तरफ मार्ग दर्शन किया।

पृष्ठ 39 पर शेष

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत हो जो समस्त मनुष्यों के लाभ के लिए उत्पन्न की गई हो तुम अच्छी बातों का आदेश देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो।

मानव जाति की सेवा के बारे में कुरआन मजीद की पवित्र शिक्षा

अल्लाह सारी सृष्टि को पालने वाला है

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ (सूरह फातिहा:2)

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है।

کُنۡتُمۡ خَیۡرَ اُمَّۃٍ اُخۡرِجَتۡ لِلنَّاسِ تَاۡمُرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ تَنۡہَوۡنَ عَنِ الۡمُنۡکَرِ وَ تُؤۡمِنُوۡنَ بِاللّٰہِ (आले इम्रान 111)

तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों की भलाई के लिए निकाली गई है।

तुम सर्वश्रेष्ठ उम्मत हो जो समस्त मनुष्यों के लाभ के लिए उत्पन्न की गई हो तुम अच्छी बातों का आदेश देते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान लाते हो।

मां बाप करीबी रिश्तेदारों, यतीमों दरिद्रों साथियों और मुसाफिरों के बारे में अच्छे व्यवहार की उत्तम शिक्षा

وَ اعۡبُدُوا اللّٰہَ وَ لَا تُشۡرِکُوۡا بِہٖ شَیۡئًا وَّ بِالۡوَالِدَیۡنِ اِحۡسَانًا وَّ بِذِی الۡقُرۡبٰی وَ الۡیَتٰمٰی وَ الۡمَسٰکِیۡنِ وَ الۡجَارِ ذِی الۡقُرۡبٰی وَ الۡجَارِ الۡجُنُبِ وَ الصَّاحِبِ بِالۡجَنۡۢبِ وَ ابۡنِ السَّبِیۡلِ ۙ وَ مَا مَلَکَتۡ اَیۡمَانُکُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰہَ لَا یُحِبُّ مَنۡ کَانَ مُخۡتَالًا فَخُوۡرَا

(अन्निसा: 37)

और अल्लाह की उपासना करो और किसी वस्तु को उस का साझीदार न ठहराओ और माता पिता के साथ भलाई करो और निकट संबन्धियों से और अनाथों से और निर्धन लोगों से और नातेदार पड़ोसियों से और उन पड़ोसियों से भी जो नातेदार न हों और अपने साथ उठने बैठने वालों से और मुसफिरों से और उन से भी जिन के तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए(भलाई करो। निस्सन्देह अल्लाह उन को पसन्द नहीं करता जो अभिमानी और डींग हाकने वाला हो।)

रिश्तेदारों अनाथों मिस्कीनों मुसाफिरों मांगने वालों और ग़ुलामों के लिए माल खर्च करना वास्तविक नेकी है।

لَیۡسَ الۡبِرَّ اَنۡ تُوَلُّوۡا وُجُوۡہَکُمۡ قِبَلَ الۡمَشۡرِقِ وَ الۡمَغۡرِبِ وَ لٰکِنَّ الۡبِرَّ مَنۡ اٰمَنَ بِاللّٰہِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ وَ الۡمَلٰٓئِکَۃِ وَ الۡکِتٰبِ وَ النَّبِیّٖنَ ۚ وَ اٰتَی الۡمَالَ عَلٰی حُبِّہٖ ذَوِی الۡقُرۡبٰی وَ الۡیَتٰمٰی وَ الۡمَسٰکِیۡنَ وَ ابۡنَ السَّبِیۡلِ ۙ وَ السَّآئِلِیۡنَ وَ فِی الرِّقَابِ ۚ وَ اَقَامَ الصَّلٰوۃَ وَ اٰتَی الزَّکٰوۃَ ۚ وَ الۡمُوۡفُوۡنَ بِعَہۡدِہِمۡ اِذَا عٰہَدُوۡا ۚ وَ الصّٰبِرِیۡنَ فِی الۡبَاۡسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ وَ حِیۡنَ الۡبَاۡسِ ؕ اُولٰٓئِکَ الَّذِیۡنَ صَدَقُوۡا ؕ وَ اُولٰٓئِکَ ہُمُ الۡمُتَّقُوۡنَ (अल्बकर: 178)

नेकी यह नहीं कि तुम अपने चेहरों को पूर्व अथवा पश्चिम की ओर फेरो । बल्कि नेकी उसी की है जो अल्लाह पर और परकालीन दिवस पर और फ़रिश्तों पर और पुस्तक पर तथा नबियों पर ईमान लाये । और उससे प्रेम करते हुए निकट सम्बन्धियों को और अनाथों को और दरिद्रों को और यात्रियों को और याचकों को तथा दासों को मुक्त करने के लिए धन दे और जो नमाज़ को क़ायम करे और ज़कात दे और वे जो जब प्रतिज्ञा करते हैं तो अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करते हैं और (वे जो) दु:खों और कष्टों में तथा युद्ध के बीच में भी धैर्य करने वाले हैं । यही वे लोग हैं जिन्होंने सच्चाई को अपनाया और यही वास्तविक मुत्तक़ी हैं।

अपने भाइयों के बीच सुलह करवाया करो।

وَ اِنۡ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اقۡتَتَلُوۡا فَاَصۡلِحُوۡا بَیۡنَہُمَا ۚ فَاِنۡۢ بَغَتۡ اِحۡدٰىہُمَا عَلَی الۡاُخۡرٰی فَقَاتِلُوا الَّتِیۡ تَبۡغِیۡ حَتّٰی تَفِیۡٓءَ اِلٰۤی اَمۡرِ اللّٰہِ ۚ فَاِنۡ فَآءَتۡ فَاَصۡلِحُوۡا بَیۡنَہُمَا بِالۡعَدۡلِ وَ اَقۡسِطُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰہَ یُحِبُّ الۡمُقۡسِطِیۡنَ ﴿۱۰﴾ اِنَّمَا الۡمُؤۡمِنُوۡنَ اِخۡوَۃٌ فَاَصۡلِحُوۡا بَیۡنَ اَخَوَیۡکُمۡ وَ اتَّقُوا اللّٰہَ لَعَلَّکُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ

(अलहुजरात 11-10)

और यदि मोमिनों में से समुदाय परस्पर लड़ पड़ें तो उन के बीच सन्धि करवाओ। फिर यदि एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करे तो जो अत्याचार कर रहा है उस से लड़ो यहां तक कि वह अल्लाह के निर्णय की ओर लौट आए। अत: यदि वह लौट आए तो उन दोनों के मध्य न्यायपूर्वक सन्धि करवाओ और इंसाफ करो नि:सन्देह अल्लाह इंसाफ करने वालों को पसन्द करता है। मोमिन तो भाई भाई ही होते हैं अत: अपने दो भाइयों के बीच सन्धि करवाया करो और अल्लाह का तक्वा धारण करो ताकि तुम पर कृपा की जाए।

उपहास, दोषारोपण, नाम बिगाड़ना, कुधारणा, जासूसी और चुग़ली से बचने की शिक्षा।

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا یَسۡخَرۡ قَوۡمٌ مِّنۡ قَوۡمٍ عَسٰۤی اَنۡ یَّکُوۡنُوۡا خَیۡرًا مِّنۡہُمۡ وَ لَا نِسَآءٌ مِّنۡ نِّسَآءٍ عَسٰۤی اَنۡ یَّکُنَّ خَیۡرًا مِّنۡہُنَّ ۚ وَ لَا تَلۡمِزُوۡۤا اَنۡفُسَکُمۡ وَ لَا تَنَابَزُوۡا بِالۡاَلۡقَابِ ؕ بِئۡسَ الِاسۡمُ الۡفُسُوۡقُ بَعۡدَ الۡاِیۡمَانِ ۚ وَ مَنۡ لَّمۡ یَتُبۡ فَاُولٰٓئِکَ ہُمُ الظّٰلِمُوۡنَ ﴿۱۲﴾ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا اجۡتَنِبُوۡا کَثِیۡرًا مِّنَ الظَّنِّ ۫ اِنَّ بَعۡضَ الظَّنِّ اِثۡمٌ وَّ لَا تَجَسَّسُوۡا وَ لَا یَغۡتَبۡ بَّعۡضُکُمۡ بَعۡضًا ؕ اَیُحِبُّ اَحَدُکُمۡ اَنۡ یَّاۡکُلَ لَحۡمَ اَخِیۡہِ مَیۡتًا فَکَرِہۡتُمُوۡہُ ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰہَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ تَوَّابٌ رَّحِیۡمٌ (अलहुजरात 12-13)

हे लोगो जो ईमान लाए हो! (तुम में से) कोई जाति किसी जाति से उपहास न करे संभव है कि वह उन से उत्तम हो जाएं। और न महिलाएं महिलाओं से (उपहास करें।) हो सकता है कि वे उन से उत्तम हो जाएं। और अपने लोगों पर दोषारोपण न करो और एक दूसरे को नाम बिगाड़ कर न पुकारा करो। ईमान के बाद अवज्ञा करने का दाग़ लग जाना बहुत बुरी बात है और जिस ने तौबा नहीं की तो यही वे लोग हैं जो अत्याचारी हैं।

हे लोगो जो ईमान लाए हो, संदेह करने से बहुत बचा करो नि:संदेह कुछ सन्देह पाप होते हैं और जासूसी न किया करो और तुम में से कोई किसी दूसरे की चुग़ली न करे। क्या तुम में से कोई पसन्द करता है कि अपने मृत भाई का मांस खाए? अत: तुम इस से अत्यन्त घृणा करते हो। और अल्लाह का तक्वा धारण करो। नि:सन्देह अल्लाह बहुत तौब: स्वीकार करने वाला(और) बार-बार दया करने वाला है।

☆ ☆ ☆

रहम करने वालों पर रहमान ख़ुदा रहम करेगा, तुम ज़मीन वालों पर रहम करो आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।

मानव जाति की सेवा के बारे में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र उपदेश

सारी सृष्टि अल्लाह तआला का परिवार है।

عَنْ عَبْدِ اللہِ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ قَال رَسُوْلُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم اَلْخَلْقُ عِیَالُ اللہِ فَاَحَبُّ الْخَلْقِ اِلَی اللہِ مَنْ اَحْسَنَ اِلٰی عِیَالِہٖ۔

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया सभी प्राणी अल्लाह तआला की सृष्टि हैं। अत: अल्लाह को अपने प्राणियों में से वह व्यक्ति बहुत पसंद है जो उसके अयाल (सृष्टि) के साथ अच्छा व्यवहार करता है और उनकी ज़रूरतों का ख्याल रखता है। (बहीकी फी शोएबिल ईमान मिशक़ात)

तुम ज़मीन वालों पर रहम करो।

عَنْ عَبْدِ اللہِ بْنِ عَمْرٍو ؓ یَبْلُغُ بِہِ النَّبِیَّ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ اَلرَّحِمُوْنَ یَرْحَمُھُمُ الرَّحْمٰنُ اِرْحَمُوْا اَھْلَ الْاَرْضِ یَرْحَمُکُمْ مَنْ فِی السَّمَاءِ۔

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अमर वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया रहम करने वालों पर रहमान ख़ुदा रहम करेगा। तुम धरती वालों पर दया करो। आसमान वाला तुम पर दया करेगा।

आपस में भाई भाई बन कर रहो।

عَنْ ابْنِ عُمَرَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم لَا تَحَاسَدُوْا وَلَا تَنَاجَشُوْا وَلَا تَبَاغَضُوْا وَلَاتَدَابَرُوْا وَلَا یَبِعْ بَعْضُکُمْ عَلٰی بَیْعِ بَعْضٍ، وَکُوْنُوْا عِبَادَ اللہِ اِخْوَانًا اَلْمُسْلِمُ اَخُوالْمُسْلِمِ لَا یَظْلِمُہٗ وَلَا یَحْقِرُہٗ وَلَا یَخْذُلُہٗ التَّقْوٰی ھٰھُنَا وَیُشِیْرُ اِلٰی صَدْرِہٖ ثَلَاثَ مَرَّاتٍ بِحَسْبِ امْرِیءٍ مِّنَ الشَّرِّ اَنْ یَحْقِرَ اَخَاہُ الْمُسْلِمَ کُلُّ الْمُسْلِمِ عَلَی الْمُسْلِمِ حَرَامٌ دَمُہٗ وَمَالُہٗ وَعِرْضُہٗ ۔

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। एक दूसरे से ईर्ष्या मत करो। एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने के लिए बढ़-चढ़कर भाव न बढ़ाओ। एक दूसरे से द्वेष न रखो। एक दूसरे से पीठ न मोड़ो अर्थात संबंध विच्छेद न करो। एक दूसरे के सौदे पर सौदा मत करो बल्कि अल्लाह तआला के बन्दे और आपस में भाई-भाई बनकर रहो। मुसलमान अपने भाई पर ज़ुल्म नहीं करता। उस का अपमान नहीं है। उसे लज्जित या अपमानित नहीं करता। आपने अपने सीने की ओर इशारा करते हुए कहा। तक्वा यहाँ है। ये शब्द आपने तीन बार दोहराए फिर फरमया। इंसान की बदबख़्ती के लिए यही काफी है कि वह अपने मुसलमान भाई को हिकारत की नज़र से देखे हर मुसलमान का ख़ून, माल और इज़्ज़त व सम्मान दूसरे मुसलमान पर हराम और उसके लिए सम्मान योग्य है।(मुस्लिम किताबुल बिर्रें)

तीन आदमी जिन से कयामत के दिन सवाल जवाब नहीं होगा।

عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَرَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: قَالَ اللہُ تَعَالٰی ثَلَاثَۃٌ أَنَا خَصْمُھُمْ یَوْمَ الْقِیَامَۃِ ، رَجُل اَعْطٰی بِیْ ثُمَّ غَدَرَ وَرَجُل بَاعَ حُرًّافَأَکَلَ ثَمَنَہ وَرَجُل اسْتَأْجَرَ اَجِیرًا فَاسْتَوفی مِنہُ وَلَمْ یُعْطِہٖ اَجرَہٗ۔

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला फरमाता है कि तीन आदमी ऐसे हैं कि जिन से कयामत के दिन मैं बहुत सख्ती से पूछूंगा। एक वह जिस ने मेरे नाम पर किसी को शरण दी और फिर धोखाबाज़ी और ग़द्दारी की दूसरा आदमी वह है जिस ने किसी आज़ाद को पकड़ कर बेच दिया और उस की कीमत खा गया तीसरा आदमी वह है जिस ने किसी को मज़दूरी पर रखा, उस से पूरा पूरा काम लिया लेकिन उस को निर्धारित मज़दूरी न दी।

माता पिता से मुहब्बत और प्रेम का व्यवहार करो।

عَنْ جَابِرٍؓ قَالَ:قَالَ رَسُوْلُ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّم:ثَلَاثٌ مَنْ کُنَّ فِیْہِ نَشَرَاللہُ عَلَیْہِ کَنَفَہٗ وَاَدْخَلَہٗ الْجَنَّۃَرِفْقٌ بِالضَّعِیْفِ وَالشَّفْقَۃُعَلَی الوَالِدَیْنِ وَالْاِحْسَانُ اِلَی الْمَمْلُوْکِ (ترمذی صفۃ القیامۃ)

अनुवाद: हज़रत जाबिर वर्णन करते हैं कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया। तीन चीज़ें जिस में हों अल्लाह तआला उसे अपनी सुरक्षा और संरक्षण में रखेगा और जन्नत में प्रवेश करेगा। सबसे पहले, यह कि वह कमज़ोर पर दया करे, दूसरी बात यह कि वह अपने माता-पिता से मुहब्बत करे। तीसरी बात यह कि वह सेवकों और नौकरों के साथ अच्छा व्यवहार करे ।

रिश्तेदारों से अच्छा व्यवहार करना चाहिए ।

عَنْ اَنَسِ بْنِ مَالِکٍ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ : سَمِعْتُ رَسُوْلَ اللّٰہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ یَقُوْلُ : مَنْ سَرَّہٗ أَنْ یُّبْسَطَ عَلَیْہِ رِزْقُہٗ اَوْ یُنْسَأَ فِیْ اَثَرِہٖ فَلْیَصِلْ رَحِمَہٗ۔

(मुस्लिम किताब अल-बाकराह-उल-बाखारा-साल-उल-उल-कुरआन)

अनुवाद :: हज़रत अनस बिन मालक बियान करते हैं कि मैं आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना कि जो व्यक्ति रिज़क में बढ़ोतरी चाहता है या इच्छा रखता है कि उसकी उम्र और ज़िक्रे ख़ैर अधिक हो उसे रिशतेदारों से अच्छे व्यवहार का गुण धारण करना चाहिए यानी अपने रिश्तेदारों के साथ बना कर रखनी चाहिए।

सबसे अच्छा घर वह है जिस में यतीम के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए।

عَنْ اَبِیْ ھُرَیْرَۃَ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ قَالَ خَیْرُ بَیْتٍ فِی الْمُسْلِمِیْنَ بَیْتٌ فِیْہِ یَتِیْمٌ یُحْسَنُ اِلَیْہِ وَشَرُّ بَیْتٍ فِی الْمُسْلِمِیْنَ بَیْتٌ فِیْہِ یَتِیْمٌ یُسَاءُ اِلَیْہِ

हज़रत अबू हुरैरह वर्णन करते हैं कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मुसलमानों के घरों में सबसे अच्छा घर वह है जो में यतीम के साथ अच्छा व्यवहार किया जाए और मुसलमानों के घरों में से सबसे खराब घर वह है जो अनाथ के साथ बुरा व्यवहार होता हो ।

लोगों को नुकसान पहुंचाने से बच।

عَنْ اَبِیْ ذَرٍّ رَضِیَ اللہُ عَنْہُ قَالَ:قُلْتُ یَا رَسُوْلَ اللہِ صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ ! اَیُّ الْاَعْمَالِ اَفْضَلُ ؟ قَالَ ...... تَکُفُّ شَرَّکَ عَنِ النَّاسِ فَاِنَّھَا صَدَقَۃٌ مِنْکَ عَلٰی نَفْسِکَ۔

(मुस्लिम किताबुल ईमान)

हज़रत अबू ज़र बियान करते हैं कि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि कर्मों में से कौन सा कर्म बेहतर है। हुज़ूर ने कहा लोगों को नुकसान पहुंचाने से बच क्योंकि यह भी तेरी ओर से एक तरह का सदका है और तेरे लिए फायदेमंद है।

☆ ☆ ☆

ख़ुदा तआला की सृष्टि से मुहब्बत करो और बन्दों के अधिकारों को अच्छी तरह से अदा करो।

उपदेश हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

अपनी सहानुभूति को सिर्फ मुसलमानों तक ही सीमित न रखो।

अहंकारी दूसरे से वास्तविक सहानुभूति करने वाला नहीं हो सकता। अपनी सहानुभूति को सिर्फ मुसलमानों तक सीमित न रखो, लेकिन प्रत्येक के साथ करो। अगर एक हिंदू से सहानुभूति न करोगे तो इस्लाम की सच्ची नसीहतें उसे कैसे पहुंचाओगे? ख़ुदा तआला सब का रब्ब है। हाँ मुसलमानों से विशेष रूप से सहानुभूति करो और फिर मुत्कीन और सालेहीन की इस से अधिक विशेषता है। माल और दुनिया से दिल न लगाओ इसका मतलब यह नहीं है कि तुम कारोबार आदि को छोड़ दो लेकिन अपने दिल ख़ुदा में और हाथ काम में रखो। ख़ुदा व्यापार से नहीं रोकता, बल्कि दुनिया को धर्म पर प्राथमिकता देने से रोकता है। इसलिए तुम धर्म को प्राथमिकता दो।(मल्फ़ूज़ात भाग 3, पृष्ठ 592, संस्करण 2003 ई)

ख़ुदा तआला की सृष्टि से दया करो।

हमारी जमाअत को ख़ूब याद रखना चाहिए कि अल्लाह का यह वादा हरगिज़ नहीं है कि तुम में से कोई भी न मरेगा हाँ ख़ुदा तआला फरमाता है اَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْاَرْضِ (अर्रअद: 18) अत: जो व्यक्ति अपने अस्तित्व को लाभदायक बना देगा उन की आयु ख़ुदा तआला अधिक कर देगा ख़ुदा तआला की सृष्टि पर बहुत दया करो और अल्लाह के बन्दों के अधिकारों को पूरे तौर पर अदा करो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3, पृष्ठ 303, संस्करण 2003 ई)

यह नियम होना चाहिए कि कमज़ोर भाइयों की मदद की जाए और उन्हें शक्ति दी जाए। यह कितनी अनुचित बात है कि दो भाई हैं । एक तैरना जानता है और दूसरा नहीं। तो क्या पहले का यह फर्ज़ नहीं है कि वह दूसरे को डूबने से बचाए या इसे डूबने दे। उस का कर्तव्य है कि उसे डूबने से बचाए इसीलिए कुरआन शरीफ में आया है। تَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى (अलमाइदा: 3) कमज़ोर भाइयों का बोझ उठाओ। व्यवहारिक ईमानी और आर्थिक कमजोरियों में भी शरीक हो। शारीरिक कमज़ोरियों का भी इलाज करो। कोई जमाअत जमाअत नहीं हो सकती, जब तक कमज़ोरों को ताकत वाले लोग सहारा नहीं देते और इस की यही अवस्था है कि उन की पर्दा पोशी की जाए। साहाबा को भी यही शिक्षा हुई कि नए मुसलमानों को देख कर न चिढ़ो, क्योंकि तुम भी ऐसे कमज़ोर थे। इसी तरह, यह महत्वपूर्ण है कि बड़ा छोटे की सेवा करे और मुहब्बत और नर्मी के साथ बरताओ करो। देखो वह जमाअत जमाअत नहीं हो सकती जो एक दूसरे को खाए और जब चार मिलकर बैठें तो एक अपने ग़रीब भाई की शिकायत करें और कमज़ोरियां वर्णन करते हैं और निर्बलों और ग़रीबों का तिरस्कार करते हैं और उन्हें तिरस्कार और घृणा की दृष्टि से देखते हैं। ऐसा हरगिज़ नहीं चाहिए।

(मल्फ़ूज़ात भाग 2, पृष्ठ 23, संस्करण 2003 ई)

गांव की औरतें एक दिन बच्चों के लिए दवाई आदि लेने के लिए आईं। हुज़ूर इन को देखने और दवाई देने में लीन रहे। इस पर मौलवी हज़रत अब्दुल करीम साहिब ने वर्णन किया कि हजरत यह तो बहुत कठिन काम है और इस प्रकार हुज़ूर का अनमोल समय नष्ट होता है। इस के जवाब में हुज़ूर ने फरमाया:

"यह तो वैसा ही धार्मिक काम है, ये ग़रीब लोग हैं, यहां कोई अस्पताल नहीं है।" मैं इन लोगों के लिए हर तरह की अंग्रेज़ी और यूनानी दवाइयां मंगवा कर रखता हूं जो समय पर काम आ जाती हैं। यह बहुत सवाब का काम है मोमिन इन कामों में सुस्त और लापरवाह नहीं होना चाहिए। "

(मल्फ़ूज़ात भाग 1, पृष्ठ 308, संस्करण 2003)

वास्तविक बात यह है कि हमारे दोस्तों का सम्बन्ध हमारे साथ अंगों की तरह है और यह बात हमारे दैनिक अनुभव में आती है कि अगर एक छोटे से अंग उंगली में ही दर्द हो, तो शरीर बेचैन और व्याकुल हो जोता। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि हर समय और हर दिन, मैं इसी चिन्ता में रहता हूं कि मेरे दोस्त हर प्रकार के आराम तथा सुविधा में रहें। यह सहानुभूति और दु:ख अनुभव करना किसी भी तरह की बनावट और दिखावा के कारण से नहीं है। बल्कि जिस तरह माता अपने बच्चों में से प्रत्येक के आराम और सुविधा में लगी रहती है चाहे वह कितने ही क्यों न हों। इसी तरह मैं अल्लाह तआला के लिए अपने दिल में दोस्तों के लिए वेदना पाता हूँ और यह सहानुभूति कुछ ऐसी बेकरारी वाली हालत में हुई है कि जब हमारे दोस्तों में से किसी का ख़त किसी असुविधा या बीमारी की हालत का पहुँचता है, तो तबियत में एक व्याकुलता और परेशानी पैदा हो जाती है और एक शोक शामिल हाल हो जाता है और ज्यों-ज्यों मित्रों की बहुतायत हो जाती है उतना ही यह ग़म बढ़ता जाता है और कोई समय ऐसा खाली नहीं रहता जब किसी प्रकार की चिंता और दुख इसमें शामिल न रहें, क्योंकि इतने अधिक लोगों में से कोई न कोई किसी न किसी ग़म और चिन्ता में डूबा होता है और इस की सूचना से दिल में उदासी और व्याकुलता पैदा हो जाती है। मैं नहीं बता सकता कि कितना समय दु:खों में गुज़रता है। चूंकि अल्लाह तआला को छोड़कर कोई हस्ती ऐसी नहीं जो इस प्रकार के दुखों और कष्टों से मुक्ति दे इस लिए मैं हमेशा दुआ में लगा रहता हूं और सब से प्रथम दुआ यही होती है कि मेरे दोस्तों को दुखों और ग़मों से सुरक्षित रखे। क्योंकि मुझे तो उन की फिक्रें और दुख परेशानी में डालते हैं। और फिर यह दुआ प्राय की जाती है कि अगर किसी को कोई ग़म और कष्ट पहुंचा है तो अल्लाह तआला इस से उस को नजात दे । पूरी सरगर्मी और पूरा जोश यही होता है कि अल्लाह तआला से दुआ करूं। दुआ की कुबूलियत में बड़ी बड़ी अशाए हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1, पृष्ठ 66, संस्करण 2003)

मानवता पर दया करना एक महान इबादत है

एक हदीस में आया है कि अल्लाह तआला कुछ आदिमयों से पूछेगा कि तुम बड़े नेक हो और मैं तुम से बहुत ख़ुश हूं क्योंकि मैं बहुत भूखा था और तुम ने मुझे खाना खिलाया, मैं नंगा था तुमने मुझे कपड़े दिए, मैं प्यास था तुमने मुझे पानी दिया मैं बीमार था तुम ने मेरी अयादत की। वे कहेंगे, "हे अल्लाह, तू तो इन बातों से पवित्र है, तू कब ऐसा था कि हमने तेरे साथ ऐसा किया?" तब वह कहेंगे कि मेरे अमुक अमुक बन्दे ऐसे थे तुम ने उन का ध्यान रखा वह ऐसा मामला था कि मानो तुम ने मेरे साथ ही किया था। फिर एक और गिरोह मौजूद होगा। वह उनको बताएगा कि तुम ने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया है मैं भूखा था, तुमने मुझे नहीं खिलाया था मैं प्यास था तुम ने मुझे पानी नहीं दिया, मैं नंगा था कपड़ा नहीं दिया। मैं बीमार था मेरी अयादत नहीं की। तब वे कहेंगे, "हे अल्लाह, तू ऐसी बातों से पवित्र हैं।" तू कब ऐसा था कि हम ने तेरे साथ ऐसा किया। इस पर फरमाएगा कि मेरा अमुक अमुक बन्दा इस अवस्था में था और तुम ने उस के साथ कोई सहानुभूति और अच्छा व्यवहार न किया वह मानो मेरे साथ ही करना था।

(मल्फ़ूज़ात भाग 4, पृष्ठ 438, संस्करण 2003)

☆ ☆ ☆

कलाम
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

शाने इस्लाम

कलाम हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी

मसीह मौऊद व मेहदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

इस्लाम से न भागो राहे हुदा यही है
ऐ सोने वालो ! जागो शम्शुज़ ज़ुहा यही है
मुझको क़सम ख़ुदा की जिस ने हमें बनाया
अब आसमाँ के नीचे दीने ख़ुदा यही है
वह दिलसताँ निहाँ है किस रह से उस को देखें
इन मुश्किलों का यारो ! मुश्किल कुशा यही है
बातिन सिय: हैं जिनके इस दीं से हैं वो मुनकिर
पर ऐ अन्धेरे वालो ! दिल का दिया यही है
दुनिया की सब दुकानें हैं हम ने देखीं भालीं
आखिर हुआ ये साबित दारुश्शिफ़ा यही है
सब खुश्क हो गए हैं जितने थे बाग़ पहले
हर तरफ मैं ने देखा बुस्ताँ हरा यही है
दुनिया में इस का सानी कोई नहीं है शर्बत
पी लो तुम इसको यारो ! आबे बका यही है
इस्लाम की सच्चाई साबित है जैसे सूरज
पर देखते नहीं हैं दुश्मन बला यही है
जब खुल गई सच्चाई फिर उसको मान लेना
नेकों की है ये खस्लत राहे हया यही है
जो हो मुफीद लेना, जो बद हो, उस से बचना
अक्लो ख़िर्द यही है, फह्मो ज़का यही है
मिलती है बादशाही इस दीं से आसमानी
ऐ तालिबाने दौलत ! ज़िल्ले हुमा यही है
सब दीं है इक फसाना, शिर्कों का आशियाना
उस का, जो है यगाना, चेहरा नुमा यही है

(दुर्रे समीन)

हक के प्यासों के लिए आबे बक़ा हो जाओ

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला अन्हो

अहदे शिक्नी न करो अहले वफा हो जाओ
अहले शैतां न बनो अहले वफा हो जाओ।।
गिरते पड़ते दरे मौला पे रसा हो जाओ
और परवाने की मान्निद फिदा हो जाओ।।
जो हैं ख़ालिक से ख़फा उन से ख़फा हो जाओ
जो हैं उस दर से जुदा उन से जुदा हो जाओ।।
हक के प्यासों के लिए आबे बक़ा हो जाओ
ख़ुश्क खेतों के लिए काली घटा हो जाओ।।
गुंचए दीं के लिए बादे सबा हो जाओ
कुफ्र व बिदअत के लिए दस्ते कज़ा हो जाओ।।
सर ख़रू रोबरूए दावरे महशर हो जाओ
काश तुम हश्र के दिन अहद बर हो जाओ।।
बादशाही कि तमन्ना न करो हरगिज तुम
कुचाए यारे यगाना के गदा हो जाओ।।
वस्ले मौला के जो भूखे हैं उन्हें सैर करो
वह करो काम कि तुम ख़वाने हुदा हो जाओ।।
पंबए मरहमे काफूर हो तुम ज़ख्मों पर
दिले बीमार के दरमां व दवा हो जाओ।।
तालेबाने रुख़े जानां को दिखाओ दिलबर
आशिकों के लिए तुम किबल: नुमा हो जाओ।।
अमरे मारूफ को तावीज़ बनाओ तुम जां का
बेकसों के लिए तुम अक्दा कुशा हो जाओ।।
दमे ईसा से भी बढ़ कर हो दुआओं में असर
यदे बैज़ा बनो मूसा का असा हो जाओ।।
राहे मौला में जो मरते हैं वही जीते हैं
मौत के आने से पहले ही फना हो जाओ।।
मौरदे फज़लो करम वारिसे ईमानो हुदा
आशिक अहमद व महबूब ख़ुदा हो जाओ।।

ख़ुद्दामे अहमदियत

कलाम हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह

हैं बादह मस्त बादह आशामे अहमदियत
चलता है दौरे मीना वा जामे अहमदियत
तिश्ना लबों की ख़ातिर हर सिमत घूमते हैं
थामे हुए सबूए गुलफामे अहमदियत
ख़ुद्दामे अहमदियत, ख़ुद्दामे अहमदियत

जब दहरियत के दम से मसमूम थीं फिज़ाएं
फूटीं थी जा वजा जब इलहाद की हवाएं
तब आया इक मुनादी और हर तरफ सदा दी
आओ के इन की ज़द से इस्लाम को बचाएं
ज़ोरे दुआ दिखाएं, ख़ुद्दामे अहमदियत

फिर बाग़े मुस्तफा का ध्यान आया जुल्मिनन को
सींचा फिर आंसुओं से अहमद ने इस चमन को
आहों का था बुलावा फूलों की अंजुमन को
और खींच लाए नाले मुरग़ाने ख़ुश लहन को
लौट आए फिर वतन को , ख़ुद्दामे अहमदियत

चमका फिर आसमां पर मशरिक पर नामे अहमद
मग़रिब में जगमगाया माहे तमामे अहमद
वहमो गुमां से बाला माहे तमामे अहमद
हम हैं ग़ुलामे ख़ाके पाए ग़ुलामे अहमद
मुरग़ामे दामे अहमद, ख़ुद्दामे अहमदियत

रब्वा में आजकल है जारी निज़ाम अपना
पर कादियां रहेगा मरकज़ मुदाम अपना
तब्लीग़ अहमदियत दुनिया में काम अपना
दारुल अमल है गोया आलम तमाम अपना
पूछो जो नाम अपना, ख़ुद्दामे अहमदियत

☆ ☆ ☆

मानवता और इंसानियत के सम्मान के बारे में कुरआन की शिक्षाएं

(लईक अहमद डार, मुरब्बी सिलसिला, कादियान)

जब पूर्ण इंसान पैदा हुए, उस के साथ ही इंसानियत का चक्र भी पूरा हुआ। उस पूर्ण मनुष्य ने कुरआन की शिक्षाओं के प्रकाश में मानवता के सम्मान लिए ऐसे दिशा निर्देश स्थापित करे कि पढ़ कर एक न्याय प्रिय आदमी आश्चर्य में डूब कर उस की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। कुरआन की शिक्षाओं के पूरे पालन में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने जीवन का पल पल मानवता के मूल्यों के पालन में कानून व्यवस्था की सीमाओं में रहकर लोगों को सिखलाया। काश! लोग और विशेषकर मुसलमान मानवता के इस अग्रदूत और हमारे सरदार हज़रत ख़ातमुल अंबिया की रूह तथा रिवाज को अपने अन्दर पैदा कर के जीना सीखें तो दुनिया अमन का घर बन सकती है। कुरआन मजीद की शिक्षाओं के आलोक में आप ने फरमाया है कि

सब लोग बतौर इंसान बराबर हैं और सभी के अधिकार बराबर हैं। यहां तक कि अपनी ज़िन्दगी के आख़री दिनों में हज्जतुल विदा के अवसर पर अपने परवानों को मानवता का भव्य और अभूतपूर्व संदेश और कानून देकर फरमाया कि हमेशा याद रखें कि किसी अरबी को ग़ैर अरबी पर कोई प्राथमिकता नहीं हे। ना ही किसी ग़ैर अरबी को अरबी पर कोई बढ़त है। आप ने सिखाया कि किसी गोरे को काले पर कोई प्राथमिकता नहीं है न ही किसी काले को गोरे पर कोई प्राथमिकता है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि इस्लाम की यह स्पष्ट शिक्षा है कि सभी देशों और नस्लों के लोग बराबर हैं। आपने यह भी स्पष्ट किया कि सभी लोगों को बिना किसी भेदभाव के समान अधिकार और बराबर अधिकार मिलने चाहिए। यह वह मूलभूत और स्वर्णिम सिद्धांत है जो अंतर्राष्ट्रीय शांति और सद्भाव की नींव रखता है।

अब अल्लाह की इच्छा से निसन्देह मानवता का यह पूर्ण संविधान क़यामत के दिन तक के लिए बेनजीर रहेगा और अपनी चमक तथा दमक से हर आंख को चकाचौंध करता रहेगा। फ़लहमदो लिल्लाह अली ज़ालक!

यह बात पैदा ध्यान देने योग्य है कि वास्तव में कुरआन जैसी सम्पूर्ण और मुकम्मल शरीयत का नाज़िल होना ही मानवता के सम्मान की पूर्णता है। अत: इस नुस्खा की बदौलत ही अब मानव जाति ठीक हो सकती है। इंसानियत एक शक्ल में आकर सम्पूर्ण हो गई। अल्लाह तआला से पूर्ण सम्बन्ध और इस से शुद्ध मुहब्बत का मैदान जीता जा सकता है। इंसानियत के गुणों की स्थापना और फिर अपना व्यक्तिगत नमूना की सम्पुर्णता हमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में ही नज़र आती है इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जहां कामिल बन्दे हैं तो दूसरी ओर मानवता के समस्त गुणों से परिपूर्ण भी हैं। इन समस्त गुणों को धारण करने के कारण आप सम्पूर्ण इंसान कहलाए।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَ آلِ مُحَمَّدٍ وبَارِكْ وَسَلِّمْ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"कुरआन शरीफ दुनिया की सभी हिदायतों की तुलना में सम्पूर्ण और उत्तम होने का दावा करता है क्योंकि दुनिया की अन्य किताबों को इन तीन प्रकार (पहले कम से कम मानवता के इंसानी चरित्र और अदब के तरीके की शिक्षा दी जाए। दूसरे ज़ाहरी मानवता के शिष्टाचार प्राप्त करने के बाद फिर इंसानियत के बड़े बड़े चरित्र सिखाए जाएं और फिर तीसरा यह कि जो लोग नैतिकता से सुशोभित हो गए ऐसे शुष्क नेकों को मुहब्बत का शर्बत और अल्लाह तआला से मिलने का मज़ा चखाया जाए।) के सुधारों का मौका नहीं मिला और कुरआन शरीफ को मिला और कुरआन शरीफ का यह उद्देश्य था कि हैवानों से इंसान बनाए और इंसान से चरित्र वाला इंसान बनाए और चरित्र वाले इंसान से ख़ुदा वाला इंसान बनाए।"

(इस्लामी सिद्धांतों का दर्शन, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 1 9, पृष्ठ 32 9)

इंसानियत के सम्मान के बारे में कुरआन की सुनहरी शिक्षाएं।

मानवता के सम्मान को स्थापित करने के लिए, कुरआन ने कुछ बुनियादी सिद्धांत बताए हैं। यहाँ कुछ बुनियादी सिद्धांत पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं:

(1) كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

(सूरे आले इमरान: 111) तुम (सब से) बेहतर जमाअत हो जिसे लोगों के (लाभ) के लिए बनाया गया है। तुम नेकी की हिदायत करते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह में ईमान लाते हो।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह फरमाते हैं: "मुसलमानों के सबसे बेहतर होने का कारण यह है कि उन्हें अपने लाभ के बजाय सारी दुनिया के लाभ के लिए बनाया गया है। काश मुसलमान इस हिक्मत को समझें और इस तरह अपमानित न हों। "

(तफसिर सग़ीर, पृष्ठ 94, सूरत अल इमरान, हाशिया आयत 110 के अधीन)

अर्थात मुसलमानों को मानवता के सम्मान और साधारण लोगों के लाभ के लिए बनाया गया है अत: आज मुसलमानों में यह बात नज़र नहीं आ रही है इसी तरह दूसरी उम्मतें और धर्म जो समय समय पर प्रकट हुए उनका उद्देश्य भी दरअसल यही था कि मानवता को अथाह पतन से उठाकर ऊंचाई के चरम तक पहुंचाया जाए। अल्लाह तआला की कृपा से आज ज़माना के मामूर के अनुकरण में जमाअत अहमदिया इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए काम कर रही है। अल्हम्दो लिल्लाह अला ज़ालक।

(2) फिर मानवता के सम्मान की स्थापना के लिए अल्लाह ने कुरआन में यह सुनहरा नियम बयान फ़रमाया है

مَنْ قَتَلَ نَفْسًا بِغَيْرِ نَفْسٍ اَوْ فَسَادٍ فِي الْاَرْضِ فَكَاَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا

(सूर: अल्माइदा: 33) जो किसी व्यक्ति को बिना इसके कि उसने कत्ल किया हो या देश में दंगा फैलाया हो, कत्ल कर दे तो मानो उसने सब को मार दिया और जो उसे जिंदा करे (यानी इस काम में मदद) तो मानो उसने सभी लोगों को ज़िन्दा कर दिया।

यह स्पष्ट सुनहरा और शांति बनाने का नियम एक उज्जवल समाज बना सकता है। इस स्थान पर अनुचित कत्ल को रोक कर मानवता के कल्याण और भलाई के लिए सुनहरी शिक्षा का वर्णन किया है।

(3) وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(सूर: अलबक़रा: 189) अनुवाद: और तुम अपने (भाइयों) के माल आपस में (मिल कर) झूठ (और धोखा) के माध्यम से मत खाओ और न उन मालों को (इस उद्देश्य से) अधिकारियों की तरफ खींच कर ले जाओ ताकि तुम लोगों के मालों का कोई हिस्सा जानते बूझते हुए अवैध रूप से हज़म कर जाओ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह फरमाते हैं: "कुरआन अक्सर क़ौमी जीवन पर ज़ोर देने के लिए साधारण इंसानों या अपने देश या क़ौम वाली की चीज़ों को अपनी चीज़ें कहकर पुकारता है ताकि इस ओर इशारा करे कि जो अपनी क़ौम के लोगों को नुकसान पहुंचाता है वह अपने आप को नुकसान पहुंचाता है। यहां भी अपने माल से अभिप्राय दूसरे मानव जाति के माल हैं लेकिन उपरोक्त नियम ध्यान दिलाने के लिए अपना माल कहकर उन्हें पुकारा है। इस सूरत के रुकूअ 10 में फरमाया।

وَ اِذْ اَخَذْنَا مِیْثَاقَکُمْ لَا تَسْفِکُوْنَ دِمَآءَکُمْ وَ لَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَکُمْ مِّنْ دِیَارِکُمْ

फिर आगे चलकर फरमाया

ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَکُمْ وَ تُخْرِجُوْنَ فَرِیْقًا مِّنْکُمْ مِّنْ دِیَارِهِمْ

जिस से स्पष्ट है कि अन्फुसकुम और दिमाउकुम से अभिप्राय भाइयों की जानें और अपने भाइयों के खून हैं। "

(तफ्सीर सग़ीर, पृष्ठ 41, हाशिया नोट नंबर 2, सूर: अलबकर आयत 189)

(4) फिर समाज में शांति की स्थापना के लिए एक और प्यारी और सुन्दर शिक्षा ऐसी दी कि

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّکَ بِالْحِکْمَۃِ وَ الْمَوْعِظَۃِ الْحَسَنَۃِ وَ جَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ

(सूर: अल्: नहल: 126) (और हे रसूल) तो (लोगों को) बुद्धि और अच्छी नसीहत के माध्यम से अपने रब्ब की तरफ बुला और इस तरीके से जो सबसे अच्छा हो। उन से (इन के मतभेद के बारे में) बहस कर।

कितने प्रेम और नर्मी की शिक्षा है इंसानियत के सम्मान को ध्यान में रख कर इंसानी अधिकारों और ज़मीर की आज़ादी और धर्म की आज़ादी की बुनियादें मज़बूत करते हुए तब्लीग़ का हुकुम रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कहा जा रहा है। इतनी सुंदर शिक्षा के बावजूद कुछ मुस्लिम संगठन जिहाद के नाम पर मासूम लोगों का चाहे वह मुस्लिम हों या ग़ैर मुस्लिम रक्त बहा रहे हैं और अपने इस घृणित कार्य को आं हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक जिहाद की ओर सम्बन्धित कर रहे हैं।

(5) وَ قِیْلِهٖ یٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۸۹﴾ فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَ قُلْ سَلٰمٌ ؕ فَسَوْفَ یَعْلَمُوْنَ

(सूर: अज़्ज़ुख़रफ: 89 से 90) और उस के यह कहने के समय को याद करो कि हे मेरे रब! ये लोग कभी ईमान नहीं लाएंगे। अत: तू उनसे दरगुज़र कर और कह "सलाम" इसलिए जल्द ही वे जान लेंगे।"

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रहिल अज़ीज़ फरमाते हैं:

"इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है कि हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसी शिक्षा लाए जो सारी मानव जाति के लिए दया और प्रेम का माध्यम है और मानवता के लिए शांति का कारण है। इस आयत में यह भी वर्णन किया गया है कि हज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के शांति के इस संदेश का जवाब न केवल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा से इनकार किया गया बल्कि उन्होंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उपहास और तिरस्कार तथा अपमानजनक व्यवहार किया। यहीं बस नहीं बल्कि इससे भी बढ़ कर दुश्मनी और शत्रुता पर उतर आए और फित्ना तथा उपद्रव पैदा कर दिया इसके बावजूद हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुदा तआला से यही दुआ की कि " मैं तो उनके लिए सुरक्षा चाहता हूँ लेकिन यह मुझे शांति से रहने नहीं देते और मुझे दु:ख और पीड़ा पहुंचाने का कोई मौका हाथ से जाने नहीं देते।

इसके जवाब में अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इन शब्दों में तसल्ली दी कि जो कुछ वे कर रहे हैं उन्हें माफ कर और उन्हें छोड़ दे। तुम्हारा एकमात्र काम दुनिया में शांति को बढ़ावा देने और इसका गठन करना है। "

(वैश्विक संकट और शांति पथ, पृष्ठ 126 से 127)

(6) وَ لَقَدْ کَرَّمْنَا بَنِیْٓ اٰدَمَ وَ حَمَلْنٰهُمْ فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلٰی کَثِیْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِیْلًا

(सूर: बनी इस्राईल: 71) और हम ने मानव जाति को (बहुत) सम्मान प्रदान किया है और उनके लिए थल और जल में सवारी का समान पैदा किया है और उन्हें पवित्र चीज़ों से रिज़्क दिया है और जो प्राणी हम ने बनाया है इस में एक बहुत बड़े हिस्सा पर हम ने उन्हें सम्मान दिया है।

(7) وَ اِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِکَۃِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِیْسَ ؕ اَبٰی وَ اسْتَکْبَرَ ٭۫ وَ کَانَ مِنَ الْکٰفِرِیْنَ

(सूर: अलबक़रा: 35) और (उस समय को भी याद करो) जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम का अनुपालन करो। इस पर उन्होंने तो अनुपालन किया लेकिन शैतान (ने उस का) इनकार किया और अहंकार किया और वह (पहले से ही) काफिरों में से था।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"आदम से अभिप्राय पूर्ण इंसान हैं जब इंसान पूर्ण इंसान बन जाता है तो अल्लाह तआला फरिश्तों को सिज्दा का आदेश (आज्ञाकारिता) का देता है और उसके प्रत्येक कार्य को ख़ुदा तआला फरिश्तों के माध्यम से निष्पादित करता है लेकिन पूर्ण आदम बनने के लिए ज़रूरी है कि इंसान का ख़ुदा तआला से सच्चा और पक्का संबंध हो जब इंसान प्रत्येक गतिविधि और आराम अल्लाह तआला के आदेश के नीचे होकर करता है तो इंसान ख़ुदा तआला का हो जाता है तब ख़ुदा तआला इंसान का वाली वारिस हो जाता है और फिर उस पर कोई विरोध से हाथ नहीं डाल सकता। लेकिन वह आदमी जो ख़ुदा की परवाह नहीं करता ख़ुदा तआला भी उसकी परवाह नहीं करता ... आदम अलैहिस्सलाम पूर्ण इंसान थे तो फरिश्तों को सिज्दा (आज्ञाकारिता) का आदेश हुआ। इसी तरह अगर हम में से प्रत्येक आदम बने तो वह भी फरिश्तों से सिज्दा के योग्य है। "

(अल-हकम, जिल्द 9, नंबर 5, दिनांक 10 फरवरी 1905, पृष्ठ 4)

(8) اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَکُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ وَ اَسْبَغَ عَلَیْکُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَۃً وَّ بَاطِنَۃً

(सूर: लुकमान 21) क्या तुम (लोगों) ने यह नहीं देखा था कि जो कुछ आसमानों में है और धरती में है वह तुम्हारी सेवा में लगाया हुआ है और तुम पर अपनी नेअमतें चाहें ज़ाहरी हों या बातनी पानी की तरह बहा दीं।

(9) لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْٓ اَحْسَنِ تَقْوِیْمٍ

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

अकबर अली सदर जमाअत सहारनपुर, यू पी

(सूर: अत्तीन: 4) बेशक हम ने इंसान को उपयुक्त से उपयुक्त समय में पैदा किया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं। "ख़ुदा तआला ने चाहा है कि आदमी ख़ुदा तआला के आचरण पर चले। जैसे वह प्रत्येक दोष और बुराई से मुक्त है यह भी मुक्त हो। जैसे इसमें न्याय, इंसाफ और ज्ञान का गुण है वही इसमें हो इसलिए सृष्टि को अहसने तक्वीम (उत्तम अवस्था) कहा है لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْۤ اَحْسَنِ تَقْوِیْمٍ जो इंसान ख़ुदाई आचरण अपनाते हैं वह इस आयत से अभिप्राय होते हैं और अगर कुफ़्र करे तो फिर असफलुस्साफेलीन (सब से नीचे) उसकी जगह है।"

(बदर, जिल्द 2, नंबर 7, दिनांक 6 मार्च 1903, पेज 49)

इसी तरह फरमाया: "इंसान को हम ने बहुत अधिक मध्यम रूप से बनाया है और वह इस मध्यम गुण में सभी प्राणियों से अहसन तथा अफज़ल है। "

(तौज़ीह मराम, पृष्ठ 47, उद्धरित तफ्सीर हज़रत मसीह मौऊद जिल्द 3, तफ्सीर सूर: अत्तीन, पृष्ठ 415 से 416)

(10) وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَیْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّیْلَ وَالنَّهَارَ

(सूर: इब्राहीम: 34) और सूर्य और चंद्रमा को (भी) वे (दोनों) बिना ठहरे (अपना दिया गया) काम करते हैं और उस ने रात और दिन को (भी) बिना किसी बदला के तुम्हारी सेवा पर लगा रखा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "यह भी याद रखना चाहिए कि इस्लामी शरीयत की दृष्टि से विशेष फरिशतों का गुण विशेष इंसानों से कुछ अधिक नहीं बल्कि विशेष लोगों के गुण विशेष फरिशतों के गुणों से बेहतर हैं और शारीरिक या आध्यात्मिक निज़ाम में उनका माध्यम करार पाना उनकी अफज़लियत की ओर इशारा नहीं करता बल्कि कुरआन शरीफ के निर्देशानुसार वह ख़ुद्दाम की तरह इस काम में लगाए गए हैं जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ अर्थात वह ख़ुदा जिसने सूर्य और चंद्रमा को अपनी सेवा में लगा रखा है जैसे देखना चाहिए कि एक चिठ्ठी पहुंचाने वाला एक समय के बादशाह की तरफ से उस के किसी अपने देश के एक राज्य में एक शासक सेवा में चिठियाँ पहुंचा देता है तो क्या इससे यह साबित हो सकता है कि वह चिट्ठी पहुंचाने वाला जो इस राजा और गवर्नर जनरल में माध्यम है गवर्नर जनरल से अफज़ल है। अत: ख़ूब समझ लो यही उदाहरण उन माध्यमों का है जो शारीरिक और आध्यात्मिक प्रणाली में समर्थवान के इरादों को धरती तक पहुंचते और उनकी पूर्ति में संलग्न हैं अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में कई स्थानों में स्पष्ट शब्दों में फरमाया है कि जो कुछ पृथ्वी और आसमान में पैदा किया गया है वे सभी चीज़ें अपने अस्तित्व में मानव के अधीन हैं अर्थात इंसान के लाभ के लिए पैदा की गई हैं और इंसान अपने स्थान में सब से उत्तम और उच्च और सबका मख़दूम है जिसकी सेवा में ये चीज़ें लगाई गई हैं। "

(तौज़ीह मराम, रूहानी खज़ायन, जिल्द 3, पृष्ठ 74, प्रथम प्रकाशन)

(11) یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰی وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ؕ اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیْمٌ خَبِیْرٌ

(सूरत अल-हुजरात: 14)

हे लोगो ! हम ने तुम को पुरुष और महिला से पैदा किया है और तुम को कई समूहों और कबीलों में विभाजित कर दिया है ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। अल्लाह के निकट तुम में से सब से अधिक सम्मानित वही है जो सबसे अधिक मुत्तकी हो। अल्लाह वास्तव में बहुत ज्ञान रखने वाला और सर्वज्ञ, सर्व-ज्ञात है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह फरमाते हैं: क़ौमें और नस्लें केवल भेदभाव के लिए हैं जो उन्हें गौरव और अंहकार का माध्यम बनाता है वह इस्लाम के ख़िलाफ अमल करता है।

(तफसीर सग़ीर, हाशिया आयत 14, सूर: अल-हुजरात, पृष्ठ 685)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "अत: आमतौर पर पंजा मारने योग्य यही आयत है कि اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰىكُمْ जिसके यह अर्थ हैं कि तुम सब में ख़ुदा तआला के निकट बुज़ुर्ग और उच्च वंश का वही है जो सबसे अधिक तक्वा के साथ जो ईमानदारी से भरी हुई हो ख़ुदा तआला की तरफ झुक गया हो और ख़ुदा तआला से सम्बन्ध विच्छेद का भय हर दम और हर क्षण और प्रत्येक काम और प्रत्येक कथन और प्रत्येक गतिविधि और प्रत्येक आराम और प्रत्येक आचरण और प्रत्येक आदत और प्रत्येक भावना प्रकट करते समय उसके दिल पर हावी हो। वही जो सब क़ौमों से शरीफ और सब परिवारों में बुज़ुर्ग और सभी कबीलों में से बेहतर कबीला में से है और इस योग्य है कि सभी उसकी राह पर फिदा हों। अत: इस्लामी शरीयत का यह तो साधारण कानून है कि सारी बुनियाद तक्वा पर रखी गई है।"

(तिरयाकुल कुलूब, पृष्ठ 66 से 67, उद्धरित तफसीर हज़रत मसीह मौऊद, जिल्द 3, तफसीर सूर: अल-हुजरात, पृष्ठ 368 से 369)

सारांक्ष यह कि कुरआन मजीद के अवतरण और इस्लाम के प्रकट होने से मानवता का सम्मान स्थापित हुआ और वास्तविक रूप में मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ प्राणी होना प्रमाणित है। अब सवाल यह है कि फिर आज इंसान क्यों इतना गिरा हुआ है और इंसानियत क्यों इतनी पैरों तले कुचली जा रही है। इस का कारण यही है कि कुरआन को महजूर (परित्यज्य) की तरह छोड़ दिया गया है और इसके सार से किनारा करके केवल छिलका पर बुनियाद है अल्लाह तआला उम्मत पर रहम करे कि वह कुरआन की कुल शिक्षाएं जो मानवता की स्थापना और इंसानियत के सम्मान की स्थापना के लिए ही हैं, उन्हें समय के मामूर की शिक्षा और उपदेश के प्रकाश में समझ कर लागू करे ताकि हर तरफ और हर ओर मानवता की स्थापना हो और इंसानियत की जीत हो।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

नजमल हुदा (हुदा बेरिक्स) सिमलिया रांची, झारखण्ड

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

फ़ुरकान अहमद सदर जमाअत अंबेटा यू. पी

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रहमतुन लिल- आलेमीन के रूप में

(महिलाओं, बच्चों, गुलामों और जानवरों से हुस्ने सुलूक की रौशनी में)

(मुहम्मद इब्रीहीम सरवर मुरब्बी सिलसिला, कादियान)

अल्लाह तआला अपने कलाम में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को साक्षात दया और करूणा बताते हुए फरमाता है:

لَقَدۡ جَآءَكُمۡ رَسُوۡلٌ مِّنۡ اَنۡفُسِكُمۡ عَزِيۡزٌ عَلَيۡهِ مَا عَنِتُّمۡ حَرِيۡصٌ عَلَيۡكُمۡ بِالۡمُؤۡمِنِيۡنَ رَءُوۡفٌ رَّحِيۡمٌ

(सूर: अत्तौब:, आयत 128) अर्थात (हे ईमान लाने वालो!) तुम्हारे पास तुम्हारी ही क़ौम का एक व्यक्ति रसूल होकर आया है तुम्हारा संकट में पड़ना उस पर बुरा गुज़रता है और वह तुम्हारे लिए भलाई का बहुत भूखा है और मोमिनों के साथ मुहब्बत करने वाला (और) बहुत उपकार करने वाला है।

जब ख़ुदा तआला ने हज़रत ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भेजा तो साथ ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आयत

وَ مَآ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ

(अल-अंबियाय: 108) के द्वारा सदा सर्वदा तक स्थापित रहने वाले महान आसमानी उपनाम से भी सम्मानित फरमाया। और इस के नतीजे में पड़ने वाली ज़िम्मेदारियों को आप ने अपने पूरे जीवन में इस पूर्णता और उत्तम तरीके से पूरा किया कि क्या दुश्मन क्या दोस्त क्या पड़ोसी क्या रिश्तेदार क्या औरतें क्या बच्चे क्या सरदार क्या ग़ुलाम क्या चौपाए क्या पक्षी क्या वृक्ष क्या पत्थर, सब को अपनी सारी दया से तृप्त किया।

हदीसे कुदसी है कि لَوۡلَاكَ لَمَا خَلَقۡتُ الۡاَفۡلَاكَ (बहारुल अंवार)

अर्थात ख़ुदा तआला आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सम्बोधित करते हुए फरमाता है हे मुहम्मद!" यदि तुम्हारा जन्म उद्देश्य नहीं होता, तो हम इस ब्रह्मांड को भी नहीं बनाते। इससे बखूबी स्पष्ट होता है कि ब्रह्मांड के कण कण का अस्तित्व आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फैज़ से लाभान्वित हो रहा है क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकत वाली ज़ात ही ब्रह्मांड का उद्देश्य है।

महिलाओं का दु:ख दूर करने वाला नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भेजे गए तो दुनिया सारी दुनिया विशेष रूप से अरब की आध्यात्मिक, नैतिक, धार्मिक और सामाजिक स्थिति ख़राब थी और लोग विभिन्न प्रकार के दुराचार और अनाचार और तरह तरह की शिर्क वाली रस्मों और बिदअतों में गिरफतार थे। अधिकतर कबीले बच्ची के जन्म को शर्मिंदगी का कारण समझते जबकि कुछ उन्हें ज़िन्दा दफन कर देते थे। जैसा कि कुरआन ने ख़ुद इस दृष्य को वर्णन किया है

وَ اِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمۡ بِالۡاُنۡثٰى ظَلَّ وَجۡهُهٗ مُسۡوَدًّا وَّ هُوَ كَظِيۡمٌ يَتَوَارٰى مِنَ الۡقَوۡمِ مِنۡ سُوۡٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ

(सूरत अन्नहल: 59,60) यानी जब उनमें से किसी लड़की का सुसमाचार सुनाया जाता है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह क्रोध से भर जाता, लोगों से छुपता फिरता है इस बुराई की ख़ुश ख़बरी के कारण जो उसे दी गई।

महिला पैरों की जूती समझी जाती थी। विरासत में बांटा जाना उसका भाग्य था। जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने सारी सृष्टि के लिए "नबी रहमत" बनाकर भेजा, तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शाने रहीमी करीमी औरतों पर क्यों न होती और आपके रहम से वे क्यों वंचित रहतीं?

मौजूदा दौर की एक सबसे बड़ी विडंबना यह है कि पश्चिमी देश और उनके नक्शे कदम पर भेड़ चाल चलते हुए अन्य सभ्य देशों ने भी महिला को घर की "रानी" के बजाय "शमा महफ़िल" बना दिया है, उसका स्त्रीत्व और नज़ाकत तार-तार करने के लिए "बाज़ार की शोभा" और अपने व्यापार को बढ़ावा देने का माध्यम और "विज्ञापन का स्रोत" बना दिया है। महिला के लिए पर्दा के आदेश में दरअसल उसकी नजाकत ही उद्देश्य है कि उसे श्रम वाले कार्यों से दूर रख कर केवल घर की ज़िम्मेदारी ही सौंपी जाए।

आज विश्व में मिहलाओं के अधिकारों की सुरक्षा की आवाज़ ऊंचा करने वाले संगठन और बराबर अधिकारों का ढोल पीटने वाले Glass with Careऔर Ladies First जैसे नारे लगाने वाली पश्चिमी राष्ट्रों को पता होना चाहिए कि इस साक्षात दया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज से लगभग 1500 साल पहले महिलाओं से हुस्ने सुलूक के सिलसिले में अपनी उम्मत को "कवारीर" और "अलैक बिलमरअते" जैसे ताकीदी इरशाद फरमाए थे। अत: आप ने महिला को वह उच्च स्थान दिया है कि दुनिया के सारे कानून और औरतों के अधिकार वाले संगठन भी आज तक नहीं दिला पाईं।

अल्लाह तआला का आदेश है कि

وَ عَاشِرُوۡهُنَّ بِالۡمَعۡرُوۡفِ ۚ فَاِنۡ كَرِهۡتُمُوۡهُنَّ فَعَسٰۤى اَنۡ تَكۡرَهُوۡا شَيۡـًٔا وَّ يَجۡعَلَ اللّٰهُ فِيۡهِ خَيۡرًا كَثِيۡرًا

(अन्निसा: 20) यानी और उनसे अच्छे व्यवहार के साथ जीवन व्यतीत करो और अगर तुम उन्हें नापसंद करो तो अतिसंभव है कि तुम एक बात को नापसंद करो और अल्लाह तआला उस में बहुत भलाई रखे दे।

इसलिए नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस अल्लाह तआला के इरशाद के अनुपालन में अपनी उम्मत को महिलाओं के साथ अच्छाई, भलाई, अच्छा बर्ताव, अच्छे व्यवहार की ताकीद फरमाते हैं। हज़रत आयशा से रिवायत है कि रसूल अल्लाह ने फ़रमाया

خَيۡرُكُمۡ خَيۡرُكُمۡ لِاَهۡلِهٖ وَاَنَا خَيۡرُكُمۡ لِاَهۡلِيۡ

तुम में सबसे अच्छे वे लोग हैं जो अपनी महिलाओं के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, और मैं तुम में से अपने परिवार के साथ सबसे बेहतर बर्ताव करने वाला हूँ ।

(तिर्मिज़ी, किताबुल मलाकिब)

एक बार की बात है कि एक यात्रा में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नियां भी आप के साथ थीं। एक हब्शी ग़ुलाम हदी पढ़ने लगा, तो ऊंटों ने तेज़ चलना शुरू कर दिया और ख़तरा पैदा हुआ कि कहीं कोई ऊंट से गिर ही न जाए। आप ने फरमाया: رُوَيۡدَكَ سَوۡقًا بِالۡقَوَارِيۡرِ यानी देखना, ऊंटों को धीरे हांकना। यह शीशे हैं, कहीं टूट ही न जाएं। (मुस्लिम)

एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पत्नी हज़रत सफिया आप के साथ ऊंट पर सवार थीं, ऊंट का पांव फिसला

और आप दोनों नीचे गिर पड़े। हज़रत तलहा जो क़रीब ही थे लपक कर आप की तरफ बढ़े आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया عَلَيْكَ بِالْمَرْءَةِ اَلْمَرْءَةُ اَلْمَرْءَةُ पहले महिला का ध्यान दो। पहले महिला का ध्यान दो।

हज़रत आयशा कहा करती थीं कि रसूल अल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कभी कोई सख्त बात अपनी ज़बान पर न लाते थे। इसी तरह फरमाती थीं कि आप सारे लोगों से नर्म तबीयत के आदमी थे और सब से अधिक दयालु। साधारण आदिमयों की तरह घर में रहने वाले, आप ने मुंह पर कभी त्योरी नहीं चढ़ाई। हमेशा मुस्कराते ही रहते थे। हज़रत आयशा का यह भी ब्यान है कि अपने सारे जीवन में आप ने कभी किसी सेवक या बीवी पर हाथ नहीं उठाया।

(श्माइल तरमज़ी,)

हज़रत ख़दीजा के जीवन में बल्कि उनकी मृत्यु के बाद भी आप ने कई साल तक दूसरी पत्नी नहीं की और हमेशा प्रेम और निष्ठा की भावना के साथ हज़रत ख़दीजा का प्यार भरा व्यवहार याद किया। आप की सारी औलाद हज़रत खदीजा के गर्भ से थी इस की तरबियत और परिक्षण का ख़ूब ध्यान रखा। न केवल उन के अधिकार अदा किए बल्कि ख़दीजा की अमानत समझ कर उन से बहुत मुहब्बत की और उन्हें प्यार किया। हज़रत खदीजा की बहन, हाला, की आवाज़ कान में पड़ते ही खड़े होकर उनका स्वागत करते हैं और ख़ुश होकर फरमाते कि ख़दीजा की बहन हाला आई है। घर में कोई जानवर ज़िबह होता तो उस का गोश्त हज़रत ख़दीजा की सहेलियों को भी जरूर भिजवाते।

(मुस्लिम किताबुल फज़ायल)

हज़रत आयशा से रिवायत है वह कहती हैं कि जब में ब्याह कर आई तो हुज़ूर के घर में भी गुड़ियों से खेला करती थी और मेरी सहेलियां भी थीं जो मेरे साथ गुड़िया खेला करती थीं। जब हुज़ूर घर तशरीफ़ लाते (और हम खेल रही होती।) तो मेरी सहेलियां हुज़ूर को देखकर इधर उधर खिसक जाती लेकिन हुज़ूर उन सब को इकट्ठा करके मेरे पास ले आते और फिर वे मेरे साथ खेलती रहतीं। (बुख़ारी, किताबुल अदब)

हज़रत अनस से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिस व्यक्ति ने दो लड़कियों की परवरिश और देखभाल की वह व्यक्ति और मैं जन्नत में इस तरह इकट्ठे प्रवेश करेंगे जैसे ये दो उंगलियां। यह इर्शाद फरमा के आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी दोनों उंगलियां से इशारा फरमाया। (तिर्मिज़ी)

नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम औरतों को मारने पीटने या किसी भी प्रकार की तकलीफ देने से सख्ती से मना करते थे। अत: एक अवसर पर अपने फरमाया: तुम में से कोई अपनी पत्नी को इस तरह पीटने लगे जिस प्रकार से ग़ुलाम को पीटा जाता है फिर दूसरे दिन काम इच्छा की पूर्ति के लिए इस के पास पहुंच जाए।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बेटी हज़रत फातिमा आप से मिलने के लिए आतीं तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े होकर उन का स्वागत करते उन का हाथ पकड़ कर चूमते और अपने स्थान पर बिठाते।

(सुनन तिर्मिज़ी,)

साक्षात दया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप के चाचा हज़रत हमज़ा का कलेजा चबाने वाली हिन्दा को मक्का विजय के अवसर पर बावजूद सामर्थय होने के माफ कर दिया। हर दिन अपने ऊपर कूड़ा डालने वाली औरत को माफ कर दिया था,बल्कि उसकी बीमारी के दौरान उसको देखने भी गए। एक बूढ़ी माई का बोझ अपने सिर पर उठाकर उस को उसके घर तक पहुंचाया जब उसने अपने आप को एक मुहम्मद नामक जादूगर से बचने की हिदायत की तो फिर कमाल दया से आप ने ख़ुद अपना परिचय करवाया कि मैं ही मुहम्मद हूं तो आप से उस बूढ़ी औरत ने कहा। फिर तो तेरा जादू वास्तव में चल गया और शीघ्र आप पर ईमान ले आई। इसी तरह, एक जासूस यहूदी महिला जो मुसलमानों को नुकसान पहुंचाना चाहती थी, आश्चर्यजनक रूप से माफ कर दिया।

हमारे प्रिय आक़ा, बीमारी के आख़री साँस ले रहे थे तो हज़रत आयशा से फरमाने लगे "हे आयशा! मैं अब तक इस जहर की पीड़ा महसूस करता हूँ जो ख़ैबर में यहूदियों ने महिला के द्वारा मुझे दिया था और अब भी मेरे बदन में ज़हर के प्रभाव से कटाव और जलन की स्थिति है। लेकिन अल्लाह के रसूल ने अपनी हस्ती से किसी से बदला नहीं लिया। आपने उस महिला को भी माफ़ किया।

(बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी)

अपने जीवन के अंतिम हज हज्जतुल विदा के अवसर पर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो महत्वपूर्ण बातें अपनी उम्मत को इरशाद फरमाई, उनमें एक यह भी है कि महिलाओं के साथ अच्छा व्यवहार करना।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह रहम तथा दया ने केवल अपनी पत्नियों के साथ था बल्कि समस्त औरतों के साथ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को नेक बरताव का आदेश दिया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लड़कियों के अधिकारों की रक्षा की उस की तरबियत और उस पर खर्च करने का आदेश दिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने न कवल बेटी को जीने का अधिकार दिया और इस के बजूद को ख़ैर तथा बरकत का कारण और रहमत के नाज़िल होने के माध्यम करार दिया बल्कि इस की निगरानी और अच्छी तरबियत को जन्नत में दाख़िल होने का माध्यम करार दिया। औरत ज़ात पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह महान उपकार भी है कि आप ने मां के कदमों के नीचे जन्नत होने की उम्मत को ख़ुश ख़बरी प्रदान की। बीवी से अच्छे व्यवहार की यहां तक महत्तव बताया कि उस के मुहं में लुकमा डालने को सवाब के प्राप्त करने का माध्यम बताया। मानो आप ने औरत को पतन की गहराई से निकाल कर सम्मान का ताज पहनाया,मां ,बहु, सास ,बीवी आदि के शक्ल में उस के अधिकार दिलवाए उस के सम्मान का आदेश दिया।

अत: इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक ने औरतों को सभी अधिकार दिए। उसे शिक्षा का अधिकार दिया। शादी से पहले, अपने होने वाले पति को देख कर पसन्द न पसन्द का अधिकार दिया और पिता के विलायत के अधिकार पर लड़की की पसन्द और न पसन्द को प्राथमिकता दी। औरत के अधिकार को किसी प्रकार भी कोई छीन न सके। इस के लिए निकाह के एलान का आदेश दिया और साथ ही उस के अधिकारों की सुरक्षा के लिए हक मेहर ज़रूरी करार दिया और महिला के सभी खर्चों को पुरुष के ज़िम्मे लगाया। इसी तरह महिला की आय और माल पर केवल महिला का अधिकार स्थापित किया। हालांकि महिला ख़ुशी से घरेलू खर्चों पर खर्च कर सकती है। विधवा को खुद पति चयन का अधिकार दिया। किसी भी प्रकार के पारिवारिक विवाद के मामले में मामला क़ज़ा में ले जाने का अधिकार दिया। मर्द की व्यर्थ की सख्तियों पर इसे ख़ुला के रूप में वैवाहिक अनुबंध समाप्त करने का अधिकार दिया। माता पिता, पति और बेटे की संपत्ति में वारिस करार दिया। अपने माल पर केवल इसी का हक स्वीकार किया। छूट की अवस्था में पर्दे में काम करने का अधिकार दिया। घरेलू और सामाजिक मामलों में हस्तक्षेप और सलाह देने का अधिकार दिया। जंग की परिस्थितियों में साथ काम करने और सेवाओं का अधिकार दिया। हर प्रकार की इबादत (नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज) अदा करने और आध्यात्मिकता के उच्च

पदानुक्रम तय करने का अधिकार दिया।

मिशक़ात किताबुल निकाह में एक रिवायत है कि आपके उत्तम व्यवहार और महिलाओं को उनके सभी अधिकार दिलवाने और निष्पक्ष निर्णय की वजह से सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन में यह भावना पैदा होने लग गई थी कि मानो आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने महिलाओं को बिल्कुल खुली स्वतंत्रता दे दी है कि वह जिस तरह चाहें और जैसे चाहें अपने अधिकारों की मांग कर सकती हैं। अत: महिलाएं बेझिझक अपने पतियों की शिकायत और मामले आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले जाती थीं।

इसके बावजूद इस्लाम धर्म के संस्थापक और इस्लाम धर्म पर उंगलियां उठाने वाले लोग कहते हैं कि इस्लाम ने औरत के अधिकार छीन लिए हैं और आज कल कुछ आतंकवादी संगठनों की आड़ लेकर तथाकथित "बराबरी" के नाम पर विभिन्न देशों की सदनों में इस्लामी पर्दा को समाप्त करने की बहसें की जाती हैं।

जबकि वास्तविकता यह है कि इस्लाम ही वह एकमात्र धर्म है जिसने महिला को उसकी क्षमताओं और उसकी स्वाभाविक संरचना के अनुसार सभी अधिकार दिए हैं। पर्दा महिला का अधिकार है और आज उसे इस अधिकार से वंचित करने की सार्वभौमिक साजिशें हो रही हैं। इसलिए हमारे मौजूदा इमाम सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बार बार जमाअत के दोस्तों को इस संबंध में जागरूक कर रहे हैं और अपने ईमान वर्धक ख़ुत्बा जुम्अ: और भाषणों द्वारा अहमदी महिलाओं और बच्चियों को हीन भावना में पड़े बिना इस्लामी आदर्श को स्थापित करते हुए शिक्षा को प्राप्त करने, गृहस्थ मामलों और विभिन्न सेवाओं के करने का सकारात्मक पैग़ाम दुनिया के सामने पेश करने की नसीहत फ़रमा रहे हैं।

बच्चों के लिए साक्षात दया

बचपन का ज़माना कम इलमी तथा बे-ख़याली का समय होता है। इस ज़माने में बच्चे बड़ों के रहम तथा करम पर होते हैं। बच्चे उन्हीं को अपना मोहसिन समझते हैं कि उन्हें अपने पास रखते हैं। प्रशिक्षण का जो सुन्दर अवसर निकटता से संभव है, डांट से डपट से इसकी उम्मीद नहीं की जा सकती। इसी लिए सारी उम्र आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हसीन काम यही रहा कि बच्चों को वास्तव में अपने क़रीब रखा। बच्चों के खेल का भी ध्यान रखा। अत: अपने बेटों, बेटियों, नवासों के अलावा अन्य सभी बच्चों से आप ने भरपूर प्यार का प्रदर्शन किया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन शदाद रज़ि अपने पिता से नकल करते हैं कि एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ में हज़रत हसन या हुसैन को साथ लाए, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ के बीच में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सज्दा लंबा किया। हज़रत शदाद रज़ि कहते हैं कि मैंने सिर उठाया तो क्या देखता हूँ कि बच्चा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पीठ पर सवार है और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सिज्दा में हैं, तो फिर मैं सिजदे में चला गया, जब नमाज़ पूरी हो गई तो सहाबा ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप ने सिज्दा लम्बा फरमाया। हमें यह गुमान होने लगा था कि कोई मामला सामने आया है या कि आप पर वह्यी उतर रही है, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: इनमें से कोई बात न थी बल्कि मेरा बेटा मेरी पीठ पर सवार था, मैंने उचित नहीं समझा कि बच्चा की जरूरत को पूरा करने से पहले सिज्दा समाप्त करूं।

(मुस्नद अहमद, 16033 हदीस शदाद बन हादी)

आप के पुत्र हज़रत इब्राहीम का जब निधन हुआ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बड़े दुखी थे, आप की आंखों से आंसू जारी थे, हज़रत अब्दुल रहमान बिन औफ रज़ि ने आश्चर्यजनक लहजे में पूछ : आप भी रो रहे हैं? आप ने जवाब दिया: हे इब्ने औफ यह रहमत है ! , नि:संदेह आंसू बह रहे हैं, दिल ग़मज़दा है परंतु इस शोक की अवस्था में भी हम वही बात कहेंगे जो अल्लाह को प्रसन्न हो, तो आप ने फरमाया: ऐ इब्राहीम हम तुम्हारी जुदाई से दुखी हैं। (बुख़ारी बाब कौलुन नबी) इस स्थिति को देखकर हज़रत अनस ने कहा: घर वालों पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अधिक दयालु मैंने किसी को नहीं देखा।

(मुस्लिम हदीस नंबर 2316)

एक बार आप एक यहूदी बच्चे के मृत्यु के समय उसकी अयादत के लिए गए और उसकी हालत नज़ुक देखते हुए साक्षात दया ने कलमा पढ़ने की हिदायत फ़रमाई। पिता की सहमति देखकर उस ने कलिमा पढ़ा। आप ने उसे नरक की आग से सुरक्षित रहने की बिशारत देते हुए फरमाया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ الَّذِیْ اَنْقَذَہٗ مِنَ النَّارِ (बुख़ारी) और इस तरह रहमते दो आलम ने शफ़ाअत के अधिकार से उस लाभांवित किया।

हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर बाहर से तशरीफ़ लाते तो बच्चे आप को देख कर आगे बढ़ते आप उन्हें सवारी पर आगे पीछे बिठा लेते। एक बार एक बद्दू यानी गांवों का रहने वाला था। उसने देखा आप बच्चों से प्यार कर रहे हैं। उसने कहा हुज़ूर मेरे तो इतने बच्चे हैं। मैं कभी किसी से प्यार नहीं किया। आपने फ़रमाया अगर ख़ुदा तआला ने तुम्हारे दिल से प्रेम ले लिया हो तो मैं क्या कर सकता हूँ। फिर फरमाया कि जो लोगों पर दया नहीं करता। ख़ुदा तआला भी उस पर दया नहीं करता।

(अदबुल मुफ़रिद लिल-बुख़ारी)

हुज़ूर बच्चों से बहुत ज्यादा प्यार करते थे और उनके साथ बहुत उत्तम व्यवहार से पेश आते थे। बच्चों के पास से गुज़रते और बच्चों से मिलते तो हमेशा उन्हें सलाम करते। हज़रत अनस बताते हैं कि कुछ बच्चे खेल रहे थे। हुज़ूर उनके पास से गुज़रे तो हुज़ूर ने उन्हें पहले सलाम किया।

(सुनन अबी दाऊद)

अत: हज़रत जाबिर बिन समरह कहते हैं कि मैंने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सुबह की नमाज़ पढ़ी। नमाज़ के बाद हुज़ूर घर वालों की तरफ जाने लगे तो मैं भी हुज़ूर के साथ चल पड़ा। वहां पहुंचे तो आगे बच्चे हुज़ूर का स्वागत के लिए खड़े थे। हुज़ूर उनके पास रुक गए। एक एक बच्चे के गालों को हुज़ूर ने अपने हाथ से सहलाया। वह कहते हैं कि मैं तो हुज़ूर के साथ आया था लेकिन हुज़ूर ने फिर मेरे गालों को भी सहलाया। जब हुज़ूर अपना हाथ मेरे गलों पर फेर रहे थे तो मुझे हुज़ूर के हाथों में ऐसी ठंडक और ख़ुशबू महसूस हुई मानो हुज़ूर ने उन्हें किसी अत्तार के थैले से निकाला है।

(सही मुस्लिम किताबु-लज़ाइल)

हज़रत सहल बिन साद कहते हैं: एक बार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में पीने की कोई चीज़ लाई गई, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे पीया, उसके बाद आप ने देखा कि आप की दाईं ओर एक बच्चा है, और बाईं ओर सहाबा कराम हैं। आप ने इस बच्चे से अनुमति चाही कि अगर तुम अनुमति दो तो यह पेय पदार्थ उनके बड़े

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

जे एम शरीफ अहमद

जमाअत अहमदिया मरकरह कर्नाटक

सज्जनों को इनायत करूं। इस बच्चे ने कहा, हरगिज़ नहीं क़सम ख़ुदा की (आप के तबर्रुक में) अपने अधिकार पर किसी को प्राथमिकता नहीं दे सकता, यह सुनते ही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कटोरा उसे थमा दिया।

(बुख़ारी, हदीस नम्बर 2366)

हज़रत ओसामा से रिवायत है वह कहते हैं कि हुज़ूर की पुत्री हज़रत ज़ैनब ने हुज़ूर को कहला भेजा कि मेरा बेटा आखिरी सांस ले रहा है तशरीफ लाएं। हुज़ूर ने उन्हें सलाम कहला भेजा कि सब्र करो जो कुछ अल्लाह देता है या वापस लेता है वह सब अल्लाह का ही है। सब कुछ एक निश्चित अवधि के लिए है सवाब की प्राप्ति के लिए सबर से काम लो (मुझे इहसास होता है कि हुज़ूर के इनकार की वजह यह थी कि हुज़ूर बच्चे का कष्ट नहीं देख सकते थे।) बहरहाल हज़रत ज़ैनब ने फिर संदेश कहला भेजा और कसम दी कि हुज़ूर ज़रूर पधारें तब हुज़ूर मज्लिस से उठ खड़े हुए और हुज़ूर के साथ साद बिन इबादा, मुआज़ बिन जबल, ज़ैद बिन साबित आदि भी उठे। जब आप हज़रत ज़ैनब के यहां पहुंचे, तो बच्चा हुज़ूर की गोद में दिया गया। उस की सांस उखड़ रही थी और सांस में ऐसी आवाज़ा पैदा हो रही थी कि जैसे पानी की भरी मश्क से पानी निकले तो पैदा होती है। हुज़ूर ने बच्चे को गोद में ले लिया। उस की तरफ देखा, अपने आप आँसू बह पड़े। हज़रत साद रजि ने फरमाया, "हे अल्लाह के रसूल यह क्या है?" आप क्यों रोने लगे? आपने जवाब दिया कि यह वह रहम है जिसे ख़ुदा तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रखा है ख़ुदा तआला अपने बन्दों में से उन पर रहम करता है जो ख़ुद रहम करने वाले हैं।

(बुख़ारी, किताबुल जनाईज़)

हुज़ूर का मुंह बोला बेटा ज़ैद था जिसका ज़िक्र कुरआन में भी आया है कि एक ग़ुलाम था और अरबों में ग़ुलाम की कोई स्थिति नहीं थी। इस वर्ग का बहुत दमन किया गया था। मालिक जो कुछ करना चाहते थे उसके साथ व्यवहार करते उनकी स्थिति पशु धन से भी बदतर थी। हुज़ूर न केवल उसे बहुत ही प्रिय रखते थे, बल्कि उसके बेटे उसामा से भी आप को बहुत प्यार था। अपने बच्चों की तरह उसे रखते। इसी तरह आप कई बार उसामा का नाक ख़ुद साफ फरमाते। हुज़ूर अपने नवासे हुसैन को एक जांघ पर बिठा लेते और उसामा को दूसरी पर और दोनों को छाती से लगाकर भींचते और फरमाते: अल्लाह मैं इनसे प्यार करता हूँ तो भी इनसे प्यार कर। (सुनन तिर्मिज़ी,)

हज़रत अनस बिन मालिक से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: أَكْرِمُوا اَوْلَادَكُمْ وَاَحْسِنُوا اَدَبَهُمْ अपने बच्चों का सम्मान करो और उन्हें अच्छे आचरण सिखाओ। (सुनन इब्ने माजा किताबुल अदब)

अपने युद्ध के अवसर पर बच्चों को नुकसान पहुंचाने और मारने से मना फरमाया।

ग़ुलामों के मुक्तिदाता

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब रिसालत का दावा किया तो आप की प्रारंभिक शिक्षा में यह बात भी शामिल थी कि ग़ुलाम के साथ नरमी और प्रेम का व्यवहार होना चाहिए। आप ने इसी प्रारंभिक समय में कुरआन की शिक्षा के प्रकाश में तहरीक शुरू कर दी थी कि ग़ुलाम की स्वतंत्रा एक बहुत बड़ी नेकी है जिस का अरब के ग़ुलामों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा और वे रहमतुन ललिआलेमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को अपना मुक्तिदाता समझने लग गए। यही कारण है कि इस्लाम इन ग़ुलामों और कमज़ोरों में शीघ्रता के साथ फैलना शुरू हो गया था। अत: जैसे-जैसे इस्लामी आदेश नाज़िल होते गए, ग़ुलामों की स्थिति बेहतर और मज़बूत होती चली गई। यह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम प्रत्येक समय आप के दर पर धोनी रमाए रहते। अन्त में यह सांसारिक दृष्टि से पीछे रहने वाला वर्ग अल्लाह तआला की दष्टि में रज़ी अल्लाह अन्हुम व रज़ू अन्हुम का दर्जा पाने वाला बन गया।

आपने ग़ुलामी के अन्यायपूर्ण और क्रूर तरीकों को रद्द कर दिया और सभी संभव आवश्यक कदम उठाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ुलामों की स्थिति को बेहतर बनाने और उन की आज़ादी की तहरीक और आदेश वर्णन फरमाए। अत: आप की ज़ोरदार तहरीक और आप के अपने आदर्श को देखते हुए मुसलमानों ने भी आप की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए ग़ुलामों की तहरीक में ख़ूब-ख़ूब हिस्सा लिया। यही कारण है कि कुछ ही समय में ग़ुलामों के अधिकार दूसरों के बराबर समझे जाने लगे हैं और उन्हें मिलने वाले अधिकारों ने उन्हों दूसरों के साथ पंक्ति में ला खड़ा किया। अपने आप स्वीकार करना पड़ता है कि कयामत तक के लिए आप ग़ुलामों और पिछड़ों के लिए भी वास्तविक उपकार करने वाले करार दिए गए।

हज़रत अन्स से रिवायत है कि वह कहते हैं कि मुझे दस साल हुज़ूर की सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। जब हुज़ूर की सेवा में आया था तो मैं एक बच्चा था और मेरी हर बात ऐसी नहीं होती थी जैसे मेरे मालिक यानी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम चाहते थे कि हो लेकिन हुज़ूर ने मुझे ऐसी बातों में कभी उफ़ तक नहीं कहा और मुझे कभी नहीं कहा कि तुम ने यह काम क्यों नहीं किया और मुझे कभी नहीं कहा कि तुम ने यह काम क्यों नहीं किया। और न कभी यह कहा कि तुम ने यह काम क्यों नहीं किया।

एक रिवायत में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कहा: तुम्हारे सेवक तुम्हारे भाई हैं। ख़ुदा तआला ने उन्हें तुम्हारे अधीन किया है अत: जिस का भाई उसके अधीन हो जो खाना ख़ुद खाए, उस में से उसे खिलाए और जो कपड़े खुद पहने, वही उसे पहनाए और ऐसी कठिनाई के काम न ले जो उसकी शक्ति से बाहर हो। और अगर उस की ताकत से बढ़ कर कोई काम उस के सुपुर्द करे तो ख़ुद भी उस की मदद करे (बुख़ारी, किताबुल अतक)

एक बार हज़रत अबु मसूद ने अपने दास को किसी बात पर मारा तो हमारे शफीक आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ुस्सा से फरमाया: हे अबू मसूद! तुम्हारा ख़ुदा इस से अधिक शक्तिशाली और सामर्थय वाला है जो शक्ति तुम को इस ग़ुलाम पर प्राप्त है। अत: हज़रत अबु मसूद ने तुरंत उस दास को मुक्त कर दिया। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया: यदि आप ऐसा नहीं करते हैं तो जहन्नम की आग तुम्हारे मुंह को झुलसाती।

(मुस्लिम, किताबुल ईमान)

ग़ुलामी से स्वतंत्रता के अन्य माध्यमों के अलावा आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ुलाम को अपने मालिकों की सेवा के बाद शेष समय में ज़ाती रूप में काम करके ख़ुद को स्वतंत्र करवाने का अधिकार भी दिया। इसी प्रकार, आक़ा का कोई उत्तराधिकार न होने के मामले में, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ग़ुलाम को विरासत का उतराधिकारी के रूप में घोषित किया। इसी तरह, आप ने मकातबत का अधिकार भी दिया।

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

ख़लील अहमद सदर जमाअत बीजुपुरा यू.पी

ग़ुलाम से उत्तम आचरण से पेश आने और उनके के समस्त अधिकारों की याद दहानी आप ने अपनी अंतिम वसीयत में भी की। अत: रिवायत में आता है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुबारक ज़बान से जो अंतिम शब्द सुने गए, इस हालत में कि आप पर ग़रग़रह की अवस्था थी, वह यही था कि मेरी नमाज़ और ग़ुलाम से संबंधित दी गई शिक्षा को भूल मत जाना।

(इब्ने माजा बाब वसीयत)

उपरोक्त हदीसों से स्पष्ट है कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की लाई हुई शिक्षा में न केवल ग़ुलामों के साथ पूर्ण स्तर का उच्च आचरण और और अत्यंत दया और उनके कल्याण और सुधार का आदेश दिया गया है बल्कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वास्तविक मंशा यह थी कि मुसलमान अपने ग़ुलामों को बिल्कुल अपने भाइयों की तरह समझें और हर कर्म में जिस तरह ख़ुद रहते हैं उन्हें भी ऐसे ही रखें ताकि उनकी संस्कृति और समाज में इसी तरह की ऊंचाई पैदा हो जाए जैसे कि अन्य स्वतंत्र लोगों में हों और उनके दिल में आत्मविश्वास पैदा हो, और पस्ती की भावना और विनम्रता की भावना पूरी तरह से मिट जानी चाहिए और आज़ाद हो कर बराबरी के अधिकारों के साथ देश के लिए एक उपयोगी नागरिक बन सकें और मालिक के दिल में अहंकार और बढ़ाई की भावनाएं दूर हो जाएं। और यह ऐसी शिक्षा है कि जिसकी मिसाल किसी और धर्म और जाति में नहीं मिलती है और वर्तमान समय में कई देश रहमतुन लिल्आलमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस सुन्दर शिक्षा को अपनाने को मजबूर हो गए हैं।

पाठको ! आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ये सभी आदेश केवल उस ज़माने तक सीमित नहीं थे बल्कि क़यामत तक के लिए एक स्थायी रणनीति और मार्ग दर्शन हैं और इस्लामी शरीयत का हिस्सा हैं। इस के बावजूद भी कुछ द्वेष रखने वाले हस्द की आग में जलने वाले जो इस्लाम के विरोद्ध कहते हैं कि इस्लाम ने दास बनाने की परंपरा की स्थापना की है। नऊज़ बिल्लाह मिन ज़ालेक।

पाठको ! उस युग में जब कि ग़ुलाम बनाने की प्रथा थी। उन्हें जानवरों की तरह खरीदने बेचने का चलन था। ऐसे समय में साक्षात दया के नबी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ भी न समझे जाने वाले इस वर्ग से भी पूर्णता स्तर का प्रेम और करूणा फ़रमाई और ऐसी उम्र में जबकि बच्चे अपने दयालु पिता की दया की छाया में रहना पसंद करते हैं लेकिन हज़रत ज़ैद रज़ि अल्लाह ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुस्ने सुलूक और पूर्ण करूणा को देखकर ही आप के इतने आशिक हो गए थे कि माता पिता के साथ वापस अपने घर जाने से इनकार कर दिया और आज़ाद जीवन के मुकाबले सारी उम्र अपने शफ़ीक आक़ा की ग़ुलामी में रहने को प्राथमिकता दी और इस ग़ुलाम को आप ने कमाल सहानुभूति से बेटा बना कर सम्मान दिया धर्मों के इतिहास में इस की मिसाल नहीं दी जा सकती।

जानवरों के लिए रहमत

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब के लिए दया बना कर भेजे गए थे और आप ने जानवरों से भी दया और रहमत के सर्वोत्तम उदाहरण भी दिखाए और दूसरों को भी इसी का उपदेश फरमाया।

एक बार जब आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक अन्सारी साहाबी के बाग़ में पधारे। वहां एक ऊंट हूज़ूर को देख कर बिलबिलाया। और उस की आंखों में आंसू आ गए। आप ने प्रेम से उस का सिर पर हाथ फेरा तो वह शांत हो गया। तब आपने पूछा: यह ऊंट किस का है? एक अंसारी ने कहा कि मेरा ऊंट है। उसने कहा: “इस ऊँट ने मुझ से शिकायत की है कि तुम उसे भूखा रखते हो और शक्ति से अधिक काम लेते हो।” ख़ुदा तआला ने तुम्हें इस का मालिक बनाया है उसके बारे में ख़ुदा से डरो

(सुनन अबु दाऊद किताबुल जिहाद)

हज़रत सहल वर्णन करते हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक ऊंट के पास से गुज़रे जिस का पेट भूख की वजह से कमर के साथ लग चुका था। यह देखकर, आपने कहा: “ये बे ज़ुबान जानवर है।” उन पर सवारी भी उस समय करो जब यह स्वस्थ हों और उनका मांस तब खाओ जब यह स्वस्थ हों।

(सुनन अबु, किताबुल जिहाद)

एक सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बताते हैं कि हम एक सफर में हुज़ूर के साथ थे कि एक छोटी चिड़िया देखी जिस के साथ दो बच्चे भी थे जब हमने उस के बच्चों को उठाया तो चिड़िया हमारे पास आ कर उड़ने लगी हुज़ूर ने देखा तो फरमाया। “इस चिड़िया को अपने बच्चों की वजह से किस ने दुख दिया है?" इस के बच्चों को वापस रखो।

(सुनन अबू दाऊद, किताबुल अदब)

हुज़ूर सहाबा के साथ सफर में मौजूद थे। रास्ता में एक स्थान पर एक पक्षी ने अंडा दिया हुआ था। एक व्यक्ति ने अंडा उठा लिया। पक्षी आया और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊपर चिन्ता और बेचैनी के साथ उड़ना शुरू कर दिया। हज़ूर ने फरमाया: तुम में किस ने उसका अंडा छीन कर कष्ट पहुंचाया है। उस व्यक्ति ने कहा, “हे अल्लाह के रसूल मैंने उस का अंडा उठा लिया है।” आप ने फरमाया “ उस पर दया करो और अंडा वहीं रख दो।”

रिवायतों में आता है कि लंबे सफरों में आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा बारी- बारी सवारी पर सवार होते थे ताकि जानवर को बीहड़ और आंधी भरे रास्ते में अधिक बोझ के कारण परेशानी और कष्ट न हो। सामर्थन न रखने वाली सवारी पर अधिक बोझ या तीन लोगों की सवारी को आप नापसंद करते थे। मानो आप जानवर की सारी ज़रूरत और आराम का ध्यान रखते हुए रास्ता में पड़ाव किया करते थे। आप जानवरों को क्रूर तरीके से दाग़ लगाने और केवल नज़र या कसम के पूरा करने के लिए जानवर का ज़िन्दा गोश्त निकालने से मना करते थे और नाराज़गी को प्रकट करते थे।

इसी तरह, आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्तेमाल होने वाले घोड़ों से बहुत प्यार करते थे और अपने सहाबा में इस प्यार को इतना अधिक दृढ़ किया कि जिसकी मिसाल दूसरे नबियों की तारीख़ में हमें नहीं मिल सकती। उन को सेवक के उपनाम से मनोनीत किया करते

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी
मज़हर अहमद मुबल्लिग़ इन्चार्ज
तथा अमीर सीतापुर यू.पी

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी
एम.एम मुहम्मद यूसुफ प्रतिनिधि
अख़बार बदर जमाअत अहमदिया मरकरह कर्नाटक

थे और उनके स्वास्थ्य और खाने-पीने का विचार रखने की ताकीद फरमाते थे। अत: आप ने अपनी उम्मत से यह फ़रमाया اَلْخَيْلُ مَعْقُوْدٌ فِيْ نَوَاصِيْهَا الْخَيْرُ إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ कि अल्लाह तआला ने यह फैसला किया है कि क़यामत के दिन तक मेरी उम्मत के घोड़ों के माथे पर अल्लाह तआला ने बरकत रख दी है।

(बुख़ारी, हदीस संख्या: 2852)

इसी तरह ऊंट और बकरियों की उपयोगिता बताते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: الإبل عز لاهلها والغنم برك इसका मतलब यह है कि ऊंट अपने मालिकों के लिए गर्व और सम्मान है और बकरियां अपने पालने वाले के लिए बरकत का कारण हैं।

एक हदीस में नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया:" मुर्ग़ को गाली न दो क्योंकि वह नमाज़ के लिए जगाता है।"

(अबू दाऊद, हदीस 5191)

एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाकर जन्नत का अधिकारी व्यभिचारिणी स्त्री और एक बिल्ली को भूखा प्यासा रखने की वजह से जहन्नमी होने वाली महिला की घटनाओं को सुनाकर आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को इसी बात की ओर ध्यान दिलाया है कि पशुओं से हुस्ने सुलूक और उनकी भूख प्यास मिटाने में ख़ुदा तआला ने कितना महान इनाम रखा है।

अज्ञानता के ज़माना में जानवरों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था और रस्मों के नाम पर उन पर बहुत अत्याचार किया जाता था। दया के रसूल आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन सभी संस्कारों और जानवरों को किसी भी तरह से चोट पहुंचाने से मना फरमाया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहो अन्हुमा से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि तआला अलैहि वसल्लम "तहरीश बैयनल बहायम" यानी जानवरों को परस्पर लड़ाने से मना करते थे।

हज़रत अबदुल्लाह पुत्र उमर रज़ि अल्लाह अन्हुमा ने से रिवायत है कि ने फरमाया, "अल्लाह तआला की लअनत है जो किसी जानवर का मुस्ला करे।" इसके अलावा, आप ने निशाना बाज़ी के खेल और व्यर्थ कामों के लिए ज़िन्दा जानवर के प्रयोग करने को ख़ुदा तआला की नाराज़गी का कारण बताया।

इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कष्टदायक और दर्दनाक जानवरों को मारने का हुक्म ज़रूर दिया है जैसे सांप, बिच्छू आदि लेकिन उनके मारने में भी दया और भलाई का हुक्म आपने फरमाया कि उन्हें क्रूर तरीके से मत मारा करो। इसी तरह जानवरों को मारने के लिए उन्हें आग में डालने रहमतुन लिल्आलमीन ने मना फरमाया है।

आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ज़िब्ह किए जाने वाले जानवरों के साथ भी अच्छा व्यवहार करने की नसीहत फरमाई। फरमाया "जब तुम कत्ल करने लगो तो अच्छे तरीके से कत्ल करो। अपनी छुरी को तेज़ कर लो, और जानवर को आराम दो।"

(तिर्मिज़ी)

अत: हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान रहीम तथा करीम न केवल कि मनुष्यों के हर वर्ग के साथ विशिष्ट थी, बल्कि अपनी शान रहमतुन लिल्आलमीन की विशालता ने पशुओं को भी ढांप लिया था और उनके अधिकारों के लिए भी संघर्ष किया और उन्हें अपने रहम तथा करम के साया से भरपूर भाग दिया।

महान उपकारक आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहिस्सलाम की पूर्ण प्रतिछाया सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस उद्धरण पर इस लेख को समाप्त किया जाता है। आप फरमाते हैं:

"मैं हमेशा आश्चर्य की नज़र से देखता हूं कि यह अरबी नबी, जिसका नाम मुहम्मद है (हज़ार हज़ार दरूद और सलाम उस पर) यह किस उच्च स्तर का नबी है, उसके उच्च स्थान का छोर पता नहीं चल सकता और उसकी प्रभाव शीलता का अनुमान करना मनुष्य का काम नहीं .... उस ने ख़ुदा तआला से अत्यधिक स्तर पर प्रेम किया और बहुत अधिक मानव जाति की सहानुभूति में उस की जान पिघली। इसलिए, ख़ुदा तआला जो उस के दिल के रहस्यों को जानता था उस को समस्त नबियों और सारे पहलों और अंतिमों पर प्राथमकिता प्रदान की।"

(हकीकतुल वह्यी, रूहानी खज़ायन, जिल्द 22, पेज 118)

"यदि किसी नबी की प्राथमिकता उसके उन कार्यों से सिद्ध हो सकती है जिनसे मानव जाति की सच्ची सहानुभूति सब नबियों से बढ़कर दिखाई दे तो हे सब लोगो ! उठो और गवाही दो कि इस गुण में मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुनिया में कोई मिसाल नहीं ... अंधे सृष्टि पूजकों ने इस बुज़ुर्ग रसूल को पहचाना नहीं जिस ने हज़ारों नमूने सच्ची सहानुभूति के दिखलाए।

(तब्लीग़े रिसालत, जिल्द 6, पृष्ठ 10)

"आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जीवन एक महान सफल जीवन है। आप क्या अपने उच्च आचरण के और क्या अपनी कुव्वत कुदुसी और उंची हिम्मत के और क्या अपनी उच्च शिक्षा के और क्या अपने उच्च नमूना और दुआओं की स्वीकृति के, अत: हर तरह और हर पहलू में चमकते हुए सबूत और निशान अपने साथ रखते हैं। जिन को देख कर एक अनपढ़ से अनपढ़ आदमी भी बशर्ते कि उस के दिल में व्यर्थ की ज़िद और शत्रुता न हो, स्पष्ट रूप से, मान लेता है कि आप تَخَلَّقُوْا بِاَخْلَاقِ اللّٰه का परिपूर्ण आदर्श और पूर्ण इंसान हैं।"

(अल्-हकम नम्बर 13, भाग 2, पृष्ठ 5, 10 अप्रैल 1 9 02 ई)

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई का एक महान सबूत

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ (अल्हाक्का 45-47)

और अगर वह कुछ बातें झूठे तौर से हमारी ओर सम्बद्ध कर देता तो ज़रूर हम उसे दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम नि:संदेह उसकी जान की शिरा काट देते।

सय्यदना हज़रत अकदस मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मअहूद अलैहिस्सलाम संस्थापक अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने इस्लाम की सच्चाई और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रूहानी सम्बंध पर कई बार ख़ुदा तआला की क़सम खा कर बताया कि मैं ख़ुदा की तरफ से हूं। ऐसे अधिकतर उपदेशों को एक स्थान पर जमा कर के एक पुस्तक

ख़ुदा की क़सम

के नाम से प्रकाशित की गई है। किताब प्राप्त करने के इच्छुक दोस्त पोस्ट कार्ड/ मेल भेजकर मुफ्त किताब प्राप्त करें।

E-Mail : **ansarullahbharat@gmail.com**

Ph : 01872-220186, Fax : 01872-224186

Postal-Address:Aiwan-e-Ansar,Mohalla Ahmadiyya,Qadian-143516,Punjab

For On-line Visit : www.alislam.org/urdu/library/57.html

मानव जाति से सहानुभूति और इंसानियत की सेवा के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सुनहरी शिक्षाएं

(नसीर अहमद आरिफ, कादियान)

अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا
وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى
وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ وَمَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا

(सूर: अन्निसा 37)

अर्थात और अल्लाह तआला की इबादत करो और किसी चीज़ को उस का साझी न बनाओ और माता पिता के साथ इहसान करो और निकटवर्ती रिश्तेदारों से भी और रिश्तेदार पड़ोसियों से भी और ग़ैर रिश्तेदार पड़ोसियों से भी और अपने साथ बैठने वालों के साथ भी और मुसाफिरों से भी और उन से भी जिन के तुम्हारे दाहिने हाथ मालिक हुए, नि:सन्देह अल्लाह उस को पसन्द नहीं करता जो अंहकारी और शेख़ी करने वाला हो।

इस्लाम धर्म जिस के अनुसरण का हमें गर्व प्राप्त है प्रत्येक दृष्टि से सम्पूर्ण धर्म है इस महान धर्म की शिक्षाओं का सार वर्णन किया जाए तो वह यह है कि अल्लाह तआला के अधिकार और उस के बन्दों के अधिकार। ऊपर वर्णन की गई आयत से पता चलता है कि इस्लाम धर्म में बन्दों के अधिकार अदा करने के बारे में कुरआन मजीद का कितना स्पष्ट और सुन्दर आदेश है। इस में अल्लाह तआला ने सार गार्भित शब्दों में अल्लाह अपने अर्थात के तथा अल्लाह के बन्दों के अधिकार वर्णन फरमा दिया है।

आज के युग में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने उच्च चरित्र और कर्मों के द्वारा मानव जाति की निस्स्वार्थ सेवा के लिए अपना जीवन वक्फ किया और धर्म के भेद भाव के बिना इंसानियत की विभिन्न अवसरों पर सेवा करते रहे। आप ने अपने मानने वालों को भी यह शिक्षा दी कि

"हमारा यह नियम है कि सम्पूर्ण मानव जाति के साथ सहानुभूति करो। अगर एक व्यक्ति एक पड़ोसी हिंदू को देखता है कि उसके घर में आग लग गई और यह नहीं उठता कि आग बुझाने में मदद करे तो मैं सच-सच कहता हूं कि वह मुझ से नहीं है। अगर एक व्यक्ति हमारे मुरीदों से देखता है कि एक ईसाई की कोई हत्या करता है और वह उसके छुड़ाने के लिए मदद नहीं करता तो मैं तुम्हें सच-सच कहता हूँ कि वह हम में से नहीं है। .... मैं कसम खाकर कहता हूं कि मुझे किसी कौम की शत्रुता नहीं। हाँ जहां तक संभव है उनकी आस्थाओं का सुधार चाहता हूँ और अगर कोई गालियां दे तो हमारी शिकायत ख़ुदा तआला की जनाब में है न किसी और अदालत में और मानव जाति की सहानुभूति हमारा अधिकार है।"

(सिराज मुनीर रूहानी ख़ज़ायन, भाग 12, पृष्ठ 28)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जमाअत अहमदिया में शामिल होने की जो दस बैअत की शर्तें निर्धारित की हैं उनमें से एक शर्त मानव सेवा से संबंधित रखती है। आप अलैहिस्सलाम बैअत की शर्त नम्बर नौ में फरमाते हैं ।

" साधारणत: अल्लाह की सृष्टि की सहानुभूति में लगा रहेगा और जहां तक बस चल सकता है अपनी ख़ुदा तआला द्वारा दी गई शक्तियों और ताकतों और नेअमतों से मानव जाति को लाभ पहुंचाएगा।"

(इश्तेहार तक्मील तब्लीग़, 12 जनवरी 1898 ई)

इसी तरह आप अपनी किताब "पैग़ामे सुलह" में भारत की दो बड़ी क़ौमों मुसलमानों और हिन्दुओं को संबोधित करके फरमाते हैं:

" हमारा कर्तव्य है कि साफ दिल और नेक नीयत के साथ एक दूसरे के सहयोगी बन जाएं और धर्म तथा दुनिया की कठिनाइयों में एक दूसरे की सहानुभूति करें और एसी सहानुभूति करें कि मानो एक दूसरे के अंग बन जाएं। हे मेरे देश वासियो ! वह धर्म धर्म ही नहीं है। जिस में साधारण सहानुभूति की शिक्षा न हो और न वह आदमी आदमी है जिस में सहानुभूति का माद्दा नहीं है। "

(पैग़ाम सुलह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 23, पृष्ठ 439)

सृष्टि की सहानुभूति में हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सब से आगे थे। आप के बारे में अल्लाह तआला कुरआन मजीद में फरमाता है।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ
حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

(सूर: अत्तौब: 128) यानी वास्तव में तुम्हारे बीच में तुम ही में से एक रसूल आया था। उसे बहुत बुरा अनुभव होता है कि तुम कष्ट उठाते हो(और) वह तुम पर (भलाई चाहते हुए) उत्सुक (रहता) है। मोमिनों के लिए बेहद दयालु (और) बार बार रहम करने वाला है।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सृष्टि से सहानुभूति के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"अवशोषण और हिम्मत एक व्यक्ति को उस समय दी जाती है, जबकि वह ख़ुदा तआला की चादर के नीचे आ जाता है और अल्लाह तआला का प्रतिरूप बनता है फिर वह सृष्टि की सहानुभूति और सुधार के लिए अपने भीतर एक व्याकुलता पाता है हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस बारे में समस्त नबियों अलैहेमुस्सलाम से बढ़े हुए थे इसलिए आप प्राणियों की असुविधा देख नहीं सकते थे। "

(अल-हकम 24 जूलाई 1902 ई)

मानव जाति से सहानुभूति के बारे में, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम के कुछ उद्धरण प्रस्तुत किए गए हैं।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मेरी तो यह हालत है कि अगर किसी को दर्द होता हो और नमाज़ में व्यस्त हूँ, मेरे कान में उसकी आवाज पहुँच जाये तो मैं तो यह चाहता हूँ कि नमाज़ तोड़ कर भी अगर उसे लाभ पहुंचा सकता हूं तो लाभ पहुंचाऊं। यह नैतिकता के ख़िलाफ है कि किसी भाई के संकट और दर्द में उस का साथ न दिया जाए। अगर तुम कुछ भी इसके लिए नहीं कर सकते तो कम से कम दुआ ही करो। अपने तो दरकिनार मैं तो यह कहता हूँ कि ग़ैरों और हिंदुओं के साथ भी उच्च नैतिकता का नमूना दिखाओ और उनसे सहानुभूति करो। अस्थायी मिज़ाज हरगिज़ नहीं होना चाहिए।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1, पृष्ठ 305, संस्करण 2003)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"नैतिकता ही सारी तरक्कियों की सीढ़ी है मेरे विचार में यही पहलू बंन्दों का है जो अल्लाह के हकूक को मज़बूत करता है। जो व्यक्ति

मानव जाति के साथ नैतिकता से पेश आता है। ख़ुदा तआला उसके ईमान को नष्ट नहीं करता। जब व्यक्ति ख़ुदा तआला की ख़ुशी के लिए एक काम करता है और अपने वृद्ध भाई से सहानुभूति करता है तो ईमानदारी से इसका ईमान मज़बूत होता है लेकिन यह याद रखना चाहिए कि प्रदर्शनी और दिखावे के लिए, जो आचरण किए जाएँ वे आचरण ख़ुदा तआला के लिए नहीं होते और इन में श्रद्धा के न होने के कारण कुछ लाभ नहीं होता। इस तरह तो बहुत से लोग सराए आदि बना देते हैं इन का उद्देश्य प्रसिद्धि होता है और यदि कोई इंसान ख़ुदा तआला के लिए कोई कार्य करता है, भले ही वह कितना छोटा हो, तो अल्लाह उसे बर्बाद नहीं करता, और वह उसे इनाम देगा। मैंने तज़करुतुल औलिया में पढ़ा है कि एक वली उल्लाह फरमाते हैं कि एक बार बारिश हुई और कई दिन तक रही। इन बारिश के दिनों में मैंने देखा कि एक अस्सी वर्ष का बूढ़ा यहूदी है जो कोठे पर चिड़ियों के लिए दाने डाल रहा मैंने सोचा कि काफिरों के कर्म नष्ट हो जाते हैं, और उससे कहा, "क्या तेरे इस कर्म से तुझे कुछ इनाम मिलेगा?" इस यहूदी ने जबाव दिया कि हां ज़रूर मिलेगा। फिर वही वली उल्लाह वर्णन करते हैं कि एक बार में जो हज्ज करने गया तो देखा कि वही यहूदी तवाफ कर रहा है। इस यहूदी ने मुझे पहचान लिया और कहा कि देखो उन सदकों का सवाब मिल गया या नहीं? अर्थात वही दाने मेरे इस्लाम लाने का कारण बन गए।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पेज 216, संस्करण 2003)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

" मैं नसीहत करता हूँ कि बुराई से परहेज़ करो और मानव जाति के साथ सहानुभूति करो। अपने दिलों को द्वेष और हसद से साफ करो कि इस आदत में तुम फरिश्तों की तरह हो जाओगे। क्या ही गन्दा और अपवित्र वह धर्म है जिस में इंसान की सहानुभूति नहीं और क्या ही नापाक वह रास्ता है जो नफ्सानी द्वेषों के कांटों से भरा है अत: तुम जो मेरे साथ हो ऐसा मत करो। तुम सोचो के धर्म से प्राप्त क्या हुआ है क्या यही है कि प्रत्येक समय लोगों को कष्ट पहुंचाना तुम्हारी आदत हो? नहीं बल्कि धर्म उस ज़िन्दगी को प्राप्त करने के लिए है जो ख़ुदा में है और वह ज़िन्दगी न किसी को प्राप्त हुई और न भविष्य में होगी केवल इस मार्ग से कि ख़ुदा तआला के गुण इंसान के अन्दर दाख़िल हो जाएं। ख़ुदा के लिए सब पर रहम करो ताकि आसमान से तुम पर रहम किया जाए। आओ मैं तुम्हें एक एसी राह सिखाता हूं जिस से तुम्हारा नूर सब नूरूं पर विजयी रहेगा और वह यह है कि तुम तामसिक द्वेषों और हसदों को छाड़ दो और मानव जाति के हमदर्द बन जाओ।"

(गवर्मेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 17 पृष्ठ14)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

" फिर मैं देखता हूँ कि कई हैं जिनमें अपने भाइयों के लिए कुछ भी सहानुभूति नहीं। अगर एक भाई भूखा मरता है तो दूसरा ध्यान नहीं करता और उसकी ख़बर लेने के लिए तैयार नहीं। यदि वह किसी भी प्रकार की परेशानी में है तो इतना नहीं करता कि इस के लिए अपने धन का कोई हिस्सा खर्च करें। हदीस में पड़ोसी की ख़बर लेने और उसके साथ सहानुभूति का आदेश आया है बल्कि यहां तक भी है कि अगर तुम मांस पकाओ तो शोरबा अधिक कर लो ताकि उसे भी दे सको। अब क्या होता है अपना ही पेट पालते हैं, लेकिन कुछ परवाह नहीं। यह मत समझो कि पड़ोसी से इतना ही मतलब है कि घर के पास रहता हो। बल्कि जो तुम्हारे भाई हैं वे भी पड़ोसी ही हैं चाहे वह सौ कोस की दूरी पर भी हों। "

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पेज 215, संस्करण 2003)

मानव जाति के लिए प्यार की भावना आपके दिल में ऐसी थी कि जिस की तुलना करना कठिन है, आप अपने उत्साह एवं प्रेम का वर्णन निम्नानुसार करते हैं:

"दुनिया में कोई मेरा दुश्मन नहीं है। मैं मानव जाति से इस प्रकार की मुहब्बत करता हूं जैसे दयालु माता अपने बच्चों से, बल्कि इस से भी बढ़ कर। मैं केवल उन झूठे विश्वासों का दुश्मन हूं जिन से सच्चाई का ख़ून होता है। इंसान की सहानुभूति मेरा कर्तव्य है और झूठ और शिर्क और अत्याचार और प्रत्येक कदाचार और अन्याय और बुरी नैतिक से घृणा मेरा सिद्धांत। "

(अरबईन, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17, पेज 344)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "सूरे फातिहा इसीलिए अल्लाह तआला ने निर्धारित की है और इस में सब से पहले "रब्बुल आलमीन" गुण का उल्लेख किया है जिस में सभी जीव शामिल हैं। इसी तरह एक मोमिन की सहानुभूति का क्षेत्र सब से पहले इतना व्यापक होना चाहिए कि सभी चौपाए पक्षी और सारे जीव इस में आ जाए। फिर दूसरा गुण "रहमान" का वर्णन किया है जिस से यह सबक मिलता है कि सारे जीवित प्राणियों से सहानुभूति विशेष रूप से करनी चाहिए और फिर "रहीम" मैं अपनी जाति से सहानुभूति की शिक्षा है। अत: इस सूर: फातिहा में जो अल्लाह की विशेषताएं बताई गई हैं मानो ख़ुदा तआला के आचरण हैं जिनसे बन्दे को हिस्सा लेना चाहिए और वह यही है कि यदि एक व्यक्ति उत्कृष्ट हालत में है इसे अपनी जाति के साथ हर सम्भवत: सहानुभूति के साथ पेश आना चाहिए। यदि अन्य व्यक्ति उसका रिश्तेदार या प्रिय है। चाहे कोई हो उस से लापरवाही न बरती जाए और अजनबी की तरह उस से व्यवहार न करें बल्कि उन के अधिकारों की परवाह करें जो उस के तुम पर हैं। उस को एक व्यक्ति के साथ निकटता है उस का कोई हक है तो उसको पूरा करना चाहिए।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 262, संस्करण 2003)

आप अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

ख़ुदा तआला की राह में ज़िन्दगी का वक्फ करना जो इस्लाम की हकीकत है दो प्रकार की है एक यह कि "ख़ुदा तआला को ही अपना उपास्य और गंतव्य और महबूब ठहराया जाए।"

और दूसरी किस्म के विषय में फरमाते हैं: "दूसरी किस्म अल्लाह के रास्ते में जीवन वक्फ करने की यह है कि उसके बन्दों की सेवा और करुणा और दान और बोझ उठाना और सच्चा ग़म दूर करने में अपने जीवन को वक्फ कर दिया जाए। दूसरों को आराम पहुंचाने के लिए दुख उठाए जांए और दूसरों के आराम के लिए अपने को कष्ट में डाल दें। "

(आइना कमालाते इस्लाम, रूहानी खज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 60)

आप फरमाते हैं: "और सृष्टि की सेवा इस तरह से है कि जितनी सृष्टि की ज़रूरतें हैं और जितना विभिन्न कारणों और तरीकों के रास्ते से अल्लाह तआला ने कुछ को कुछ का मोहताज कर रखा है इन सभी बातों में केवल अल्लाह तआला के लिए अपनी वास्तविक और निस्सवार्थ और सच्ची सहानुभूति जो अपने अस्तित्व से जारी हो सकती है उन्हें लाभ पहुंचाए और हर एक सहायता पाने वाले को अपनी ख़ुदा तआला द्वारा दी गई शक्तियों से मदद पहुंचाए और उनकी दुनिया व परलोक दोनों के सुधार के लिए ज़ोर लगाए।"

(आइना कमलाते इस्लाम, पृष्ठ 61, 62)

मानव सुधार और मानव जाति से सहानुभूति के बारे में आप अलैहिस्सलाम की तड़प देखी नहीं जाती थी। जिन दिनों पंजाब में ताऊन का दौरा था और अनगिनत लोग इस कष्टदायक बीमारी से मर रहे थे आप अलैहिस्सलाम की सहानुभूति की भावना से क्या अवस्था थी? इस विषय में हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहब सियालकोटी रज़ि कहते हैं कि उन्होंने आप अलैहिस्सलाम को एकान्त में दुआ करते सुना और यह

नज़ारा देखकर आश्चर्य चकित हो गए। आप फरमाते हैं:

"इस दुआ में आप की आवाज़ में इस कदर दर्द और वेदना थी कि सुनने वाले का पित्ता पानी होता था और आप इस तरह अल्लाह तआला की दरगाह पर रो रहे थे कि जैसे कोई स्त्री प्रसव पीड़ा से व्याकुल हो। मैंने ध्यान से सुना तो प्राणी मात्र के लिए प्लेग के अज़ाब से नजात के लिए दुआ फ़रमा रहे थे और कह रहे थे कि इलाही! अगर यह लोग प्लेग के प्रकोप से मारे गए तो तेरी इबादत कौन करेगा। "

(सीरत-ए-तैयबा, पृष्ठ 54,उद्धरित सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम श्माइल तथा चरित्र, भाग 3, पृष्ठ 395, लेखस शेख़ याक़ूब अली इरफानी)

आप फरमाते हैं: "सच्ची बात यह है कि जो व्यक्ति चाहता है कि इस की वजह से दूसरों को लाभ पहुंचे उसे द्वेष वाला नहीं होना चाहिए अगर वह द्वेष वाला होगा तो दूसरों को उस के अस्तित्व से क्या लाभ होगा? जहां ज़रा उसके नफ्स और विचार के ख़िलाफ कोई बात हुई ई वह बदला लेने को तत्पर हो गया। इसे तो ऐसा होना चाहिए कि अगर हज़ारों भालों से भी मारा जाए तो भी परवाह न करे।

मेरी नसीहत यही है कि दो बातों को याद रखो एक अल्लाह तआला से डरो दूसरे अपने भाइयों से इस प्रकार की हमदर्दी करो जैसा अपने नफ्स से करते हो अगर किसी से कोई कुसूर और ग़लती हो जाए तो उसे माफ करना चाहिए न यह कि उस पर अधिक ज़ोर दिया जाए और द्वेष की आदत बना ली जाए।

नफ्स इंसान को मजबूर करता है कि इस के विरुद्ध कोई बात न हो और इस तरह पर वह चाहता है कि अल्लाह तआला के तख़त पर बैठ जाए इस लिए इस से बचते रहो। मैं सच कहता हूं कि बन्दों से पूरा आचरण करना भी एक मौत है मैं इस को नापसन्द करता हूं कि कोई ज़रा भी किसी को तू ता करे तो उस के पीछे पड़ जाओ मैं तो इस को पसन्द करता हूं अगर कोई सामने भी गाली दे तो सब्र कर के ख़ामोश रहे।"

(मल्फूज़ात, भाग 5, पेज 69, संस्करण 2003)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

" एक बार मैं बाहर सैर को जा रहा था। एक पटवारी अब्दुल करीम मेरे साथ था। वह ज़रा आगे था और मैं पीछे। रास्ते में कोई बुड़िया 70,75 साल की मिली। उस ने एक पत्र उसे पढ़ने को कहा, लेकिन उसने इसे झिड़कयाँ देकर हटा दया। मेरे दिल पर चोट सी लगी। उस ने वह पत्र मुझे दिया। मैं इसे लेकर ठहर गया और उसे पढ़कर अच्छी तरह समझा दिया। इस पर पटवारी को बहुत लज्जित होना पड़ा, क्योंकि रहना तो पड़ा और सवाब से भी वंचित रहा।"

(मल्फूज़ात, भाग 1, पृष्ठ 305, संस्करण 2003)

जरूरत मंदों, रोगियों, बीमारों के लिए आप अलैहिस्सलाम की दया हमेशा जारी रहती थी। मानव जाति के साथ आप की बेहद सहानुभूति के उदाहरण मिलते हैं। अपनी एक आंखों देखी घटना हज़रत मौलवी अब्दुल करीम सियालकोटी साहिब वर्णन करते हैं:

"एक बार कई देहाती औरतें बच्चों को लेकर दिखाने आईं इतने में अन्दर से भी कुछ सेवक औरतें शर्बत के लिए बर्तन हाथों में लिए आ निकलीं और आप को धार्मिक ज़रूरत के लिए एक बहुत ज़रूरी मज़मून लिखना था और शीघ्र लिखना था मैं भी संयोग से जा निकला क्या देखता हूं कि हज़रत प्रतिबद्ध और कमर बांधे खड़े हैं जैसे कोई यूरोपीय अपनी सांसारिक ड्यूटी पर चुस्त और चालाक खड़ा होता है और पांच-छह सन्दूक खोल रखे हैं और छोटी शीशियों और बोतलों में से किसी को कुछ और किसी को कोई शर्बत दे रहे हैं और कोई तीन घंटे तक यही बाज़ार लगा रहा और अस्पताल जारी रखा। फरिग़ होने के बाद, मैंने पूछा, " हज़रत यह तो बहुत कठिन काम है, और इस तरह बहुत सा कीमती समय कई बार बर्बाद हो जाता है। अल्लाह -अल्लाह कैसे जोश से मुझे जवाब देते हैं कि यह भी जो वैसा धार्मिक काम है ये ग़रीब लोग हैं यहां कोई अस्पताल नहीं हैं मैं इन लोगों के लिए हर तरह की अंग्रेज़ी और यूनानी दवाएं मंगावा कर रखा करता हूँ जो समय पर काम आती हैं और फरमाया यह बड़ा नेकी का काम है। मोमिन को इन कामों में सुस्त और लापरवाह नहीं होना चाहिए।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, लेखक हज़रत अब्दुल करीम सियालकोटी, पेज 36)

इस संदर्भ में एक और घटना है:

"कादियान में निहाल सिंह नामक एक बाँगरो जट रहता था.... यह सिलसिला का बहुत बड़ा दुश्मन था और इस तहरीक से हज़रत हकीमुलउम्मत और कुछ दूसरे अहमदियों पर एक बहुत ख़तरनाक आपराधिक झूठा मुकदमा दायर हुआ था और हमेशा वे अन्य लोगों के साथ मिलकर अहमदियों को तंग किया करता था और गालियां देते रहना तो एक सामान्य था। ठीक उन दिनों में जब कि मामला दायर था उसके भतीजे सनता सिंह की पत्नी के लिए मुशक की ज़रूरत पड़ी और किसी दूसरी जगह से यही मुशक मिलती नहीं थी बल्कि यह बहुत कीमती चीज़ थी। इस स्थिति में वह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दरवाज़ा पर आया और मुश्क मांगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस के पुकारने पर शीघ्र ही तशरीफ ले आए और थोड़ा भी इंतजार न रखा। जब उस का सवाल सुना, तो शीघ्र अन्दर चले गए और कह गए कि मैं अभी आता हूं अत: आप ने कोई आधा तोला के लगभग मुश्क ला कर उस के हवाले की।"

(सीरत हज़रत मसीह मौऊद, लेखक याक़ूब अली साहिब इरफानी, जिल्द 2, पेज 306)

सहानुभूति और मानवता की सेवा के बारे में आप फरमाते हैं:

" मैं सच सच कहता हूं, कि मनुष्य का ईमान कभी ठीक नहीं हो सकता जब तक अपने आराम पर अपने भाई का आराम यथा यथा शक्ति प्राथमिकता न दे। अगर मेरा एक भाई मेरे सामने बावजूद अपनी कमज़ोरी और बीमारी के ज़मीन पर सोता है और मैं बावजूद अपने स्वास्थ्य और फिटनेस के चारपाई पर कब्जा करता हूँ ताकि वह उस पर बैठ ना जाए तो मेरी हालत पर खेद है यदि मैं न उठूं और प्रेम और सहानुभूति की राह से अपनी चारपाई उसे न दूं और अपने लिए ज़मीन का फर्श पसंद न करूँ अगर मेरा भाई बीमार है और एक दर्द से लाचार है तो मेरी हालत पर अफ़सोस है यदि मैं इस के मुकाबला पर शांति से सोता रहूं और इसके लिए जहां तक मेरे बस में है आराम पहुंचाने की कोशिश न करूं...... कोई सच्चा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि इस का दिल नर्म न हो....क़ौम का सेवक बनना मख़दूम बनने की निशानी है। और ग़रीबों से नर्म होकर और झुक कर बात करना अल्लाह तआला का मक्बूल होने की निशानी है और बुराई को नेकी के साथ जवाब देना सौभाग्य के चिन्ह हैं और ग़ुस्सा को खा कर पी लेना बहुत बड़ी बहादुरी है।"

(शहादतुल कुरआन, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 6, पृष्ठ 395)

फिर आप लिखते हैं: "याद रखें सहानुभूति का दायरा मेरे निकट बहुत व्यापक है। किसी क़ौम और व्यक्ति को अलग मत करो। मैं आज कल के जाहिलों की तरह यह नहीं कहता कि, केवल मुसलमानों के साथ अपनी सहानुभूति ही निर्दिष्ट करें। नहीं ! मैं कहता हूं तुम ख़ुदा तआला के सभी प्राणियों के साथ सहानुभूति करो। चाहे वह कोई हो। हिन्दू हो या मुसलमान या कोई और। मैं कभी ऐसे लोगों की बातें पसंद नहीं करता जो सहानुभूति को सिर्फ अपनी ही क़ौम तक विशिष्ट करना चाहते हैं।"

(मल्फूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 217)

अल्लाह तआला के अधिकारों और बन्दों के अधिकारों के लिए बन्दों

को हर समय तैयार रहना चाहिए। जो व्यक्ति बन्दों के अधिकार अदा नहीं नहीं करता, वह ख़ुदा के अधिकार कैसे अदा कर सकता है इस संबंध में हमारे आक़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"याद रखना कि एक मुसलमान को अल्लाह तआला के अधिकार और बन्दों के अधिकारों को पूरा करने के लिए सदैव तय्यार रहना चाहिए और जैसे ज़बान से ख़ुदा तआला को उसकी हस्ती और विशेषताओं में वाहिद ला शरीक समझता है ऐसे ही व्यावहारिक रूप में इसे प्रदर्शित करना चाहिए और उसके प्राणियों के साथ सहानुभूति और नर्मी से पेश आना चाहिए और अपने भाइयों से किसी प्रकार का भी हसद और द्वेष को नहीं रखना चाहिए और दूसरों की ग़ीबत करने से किसी को अलग नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं यह देख रहा हूं कि यह तथ्य तो अभी दूर है कि तुम ख़ुदा तआला के साथ ऐसे लीन और डोब जाओ कि बस उसी के हो जाओ और जैसे ज़बान से उस का इकरार करते हो व्यवहार से भी कर के दिखाओ। अभी तो तुम सृष्टि के अधिकार को भी यथा योग्य अदा नहीं करते बहुत से ऐसे हैं जो आपस में फसाद और दुश्मनी रखते हैं और अपने कमज़ोर और ग़रीब लोगों को तिरस्कार की नज़र से देखते हैं और बद सुलूकी का व्यवहार करते हैं और एक दूसरे की ग़ीबतें करते और अपने दिलों में द्वेष और हसद रखतें हैं। परन्तु अल्लाह तआला फरमाता है कि तुम आपस में एक अस्तित्व की तरह हो जाओ। और जब तुम एक अस्तित्व की तरह हो जाओगे, उस समय कह सकेंगे अब तुम ने अपने नफ्सों को पवित्र कर लिया है क्योंकि जब तक तुम्हारा आपस में मामला साफ न होगा उस समय तक ख़ुदा तआला से भी मामला साफ नहीं हो सकता यद्यपि इन दोनों किस्म के अधिकारों में बड़ा अधिकार अल्लाह तआला का है परन्तु इस की सृष्टि के साथ मामला करना आइने की तरह है। जो आदमी अपने भाइयों से मामला साफ साफ नहीं करता वे ख़ुदा तआला के अधिकार भी अदा नहीं कर सकता।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 5, पेज 407, संस्करण 2003)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"शरीयत के दो ही बड़े हिस्से और पहलू हैं जिन की रक्षा इंसान को आवश्यक है। एक अल्लाह तआला का अधिकार दूसरा बन्दों का अधिकार। अल्लाह का अधिकार तो यह है कि अल्लाह तआला की मुहब्बत, उसकी आज्ञाकारिता, इबादत, तौहीद, हस्ती और विशेषताओं में किसी अन्य हस्ती को साझा न करना। और बन्दों का अधिकार यह है कि अपने भाइयों से अंहकार, विश्वासघात और अन्याय किसी प्रकार का न किया जाए, मानो नैतिक आचरण में किसी भी प्रकार की भागीदारी न हो। अगर सुनने में तो यह दो वाक्य हैं परन्तु इस पर पालन करना बहुत मुश्किल है।

ख़ुदा तआला का महान फज़ल इंसान पर है, तो वह दोनों पक्षों पर स्थापित हो सकता है। किसी में क्रोध की ताकत बढ़ जाती है। जब वह जोश मारती है, तो वह न तो उसका दिल पवित्र रख सकता है और न ही उसकी ज़बान। दिल से अपने भाई के विरुद्ध नापाक मंसूबे करता है और ज़बान से गाली देता है और फिर द्वेष पैदा करता है किसी में काम वासना की ताकत अधिक हो जाती है और इस में गिरफतार हो कर अल्लाह की सीमाओं को तोड़ता है अत: सार यह है कि जब तक इंसान के चरित्र की अवस्था ठीक न हो वह पूर्ण ईमान जो इनाम पाने वाले गिरोह में दाख़िल करता है और जिस के द्वारा सच्ची मअरफत का नूर पैदा होता है उस में दाख़िल नहीं हो सकता। अत: दिन रात यही कोशिश होनी चाहिए कि इसके बाद कि इंसान सच्चा मौहिद हो अपने चरित्र को ठीक करे।

(मल्फ़ूज़ात भाग4 पृष्ठ 214 प्रकाशन 2003 ई)

मानव जाति से सहानुभूति को लेकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ और उपदेश प्रस्तुत हैं।

आप फरमाते हैं: "हर व्यक्ति को हर दिन अपनी समीक्षा करनी चाहिए कि वह कहां तक इन बातों का पालन करता है और कहां तक वह अपने भाइयों से सहानुभूति का व्यवहार करता है। इसकी भारी मांग मानव के लिए ज़िम्मे है हदीस सहीह में आया है कि क़यामत के दिन ख़ुदा तआला कहेगा कि मैं भूखा था तुम ने मुझे खाना न खिलाया। मैं प्यासा था और तूने मुझे पानी न दया। मैं बीमार था तुम ने मेरी अयादत न की। जिन लोगों से यह सवाल होगा वे कहेंगे कि हे हमारे रब तू कब भूखा था जो हम ने खाना न दिया, तू कब प्यासा था जो पानी न दिया और तू कब बीमार था जो तेरी अयादत न की। हे ख़ुदा हम ने कब तेरे साथ ऐसा किया? फिर ख़ुदा तआला जवाब देगा कि मेरे अमुक बंदा के साथ जो तूने सहानुभूति की थी। वह मेरी सहानुभूति थी। वास्तव में ख़ुदा तआला की सृष्टि के साथ सहानुभूति करना बहुत बड़ी बात है और ख़ुदा तआला इसे बहुत पसंद करता है। इससे बढ़कर और क्या होगा कि वह उस से अपनी सहानुभूति दिखाता है। सामान्य तौर पर, दुनिया में भी ऐसा ही होता है कि यदि किसी व्यक्ति का नौकर किसी उस के मित्र के पास जाता है और वह उसे भी सूचित नहीं करता है तो क्या वह आक़ा जिस का वह नौकर है इस अपने मित्र से ख़ुश होगा? कभी नहीं! यद्यपि उसने उसे तो कोई परेशानी नहीं दी, लेकिन नहीं। इस नौकर की सेवा और इस के साथ उत्तम व्यवहार मानो मालिक के साथ उत्तम व्यवहार है ख़ुदा तआला को भी इस बात से चिड़ है कि कोई व्यक्ति उसकी सृष्टि के साथ रूखा व्यवहार करे क्योंकि उसे अपनी सृष्टि बहुत प्यारी है। अत: जो आदमी ख़ुदा तआला की सृष्टि के साथ सहानुभूति करता है वह मानो अपने ख़ुदा को प्रसन्न करता है। "

(मल्फ़ूज़ात, भाग 4, पेज 215, संस्करण 2003)

आप अलैहिस्सलाम ने फरमाया

"याद रखो अपने भाइयों के साथ सम्पूर्ण रूप से साफ हो जाना यह आसान काम नहीं है, बल्कि बहुत मुश्किल है। मुनाफिकों के तौर पर आपस में मिलना जुलना और बात है, लेकिन सच्ची मुहब्बत और प्यार से व्यवहार करना दूसरी बात है याद रखो कि अगर इस जमाअत में सच्ची सहानुभूति न होगी तो फिर यह तबाह हो जाएगी और ख़ुदा तआला उनकी जगह कोई और जमाअत पैदा कर लेगा ..... याद रखो यह ख़ुदा तआला का वादा है दुष्ट और पवित्र कभी इकट्ठे नहीं रह सकते। अभी समय है अपना स्वयं का सुधार कर लो। याद रखो कि मनुष्य का दिल ख़ुदा के घर का एक उदाहरण है। ख़ुदा का ख़ाना और आदमी का ख़ाना एक जगह नहीं रह सकता। जब तक इंसान अपने दिल को पूरे तौर पर साफ नहीं कर लेता और अपने भाई के लिए दु:ख उठाने को तैयार न हो जाए तब तक ख़ुदा तआला के साथ मामला साफ नहीं हो सकता।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 5, पेज 408, संस्करण 2003)

पाठको ! मानव की सेवा और इंसानियत की सहानुभूति की यह अनन्त शिक्षा है जो इस्लाम ने दी और जिस पर हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आपके सच्चे गुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चल कर दिखाया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस के अनुपमीय नमूने भी दिखाए। मानव सेवा का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं जिस में जमाअत अहमदिया अपने प्यार इमाम के मार्गदर्शन में आगे से आगे न बढ़ रही हो। अत: दुआ है कि अल्लाह तआला हमें ख़िलाफत के अधीन मानव जाति की सहानुभूति और इंसानियत की सेवा की अधिक से अधिक तौफीक प्रदान फरमाए। आमीन।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

मानवता को तीसरे विश्वव्यापी युद्ध के विनाश से बचाने के लिए जमाअत अहमिदया की सेवाएं

(हिदायतुलल्लाह मंडाशी, मुरब्बी सिलसिला कादियान)

वर्तमान में, दुनिया में हर जगह अशांति और व्याकुलता है, हर जगह असमानता असुविधा और परेशानियां दिखाई दे रही हैं। मानव स्वार्थ और व्यक्तिगत लाभ में डूबा हुआ है लोग भी असंतुष्ट हैं और क़ौमें भी परेशान हैं, सभी देश प्रत्येक क्षण एक भयानक खतरा अनुभव कर रहे हैं। मामूली-मामूली मतभेदों पर, एक देश किसी दूसरे देश पर परमाणु हथियार का इस्तेमाल करने की धमकी दे रहा है। हर देश अपनी रक्षा के विचार से या अपने दुश्मन के विनाश के लिए विनाशकारी हथियारों की तैयारी में एक-दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है। घातक हथियारों की ईजाद हो रही है।

इन भयानक परिस्थितियों में, लोगों के दिल शान्ति और संतोष से ख़ाली और परेशानी का शिकार हैं और क़ौमें भी अमन से वंचित नज़र आती हैं।

इन स्थितियों के पैदा होने की मूल वजह वास्तव में ख़ुदा तआला से दूरी और उस संदेश से दूरी है जो सरवरे कायनात फ़ख़रे मौजूदात रहमतुन लिल्आलमीन हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कुरआन मजीद की सार्वभौमिक और स्थायी शरीयत की रोशनी में अल्लाह तआला की तरफ से ले कर आए हैं।

अत: जब तक कुरआन की शिक्षाओं पर अनुकरण के साथ साथ अल्लाह तआला से सम्बंध स्थापित न होगा तब तक वास्तविक शांति भी दुनिया को प्राप्त नहीं होगी। इसके लिए अल्लाह ने हर युग में कुरआन समझाने वाले मुजद्द्दीन और औलिया अल्लाह भेजे जो इल्हामे इलाही की रोशनी में कुरआन करीम की वास्तविक शिक्षा से दुनिया को अवगत कराते रहे और चौदहवीं सदी में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी बेअसत निर्दिष्ट थी जिस की ख़बरें कुरआन और हदीसे नबवी में पाई जाती हैं। अत: इलाही वादों और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के अनुसार सय्यदना हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहि सलाम का प्रादुर्भव आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूसरी बेअसत के रूप में हुआ।

आने वाले मसीह मौऊद के बारे में यह भविष्यवाणी था कि "'यज़उल हरबो" अर्थात वह युद्ध के सिलसिले को ख़त्म करके शांति और सुरक्षा फैलाएगा। अत: हज़रत अक़दस मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

"मैं सविनय आदरणीय मुसलमान उलेमा, ईसाई उलेमा, हिन्दू पंडितों तथा आर्यों की सेवा में यह विज्ञापन भेजता हू और सूचित करता हूँ कि मैं नैतिक, आस्थागत तथा ईमानी दोषों और गलतियों के सुधार के लिए संसार में भेजा गया हूँ और मेरा आचरण हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के आचरण के समान है। इन्हीं अर्थों में मैं मसीह मौऊद कहलाता हूँ क्योंकि मुझे आदेश दिया गया है कि केवल अदभुत निशानों तथा पवित्र शिक्षा के माध्यम से सच्चाई को संसार में प्रसारित करूँ। मैं इस बात का विरोधी हूँ कि धर्म के लिए तलवार उठाई जाए तथा धर्म के लिए ख़ुदा की प्रजा का रक्तपात किया जाए और मैं आदिष्ट हूँ कि मैं यथा संभव मुसलमानों से उन समस्त दोषों को दूर कर दूँ और पवित्र आचरण, संयम, शालीनता, न्याय और सच्चाई के मार्गों की ओर उन्हें बुलाऊँ। मैं समस्त मुसलमानों, ईसाइयों, हिन्दुओं और आर्यों पर यह बात स्पष्ट करता हूँ कि संसार में कोई मेरा शत्रु नहीं है। मैं मानवजाति से ऐसा प्रेम करता हूँ कि जैसे दयालु मां अपने बच्चों से अपितु उस से भी बढ़कर। मैं केवल उन मिथ्या आस्थाओं का शत्रु हूँ जिस से सच्चाई का ख़ून होता है। मानव के साथ सहानुभूति करना मेरा कर्त्तव्य है तथा झूठ, अनेकेश्वरवाद, अन्याय और प्रत्येक दुष्कर्म, और दुराचार से विमुखता मेरा सिद्धान्त।

(अरबईन, रूहानी खज़ायन, जिल्द 17, पृष्ठ 343 से 344)

इस्लाम शांति और सुरक्षा का धर्म है

धार्मिक वातावरण में शांति की स्थापना के लिए यह महत्वपूर्ण है कि धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती नहीं है। अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है: لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (अल्बकर: 257) अनुवाद: धर्म के मामले में कोई ज़बरदस्ती जायज़ नहीं है।

फिर फरमाता है

وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ قف فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ

(अल्-कहफ:30)

कह दे कि: सच्चाई वह है जो तुम्हारे रब्ब की तरफ से है अत: जो चाहे मान ले और जो चाहे वह इंकार करे।

दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए, अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में यह शिक्षा दी है कि दुनिया में आने वाले सभी नबी रसूलों और ऋषि मुनियों को सम्मान की नज़र से देखा जाए क्योंकि प्रत्येक कौम की तरफ अल्लाह तआला के भेजे हुए और हिदायत देने वाले आए हैं।

जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है: وَّ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ(अल-राअद: 8) अर्थात प्रत्येक क़ौम की तरफ अल्लाह तआला की तरफ से हिदायत देने वाले आए हैं وَ اِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ(फातिर 25) दुनिया की हर क़ौम की तरफ ख़ुदा तआला के पैग़म्बर और अवतार आए हैं।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं: "इस्लाम पवित्र और शांतिपूर्ण धर्म था, जिस ने किसी क़ौम के पेश्वा पर हमला नहीं किया और कुरआन वह सम्मान योग्य किताब है जिस ने क़ौमों के मध्य में शांति की बुनियाद डाली और प्रत्येक क़ौम के नबी को स्वीकार कर लिया। "(मैत्रि सन्देश, पृष्ठ 30)

इस्लाम एक महत्त्वपूर्ण बात यह प्रस्तुत करता है कि मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है और मानव जाति के सभी लोग बराबर हैं, इसलिए इस्लाम ने सभी क़ौमों और जाति के भेदभाव को मिटाकर समानता की स्थापना की।

इसलिए कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है:

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّ اُنْثٰى وَ جَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّ قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ط اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقٰكُمْ ط اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ

(अल-हुजरात: 14)

हे लोगो! विश्वास हम ने तुम्हें नर और मादा बनाया और तुम्हें क़ौमों और क़बीलों में बांटा ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको निसंदेह अल्लाह के नज़दीक तुम में सबसे प्रतिष्ठित वह है जो सबसे पवित्र है निसन्देह अल्लाह तआला बहुत ज्ञान रखने वाला (और) हमेशा जागरूक है।

इसलिए इस सिलसिले में इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो बे-नज़ीर शिक्षा दुनिया के समक्ष रखी वह इस तरह है: हे लोगो! कान खोल कर सुन लो तुम्हारा रब्ब एक है और तुम्हारा बाप भी एक है। और फिर कान खोलकर सुन लो कि अरबों को अजमियों पर कोई फज़ीलत नहीं और न अजमियों को अरबों पर कोई प्राथमिकता है गोरों को कालों पर कोई प्राथमिकता नहीं है कालों को गोरों पर कोई प्राथमिकता नहीं है। केवल ऐसी व्यक्तिगत ख़ूबी के जिस के द्वारा कोई आदमी दूसरों से आगे निकल जाए।

(मुस्नद अहमद बिन हंबल)

आज, जब के विश्व अराजकता और परेशानी का शिकार है, हर जगह से सार्वभौमिक युद्ध के संकेत नज़र आ रहे हैं इस समय ज़रूरत इस बात की है कि इस्लाम की शान्ति देने वाली शिक्षा और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अंतिम नसीहत को दुनिया में फैलाया जाए। दुनिया में वास्तिवक शान्ति और सुरक्षा हमेशा उन लोगों द्वारा स्थापित हुई है जो ख़ुदा तआला की तरफ से नियुक्त होकर आते हैं। इस ज़माना में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस शांति के सुनहरे नियम को दुनिया भर मैं फैलया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शांति की स्थापना के लिए महान कार्य

अत: इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम, आपके महान ख़लीफ़ाओं और आप की जमाअत को तैनात किया है। आप अलैहिस्सलाम ने ही अस्सी के लगभग किताबें लिखीं जिसमें विश्व में शांति की स्थापना के बारे में शिक्षा और सुनहरे नियमों को प्रस्तुत किया है। अगर आज दुनिया में शांति सम्भव है, तो इन सिद्धांतों पर चल कर संभव है।

आप ने जिहाद के मूल तथ्य को कुरआन व हदीस और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार वर्णन किया है और साथ- साथ मुसलमानों में प्रचलित सिद्धांत जिहाद का ग़लत होना साबित किया और धार्मिक आतंकवाद के उन्मूलन और सार्वजनिक शान्ति की स्थापना के लिए महत्वपूर्ण और ठोस सुझाव भी दिए हैं जिन पर अनुकरण किए बिना बिना धार्मिक जुनून को ख़त्म करना संभव नहीं हैं। इसलिए आप फरमाते हैं:

"यह तरीका जिहाद जिस पर इस समय अक्सर बर्बर अनुकरण कर रहे हैं यह इस्लामी जिहाद नहीं है बल्कि यह नफ्से अम्मारह के जोशों या जन्नत के प्रलोभन से ना-जायज़ इच्छाएं हैं जो मुसलमानों में फैल गई हैं ।"

(गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17, पेज 9 से 10)

तथा फरमाया: "वास्तव में यह जिहाद का मस्ला जैसा कि उनके दिल में है सही नहीं है और इसका पहला कदम मानवीय सहानुभूति का ख़ून करना है।

आप फरमाते हैं:

"क्या यह नेक काम हो सकता है कि उदाहरणत: एक व्यक्ति अपनी धुन में बाज़ार में जा रहा है और हम इतना उससे अपरिचित हैं कि हम उसका नाम तक भी नहीं जानते और न वह हमें जानता है मगर फिर भी हमने उसके क़त्ल करने के इरादे से एक पिस्तौल उस पर चला दी, क्या यही धर्मपरायणता है?... यह तरीक़ किस हदीस में लिखा है या किस आयत में है? कोई मौलवी है जो इसका जवाब दे! अनपढ़ और जाहिलों ने जिहाद का नाम सुन लिया है और फिर इस बहाने से अपनी तामसिक इच्छाओं को पूरा करना चाहा है या सिर्फ दीवानगी के तौर पर ख़ून बहाने वाले बन गये हैं।..... मुझे आश्चर्य है कि जबकि इस समय कोई व्यक्ति मुसलमानों को धर्म के लिए हत्या नहीं करता तो वह किस आदेश गुनाह न करने वाले लोगों को कत्ल करते हैं। "

(गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी खज़ायन, जिल्द 17, पेज 11 से 13)

जिहाद के सिद्धांत का सुधार ध्यान और इस की तरफ ध्यान न देना के बुरे परिणाम

हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने अमीर वाली काबुल को जिहाद के ग़लत सिद्धांत के सुधार की ओर ध्यान दिलाया और साथ ही उन ख़तरों की ओर भी इशारा कर दिया जो आज एक ज़िन्दा वास्तविकता के रूप में हमारी नज़रों के सामने हैं। इसी तरह आप ने विश्व शांति की स्थापना के लिए ईसाई पादरियों और ईसाई शासकों को यह परामर्श दिया कि वह न्याय से काम लें और ऐसी अपमानजनक कारवाइयों से बचें।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं

हम बार-बार लिख चुके हैं कि क़ुरआन शरीफ़ कदापि जिहाद की शिक्षा नहीं देता। वास्तविकता केवल इतनी है कि प्रारम्भिक काल में कुछ मुख़ालिफ़ों ने इस्लाम को तलवार से केवल रोकना ही नहीं बल्कि मलियामेट करना चाहा था, इसलिए इस्लाम ने अपनी रक्षा के लिए उन पर तलवार उठाई और उन्हीं के संबंध में यह आदेश था कि या वे क़त्ल किए जाएँ या आज्ञापालन स्वीकार करें। अत: यह आदेश एक विशेष समय के लिए था सदैव के लिए नहीं और इस्लाम उन बादशाहों की कार्यवाहियों का उत्तरदायी नहीं, जो नुबुव्वत के ज़माने के बाद सरासर ग़ल्तियों या स्वार्थों के कारण पैदा हुईं। अब जो व्यक्ति मूर्ख और अनपढ़ मुसलमानों को धोखा देने के लिए बार-बार जिहाद का विषय याद दिलाता है मानो वह उनकी ज़हरीली प्रथा को हवा देना चाहता है। क्या ही अच्छा होता कि पादरी साहिबान सही घटनाओं को सामने रखकर इस बात पर बल देते कि इस्लाम में जिहाद नहीं है और न बलपूर्वक मुसलमान बनाने का आदेश है। जिस किताब में यह आयत अब तक मौजूद है कि لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (अल्बकर: 257) धर्म के विषय में ज़बर्दस्ती नहीं करनी चाहिए। क्या उसके बारे में हम सोच सकते हैं कि वह जिहाद की शिक्षा देती है ? अत: इस जगह हम मौलवियों का क्या शिकवा करें ख़ुद पादरी साहिबों का हमें शिकवा है कि वह ढंग उन्होंने नहीं अपनाया जो वस्तुत: सच्चा था और गवर्नमेन्ट के हितों के लिए भी लाभदायक था।

(गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17, पेज 31 से 32)

फिर आगे आप अलैहिस्सलाम ने उस ज़माने में ब्रिटिश सरकार को इस ओर ध्यान दिलाते हुए तहरीर फरमाया कि:

मेरे निकट यह भी आवश्यक है कि हमारी धर्मोपकारी सरकार इन पादरी साहिबों को इस खतरनाक झूठ से रोक दे जिसका परिणाम देश में अशान्ति और विद्रोह है। यह तो सम्भव नहीं कि पादरियों की इन व्यर्थ मनगढ़त बातों से मुसलमान इस्लाम को छोड़ देंगे, हाँ इन लैक्चरों का सदा यही परिणाम निकलेगा कि जन साधारण के लिए जिहाद के मसला की एक याददहानी होती रहेगी और वे सोए हुए जाग उठेंगे।"

(गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17, पेज 31 से 9)

इसी प्रकार हुज़ूर ने शांति स्थापना, तथा लोगों में आपसी प्यार और सुलह की स्थापना के लिए बर्तानवी हुकूमत को सुलह की और ध्यान दिलाते हुए फरमाया कि

"मेरे निकट उत्तम राय वही है जो अभी निकट ही में रोम की गवर्नमेन्ट ने अपनाई है और वह यह है कि परख के तौर पर कुछ वर्षों के लिए हर एक धर्म को पूर्णत: इस बात से रोक दिया जाय कि वह अपने लेखों और मौखिक भाषणों में किसी दूसरे धर्म का स्पष्टत: या सांकेतिक रूप से कदापि वर्णन न करे। हाँ यह अधिकार है कि

जितना चाहे अपने धर्म की विशेषतायें बयान किया करे। इस दशा में नये-नये ईर्ष्या-द्वैषों का बीजारोपण समाप्त हो जायेगा और पुराने क़िस्से भूल जायेंगे और लोग परस्पर प्रेम और हितों की ओर लौटेंगे और जब सरहद के असभ्य और उजड्ड लोग देखेंगे कि लोगों में परस्पर इतना प्रेम और लगाव पैदा हो गया है तो अन्तत: वे भी प्रभावित होकर ईसाइयों से ऐसी ही हमदर्दी करेंगे जैसी कि एक मुसलमान अपने भाई की करता है

(गवर्मेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 17, पेज 31 से 22)

अफसोस कि धार्मिक सहिष्णुता और सामाजिक शांति और सद्भाव की स्थापना के लिए समय के मामूर हज़रत अक़दस मसीह मौऊद की इन दूरगामी परिणामों पर आधारित युक्तियों पर किसी को अनुकरण की ताकत और सआदत नसीब नहीं हुई जिसका परिणाम यह है कि आज सौ साल बाद आतंकवादी घटनाएं दैनिक दिनचर्या बन चुकी हैं सारी दुनिया बे अमनी और शरारत के गहरे दलदल में प्रतिदिन धंसती चली जा रही है।

रब्बुल आलमीन गुण

शांति की स्थापना के लिए हज़रत अक़दस मसीह मौऊद ने दुनिया के सामने ख़ुदा तआला का विशेषण "रब्बुल आलमीन" पेश किया कि जिस तरह हमारा रब्ब अपने मानने वालों और न मानने वालों दोनों से समान व्यवहार कर रहा है वैसे हमारा भी अमल होना चाहिए कि हर मनुष्य समझते हुए, अल्लाह तआला की सृष्टि समझते हुए उस के साथ प्यार और सहानुभूति का व्यवहार करे। यहां तक कि वह किसी भी धर्म क़ौम से संबंधित है।

इस संबंध में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"हमारा यह नियम है कि सारी मानव जाति से सहानुभूति करो। अगर एक व्यक्ति एक पड़ोसी हिंदू को देखता है कि उसके घर में आग लग गई और यह नहीं उठता कि उस की आग बुझाने में मदद करे तो मैं सच सच कहता हूं कि वह मुझ में से नहीं है। अगर एक व्यक्ति हमारे मुरीदों से देखता है कि एक ईसाई की कोई हत्या करता है और वह उसके छुड़ाने के लिए मदद नहीं करता तो मैं तुम्हें सही कहता हूँ कि वह हम में से नहीं है ...... मैं क़सम खा कर कहता हूँ और सच कहता हूँ कि मुझे किसी कौम से कोई दुश्मनी नहीं है हां, जहां तक सम्बन्ध है उन की आस्थाओं का सुधार करना चाहता हूं और अगर कोई गालियां दे, तो हमारी शिकायत ख़ुदा तआला के दरबार में है न किसी अदालत में, और इस के अतिरिक्त मानव जाति से सहानुभूति हमारा अधिकार है।"

(सिराज मुनीर, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 12, पृष्ठ 28)

सभी धर्म गुरूओ और धार्मिक बुज़ुर्गों का सम्मान

जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने विश्व शांति की स्थापना के लिए एक यह नियम उल्लेख किया कि हर एक क़ौम में ख़ुदा तआला के सम्माननीय इंसान हुए हैं इन सभी बुजुर्गों की इज़्ज़त और सम्मान करो और इस तरह तरीका से आप ने क़ौमों के मध्य एकता की एक बहुत मज़बूत ठोस नींव की बुनियाद स्थापित की है।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि है:

"हे प्रियजनो! पुराने अनुभव तथा बार-बार की परीक्षा ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि भिन्न-भिन्न क़ौमों के नबियों तथा रसूलों को अपमान के साथ याद करना और उन को गालियाँ देना एक ऐसा ज़हर है जो न केवल अन्तत: शरीर को नष्ट करता है अपितु रूह (आत्मा) को भी नष्ट करके धर्म एवं संसार दोनों को तबाह करता है। वह देश आराम से जीवन व्यतीत नहीं कर सकता जिसके निवासी एक दूसरे के धार्मिक पथ-प्रदर्शक के दोष निकालने तथा मानहानि में व्यस्त हैं तथा उन क़ौमों में सच्ची एकता कदापि नहीं हो सकती, जिन में से एक क़ौम या दोनों क़ौमें एक-दूसरे के नबी या ऋषि तथा अवतार को बुराई अथवा गालियों के साथ याद करते रहते हैं।"

(पैग़ाम सुलह, रूहानी खज़ायन, जिल्द 23,पृष्ठ 452)

आज के घरेलू और अंतरराष्ट्रीय माहौल को ख़राब करने वाली बहुत सी बातों के एक घटना पुरानी उत्तेजना फैलने वाली धार्मिक घटनाओं और अत्याचारों की दास्तानों को चाहे वह फर्जी हों या वास्तविक, दोहरा कर और किताबों और अख़बारों में प्रकाशित करके जातियों में परस्पर घृणा उत्पन्न करना है। इस तरह पुराने घाव को हरा कर के ज़हरीला और बीमारी का माहौल पैदा किया जा रहा है। हलांकि अतीत के ज़ुल्म भी गुज़र चुके और ज़ालिम भी इस दुनिया में न रहे। ज़माना बदल गया और लोग बदल गए हैं और वर्तमान नस्ल का और इन लोगों का उन ज़ुल्मों से कोई सम्बन्ध नहीं है। समय बदल गया है और स्थिति बदल गई है।

इसके बारे में जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब कादियानी ने क़ुरआन की रोशनी में दुनिया वालों को आपसी एकता और सहमति और शांति व सलामती की जो शिक्षा दी, वह इस प्रकार है। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हम इस बात को भी खेद से लिखना चाहते हैं कि जो इस्लामी राजाओं के समय में सिख साहिबों से इस्लामी सरकारों ने कुछ झगड़े हुए या लड़ाई हुई तो यह सब बातें वास्तव में सांसारिक मामले थे और नफ्सानी आवश्यकताओं से उनकी प्रगति हुई थी और दुनिया की पूजा ने ऐसी लड़ाइयों को आपस में बहुत बढ़ा दिया परन्तु दुनिया की पूजा करने वालों पर अफसोस को स्थान नहीं होता बल्कि तारीख़ से बहुत से बहुत सी गवाहियां मिलती हैं और प्रत्येक धर्म के मानने वालों में ये नमूने पाए जाते हैं कि राज और बादशाहत के लिए भाई को भाई ने और बेटे ने बाप को और बाप ने बेटे को कत्ल कर दिया। ऐसे लोगों को धर्म और दुनिया और आख़रत की कोई परवाह नहीं होती.... प्रत्येक पक्ष के नेक आदिमयों को चाहिए कि स्वार्थ परयाण बादशाहों और राजाओ के किस्सों को बीच में लाकर, चाहे न चाहे उनके व्यर्थ हसदों को जो केवल स्वाभाविक स्वार्थ पर आधारित हैं। आप हिस्सा न ले, वह एक क़ौम थी जो गुज़र गई उन के कर्म उन के लिए और हमारे हमारे कार्य हमारे लिए। हमें चाहिए कि अपनी खेती में उनके कांटों न बोएँ और अपने दिल को महज़ इसलिए ख़राब न करें कि हम से पहले कुछ हमारी क़ौम में से ऐसा काम कर चुके हैं। "

(सत बचन, रूहानी खज़ायन, भाग 10, पेज 252)

इस स्वर्ण नियम के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद ने आगामी क़यामत तक के लिए अत्याचार का सिलसिला और फित्ना और फसाद की इन कड़ियों को समाप्त किया है जो एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल की ओर जाती हैं और मनुष्य को उनके ना किए गए गुनाहों के इल्ज़ाम में समाप्त करती हैं और फिर मानव रक्त बहुत सस्ता हो कर शहरों और बाज़ारों में बहता है और इंसान शैतान का रूप धारण कर के वहशीयत का नंगा नाच नाचता है।

इस सुनहरी उसूल के अधीन यह ज़रूरी है कि पिछले बादशाहों या क़ौमों की किसी सख़्ती अथवा अत्याचार को सामने ला कर माहोल को ख़राब न किया जाए। इन लोगों ने जो कुछ किया इस के परिणाम ख़ुद उन्होंने भुगत लिए इन बातों को अब दुहराने की ज़रूरत नहीं है। हमें अपने आचरण और चरित्र के सुधार की कोशिश करनी चाहिए। अगर हम अपने अंदर शांति संधि और सहमति और सहिष्णुता पैदा करेंगे तो इस के मीठे फल भी हम ख़ुद खाऐंगे।

अमन तथा शान्ति से भरपूर ये वे सिद्धांत और शिक्षाएं हैं जिन्हें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन मजीद फ़ख़्रे मौजूदात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श की रोशनी में दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। इस उद्देश्य के लिए हुज़ूर ने अपने सारे जीवन को समर्पित कर रखा था और इस महान उद्देश्य के लिए आप अपनी मृत्यु से जो 26 मई 1908 को हुई केवल एक दिन पहले अपना प्रसिद्ध भाषण "पैग़ामे सुलह" लिखा। जिसमें आप अलैहिस्सलाम ने अमन तथा शान्ति की स्थापना के लिए ऐसे सुनहरी नियम लिखे जो सब जातियों में एकता और सहमति बनाने के लिए उपयोगी और आवश्यक हैं।

अत: आज यह अन्तर्राष्ट्रीय एकता का एकमात्र स्रोत है, अगर आज शांति और समृद्धि दुनिया में स्थापित की जा सकती है, तो यह इस शिक्षा द्वारा की जा सकती है।

हज़रत मसीह मौऊद ने प्रादुर्भव फरमा कर वह नियम व शिक्षाएं दुनिया के सामने रखीं जिनसे दुनिया में शांति और सुरक्षा कायम हो सकती है और दुनिया भयानक विनाश से बच सकती है। आप की मृत्यु के बाद आप के सम्माननीय ख़लीफ़ा इसी मिशन को लेकर दुनिया में परिवर्तन पैदा कर रहे हैं और आज यह काफिला मानवता के अस्तित्व के लिए दुनिया के हर कोने में प्रतिबद्ध है।

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अव्वल रज़ि अल्लाह शांति स्थापना के बारे में फरमाते हैं।

" दुनिया का काम शांति पर आधारित है और अगर शांति दुनिया में स्थापित न रहे तो कोई काम नहीं हो सकता। जितनी अधिक शान्ति होगी उतना अधिक इस्लाम बढ़ेगा। इसलिए, हमारे नबी आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हमेशा शांति के सहायक रहे है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उपद्रव की अवस्था में जो मक्का में थी और ईसाई साम्राज्य के तहत जो हब्शा में थी, हमें यह शिक्षा दी कि ग़ैर मुस्लिम साम्राज्य के अधीन कैसे जीवन व्यतीत करना चाहिए। इस जीवन के अधीन अमन है यदि शांति नहीं है, तो किसी प्रकार का कोई काम भी नहीं किया जा सकता। इस कारण से तुम शांति बढ़ाने की कोशिश करो और शांति के लिए ताकत की आवश्यकता है और वह सरकार के पास हैं। मैं चापलूसी से नहीं बल्कि सच्चाई पहचानने के इरादे से कहता हूं कि तुम एक शांतिप्रिय जमाअत बनो ताकि तुम तरक्की करो। और तुम आराम से ज़िन्दगी व्यतीत कर सको। इसका बदला मख़लूक से मत मांगो। अल्लाह से इस का बदला मांगो। और याद रखो कि कोई भी धर्म शांति के बिना नहीं फैलता। और न फूल सकता है। मैं इस के साथ यह भी कहता हूं कि हज़रत साहिब की किताबों से मालूम होता है कि गवर्मेन्ट के इस उपकार केबदला में हम अगर शान्ति स्थापना करने में कोशिश करें तो अल्लाह तआला इस का परिणाम हम को ज़रूर देगा और अगर हम इस का विरोध करें तो इस के बुरे परिणाम को भी भुगतना पड़ेगा।

(हकायकुल फुरकान, जिल्द 4, पृष्ठ 453 से 454)

हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफतुल मसीह सानी रज़ि अल्लाह तआला दुनिया में, शांति की स्थापना के बारे में फरमाते हैं

"अत: इस्लाम कहता है कि इन चार चीज़ों के बिना शांति नहीं हो सकती। सबसे पहले: लीग में सैन्य शक्ति है। दूसरा: न्याय के साथ आपस में शान्ति स्थापित की जाए। तृतीय: जो न माने उस के विरुद्ध सारे मिल कर लड़ाई करें। चौथा: और जब शांति हो जाए, तो शांति कराने वाले व्यक्तिगत लाभ न उठाएं।

ये चार सिद्धांत राष्ट्र संघ के क़ुरआन ने वर्णन किए हैं, जब तक इन पर वास्तविक रूप से अनुकरण न होगा वास्तविक शांति स्थापित नहीं हो सकती।

पहली लीग आफ नेशन्स भी विफल रही है, और दूसरा लीग ऑफ नेशंस अभी भी विफल रहेगी। अत: आवश्यक है कि दुनिया के इस्लाम के उसूलों को अपनाए और उन का पालन करने की कोशिश करे, क्योंकि जब तक यह पार्टी सिस्टम जारी है और जब तक यह भेदभाव बाकी है कि यह छोटे राष्ट्र है और वह बड़े राष्ट्र हैं और यह कमज़ोर सरकार है और वह एक शक्तिशाली सरकार है, तब तक दुनिया की शांति का सपना पूरा नहीं हो सकता। अत: चाहिए कि भेदभाव को दिल से मिटाया जाए जब तक यह बात बाकी रहेगी कि यह बड़ी जान है और यह छोटी जान है तब तक दुनिया शांति और चैन से सांस नहीं ले सकती।

लीग ऑफ नेशन्स केवल तब ही सफल हो सकती है जब यह इस्लाम के सिद्धांतों के अनुसार स्थापित की जाए और इस्लाम के नियमों के अनुसार कार्य करे। लीग ऑफ नेशंस के बाद अगर दुनिया शांति प्राप्त करना चाहे तो उसे निम्न चार चीज़ों को इकट्ठा करने की कोशिश करनी चाहिए अगर यह बातें एकत्रित कर दी जाएं तो वे दुनिया में एक सरकार के कार्यवाहक हो सकती है।

(1) सिक्का और एक्सचेंज।

(2) व्यापार संबंध।

(3) अनतर्राष्ट्रीय कज़ा

(4)आय तथा व्यय के माध्यम अर्थात हर इंसान को यात्रा की सुविधाएं उपलब्ध होनी चाहिए ताकि वे स्वतंत्र रूप से एक देश से दूसरे देश में जा सके। तो अगर ये चार चीज़ें एकत्रित की जाती हैं तो शांति स्थापित हो सकती है।

फिर, मैं नियमों का वर्णन करता हूं कि इस्लाम ने देश के आंतरिक विवादों को दूर करने के लिए तैयार किया है।

पहली बात यह है कि नस्लों के भेदभाव को मिटा दिया जाए। अल्लाह तआला फरमाता है:

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّا خَلَقۡنٰكُمۡ مِّنۡ ذَكَرٍ وَّ اُنۡثٰى وَ جَعَلۡنٰكُمۡ شُعُوۡبًا وَّ قَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوۡا ؕ اِنَّ اَكۡرَمَكُمۡ عِنۡدَ اللّٰهِ اَتۡقٰكُمۡ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيۡمٌ خَبِيۡرٌ (अल-हुजरात: 14)

यानी हे लोगो ! हम ने तुम को पुरुष और महिला से बनाया है और फिर तुम को कई समूहों और जनजातियों में विभाजित कर दिया है ताकि यह बात तुम्हारे लिए आपस में परिचय का स्रोत बने मगर यह बात याद रखो कि तुम में से अल्लाह तआला के निकट अधिक सम्मानित वह है जो अधिक संयमी है ये जनजातियां और कबीले और परिवार तो परिचय और मान्यता के लिए है जिस तरह पहचान के लिए नाम रखे जाते हैं मगर क्या नामों की वजह से तुम यह कभी समझते हो कि चूंकि उसका नाम अब्दुल्ला है इसलिए यह छोटा है और इसका नाम रहमान है इसलिए वह बड़ा है बल्कि यह नाम तो पहचानने के लिए हैं लेकिन कुछ लोग अपनी अज्ञानता के कारण दूसरों को छोटा सोचना शुरू करते हैं, जैसे मुसलमानों में सय्यद , हिन्दुओं में ब्राह्मण ख़ुद को उत्तम समझने लगते हैं। इसलिए जनजातियों और कबीलों के इस विभाजन की अपने अंदर कोई महानता नहीं है, लेकिन यह परिचय के लिए है। अगर सारे ही अब्दुर्रहमान नाम के होते, अगर सारे ही अब्दुल्ला के नाम के होते या सारे ही चूनी लाल या राम लाल नाम रखते तो पहचान मुश्किल हो जाती इसलिए यह नाम और कबीले और वतन आदि हमारे लिए परिचय की सरलता बनाने का स्रोत हैं अन्यथा इस्लाम किसी इंसान को दूसरे इंसान पर केवल कबीले या परिवार या देश की वजह से प्राथमिकता नहीं देता।

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार फरमाया कि अरबी व्यक्ति को अजमी पर कोई प्राथमिकता नहीं और न ही अजमी को

अरबी पर कोई प्राथमकिता प्राप्त है सब ही अल्लाह के बंदे हैं।

दूसरी बात यह है कि दोस्ती या ग़ैर-दोस्ती के भेद को दूर करना चाहिए। आम तौर पर यह दुनिया में देखा जाता है कि लोग अपने दोस्तों की मदद करते हैं और जिन लोगों के साथ वे अपरिचित होते हैं, उन लोगों को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। यह तरीका शांति को बर्बाद करने वाला है। अल्लाह तआला फरमाता है: وَ تَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَ التَّقْوٰى ۪ وَ لَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ (सूर: अल-माइदा: 3) कि हम तुम्हें दोस्ती से मना नहीं करते। तुम दोस्तों की मदद नि:सन्देह करो लेकिन वह नेकी और तक्वा की सीमाओं के अंदर हो। जो अधिकार उसे पहुँचता है, वही उसे पहुंचाओ। यह नहीं हो सकता कि क्योंकि दोस्त है इसलिए गुनाह और बग़ावत की अवस्था में भी उस की मदद करते रहो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार सहाबा से फरमाया اُنْصُرْ اَخَاكَ ظَالِمًا اَوْ مَظْلُوْمًا कि तू अपने भाई की मदद कर चाहे वह आत्याचारी हो या पीड़ित हो। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! पीड़ित की मदद तो हमारी समझ में आता है लेकिन अत्याचारी की मदद कैसे की जाए।? आप ने फरमाया उसे ज़ुल्म से रोको। यही उसकी मदद हे। मानो अपने भाई की मदद के लिए हर हालत में तुम्हारा कर्तव्य है अगर वह पीड़ित है तो तानाशाह के हाथ रोको और अगर वे ख़ुद तानाशाह है तो उसे अत्याचार करने से रोको। इसलिए इस्लाम ने वैध समर्थन का समर्थन किया है, लेकिन अनावश्यक सहयोग को कठोरता से मना किया है, और आज्ञा देता है कि हर असामान्य बात को ख़ुशी के कारण नहीं माना जा सकता है।

तीसरी बात यह है कि अल्लाह तमाम पशुओं और गैर-पशुओं के भेदभाव को खत्म करने का प्रयास करेगा। مَاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ وَ لِذِي الْقُرْبٰى وَ الْيَتٰمٰى وَ الْمَسٰكِيْنِ وَ ابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَ مَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۚ وَ مَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ

(सूर: अल-हशर: 8) यानी बस्तियों के लोगों को जो माल अल्लाह अपने रसूल को अता फरमाता है वह अल्लाह और उसके रसूल और आत्मीयों का है इसी तरह अनाथों और ग़रीबों और यात्रियों का है और हम ने यह कानून इसलिए बनाया है कि यह धन तुम्हारे हाकिमों के अंदर ही चक्कर न काटता रहे बल्कि ग़रीबों की ज़रूरत का भी ख्याल रखा जाए। हाँ इस्लाम यह नहीं कहता कि मालदारों से पूरे तौर पर धन छीन लिया जाए और हर रंग में समानता स्थापित कर दी जाएगी बल्कि वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार भी कायम रखता है लेकिन साथ ही वह शासन को ध्यान दिलाता है कि अपने मालों को इस तरीके से खर्च करो कि इस के द्वारा ग़रीबों को तरक्की प्राप्त हो।

चौथी बात राष्ट्रीय स्वतंत्रता की भावना को दूर करना है। दुनिया में कई लोग होते हैं जो केवल अपने आप को देखते हैं कि चूंकि हमारा देश अमुक बात करता है, इस लिए उस की बात उचित है, और अब हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी क़ौम की प्रत्येक बात का समर्थन करें। वे यह नहीं देखते कि राष्ट्र सच्चाई पर है या ग़लती पर और चूंकि क़ौम का यह आशा होती है कि क़ौम के लोग प्रत्येक अवस्था में हमारा साथ देंगे इसलिए वह उचित अनुचित प्रत्येक काम को अपने लिए उचित समझते हैं। अल्लाह तआला फरमाता है:

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَ الْعُدْوَانِ وَ مَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ وَ تَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَ التَّقْوٰى ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ

हे मोमिनो! तुम प्रमुख महत्वपूर्ण मामलों में सलाह करो तो हमेशा इस मूल को अपने सामने रखो कि हम गुनाह और उत्पीड़नदी और अपने रसूल की अवज्ञा किसी रूप में नहीं करेंगे और ऐसे मामलों में अपनी क़ौम से अलग हो जाएंगे। तो इस्लाम इस तरह के जत्थे को अनुचित करार देता है जिस के अन्दर गुनाह और उत्पीड़न और रसूल की अवमानना से बचने की कोशिश न की जाए। हां इस्लाम कहता है कि "वतना जौ बिलब्रिर्रे वत्तकवा" ऐसी कमेटियां बनाओ जो नेकी और तक्वा पर आधारित हों "वत्तकुल्लाह" और अल्लाह का तक्वा अपने मन में पैदा करो और उसकी सीमाओं को तोड़ने से परहेज़ करो क्योंकि तुम्हारी ये कमेटियां इस दुनिया में ही रह जाएँगी। आप अस्थायी तौर से इस परीक्षा के घर में आए हो परन्तु तुम्हारा मुक्ति अगली दुनिया से संबंधित है। अत: ऐसे कर्म न करो तुम्हारा भविष्य का जीवन नष्ट हो। ये चार नियम हैं जो इस्लाम ने बयान किए हैं अगर दुनिया उन पर अमल करे तो वर्तमान चिंता और अशांति से मुक्ति पा सकती है। "

(अनवारुल उलूम, जिल्द 18, पृष्ठ 432 से 437)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह अस्सालिस को ख़िलाफत का समय नवम्बर 1965 से जून 1982 ई तक है। यह वह समय था जब दुनिया दो बड़े युद्ध के बाद अब तीसरे सार्वभौमिक युद्ध की ओर बढ़ रही थी और जातीय और राष्ट्रीय घृणा के दौर में सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया के तीसरे इमाम ने दुनिया में शांति प्रेम की शिक्षा पर आधारित क़ुरआन का संदेश दिया जो कि प्यार और प्रेम संदेश था। एक अवसर पर आप ने फरमाया:

" मैंने अपनी उम्र में सैकड़ों बार क़ुरआन का निहायत ध्यान से अध्ययन किया है उसमें एक आयत भी ऐसी नहीं कि सांसारिक मामलों में एक मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम के भेदभाव की शिक्षा देती है। शरीयत इस्लामी मानव जाति के लिए पूर्ण रूप से रहमत है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा ने लोगों के दिलों को प्यार और सहानुभूति के साथ जीता था। अगर हम भी लोगों के दिलों को जीतना चाहते हैं तो हमें भी आप के कदमों पर चलना होगा। क़ुरआन की शिक्षा का सारांश यह है

प्रेम सब से घृणा किसी से नहीं

Love for all Hatred for none यही तरीका है दिलों को जीतने का इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है।"

(संबोधन जलसा सालाना ब्रिटेन, अक्टूबर 1980 बहवाला दौरा पश्चिम, पृष्ठ 523 से 524)

इसके अलावा हुज़ूर अनवर ने यूनाइटेड किंगडम और यूरोप बल्कि सारी दुनिया को शांति का संदेश दिया, और तीसरी सार्वभौमिक भयानक विनाशकारी युद्ध से चेतावनी दी। आप फरमाते हैं:

"दोस्त जानते हैं कि यूरोप की यात्रा में जब मैं गया था तो लंदन में वानडज़ोरथ हॉल में मैंने अंग्रेज़ी में एक लेख पढ़ा था। जिस में यू.के और यूरोप के रहने वालों बल्कि सारी दुनिया की कौमों को संयुक्त रूप से संबोधित करके उन्हें इस तरफ़ दावत दी थी कि अगर वह अपने रब्ब, अपने निर्माता की ओर नहीं लौटेंगे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ठंडी छाया तले इकट्ठा न होंगे तो एक बहुत ही महान विनाश उनके लिए तय हो चुका है जो क़यामत का नमूना होगी।"

(ख़ुत्बाते नासिर, भाग 1 पृष्ठ 930)

हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने शांति और सुरक्षा के बारे में तीसरे विश्वव्यापी युद्ध के बारे में चेतावनी देते हुए जो लेख आप ने पढ़ा इस में आप फरमाते हैं।

"आदरणीय सज्जनो ! मानवता इस समय एक भयानक विनाश के कगार पर खड़ी है। इस सन्दर्भ में मैं आप के लिए तथा अपने समस्त

भाइयों के लिए एक महत्त्वपूर्ण सन्देश लाया हूं। अवसर की अनुकूलता की दृष्टि से मैं इसे संक्षिप्त रूप में वर्णन करने का प्रयास करूंगा।

मेरा यह सन्देश मानवता के लिए शान्ति और मैत्री का सन्देश है तथा मैं आशा रखता हूं कि आप मेरी इन संक्षिप्त बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे, तथा फिर एक पक्षपातरहित हृदय एवं विशाल बुद्धि के साथ उन पर विचार करेंगे।"

आप ने फरमाया " हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां दो विश्वव्यापी युद्धों की भविष्यवाणी फरमाई थी जो पूरी हो चुकी है वहीं आप ने तीसरी विश्वव्यापी युद्ध की भी ख़बर दी थी। हूज़ूर अलैहिस्सालम ने फरमाया:

"हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक तृतीय महायुद्ध की भी सूचना दी है जो पहले दोनों महायुद्धों से अधिक विनाशकारी होगा। दोनों विरोधी गुट इस प्रकार सहसा टकराएंगे कि प्रत्येक व्यक्ति हतप्रभ रह जाएगा, आकाश से मृत्यु और विनाश की वर्षा होगी तथा भयंकर विभीषिकाएं पृथ्वी को अपनी लपेट में ले लेंगी, नवीन सभ्यता का महान दुर्ग पृथ्वी पर आ गिरेगा। दोनों युद्धरत गुट अर्थात् रूस तथा उसके सहयोगी, अमरीका और उसके सहयोगी दोनों गुट तबाह हो जाएंगे, उनकी शक्ति टुकड़े-टुकड़े हो जाएगी, उनकी सभ्यता एवं संस्कृति तथा उनकी व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी, शेष रह जाने वाले लोग चकित होकर हतप्रभ रह जाएंगे।

रूस के निवासी अपेक्षाकृत इस विनाश से शीघ्र मुक्ति पाएंगे। यह भविष्यवाणी अत्यन्त स्पष्ट रूप से की गई है कि इस देश की जनसंख्या पुन: शीघ्र ही बढ़ जाएगी और वह अपने स्रष्टा की ओर ध्यान देगी और उनमें बड़ी तीव्र गति से इस्लाम फैलेगा और वह जाति जो पृथ्वी से ख़ुदा का नाम तथा आकाश से उसका अस्तित्व मिटाने की शेखियां बघार रही है, उसी जाति को अपनी पथभ्रष्टता का ज्ञान हो जाएगा तथा वह इस्लाम में प्रवेश करके ख़ुदा तआला के एकेश्वरवाद पर दृढ़ता से स्थापित हो जाएगी।"

(ख़ुत्बाते नासिर जिल्द 1 पृष्ठ 930-935)

इस के बाद हुज़ूर रहमहुल्लाह ने फरमाया कि यह तीसरी विश्वव्यापी जंग की भविष्यवाणी टल भी सकती है अगर इंसान अपने रब्ब की तरफ लौटे और तौब: करे। हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल- ख़ामिस रहमहुल्लाह तआला फरमाते हैं:

"यह भी स्मरण रहे कि इस्लाम की विजय तथा इस्लामी प्रभात के उदय होने के लक्षण प्रकट हो रहे हैं यद्यपि अभी धुंधले हैं परन्तु अब भी उनको देखा जा सकता है। इस्लाम का सूर्य अपनी पूर्ण आभा एवं चमक के साथ उदय होगा तथा विश्व को प्रकाशमान करेगा, किन्तु इससे पूर्व कि यह सब कुछ घटित हो आवश्यक है कि विश्व एक ऐसे विश्वव्यापी विनाश से गुज़रे, एक ऐसा रक्तरंजित विनाश जो मानव जाति को झंझोड़ कर रख देगा। परन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि यह एक भयावह भविष्यवाणी है। भयावह भविष्यवाणी प्रायश्चित तथा क्षमायाचना करने से स्थगित भी की जा सकती है अपितु टल भी सकती हैं। यदि मनुष्य अपने प्रतिपालक की ओर झुके, प्रायश्चित करे तथा अपने आचरण ठीक कर ले तो वह अब भी ख़ुदा के प्रकोप से बच सकता है। यदि वह धन-सम्पत्ति तथा शक्ति और श्रेष्ठता के झूठे ख़ुदाओं की उपासना को त्याग दे और अपने प्रतिपालक से सच्चा संबंध स्थापित करे, दुराचारों से पृथक हो जाए, वह ख़ुदा तथा मनुष्यों के प्रति कर्त्तव्यों एवं अधिकारों को पूरा करे तथा मानव जाति का वास्तविक हितैषी बन जाए, किन्तु उसकी निर्भरता तो उन जातियों पर है जो इस समय शक्ति, धन तथा जातीय श्रेष्ठता के नशे में मस्त हैं कि क्या वे इस मस्ती को त्याग कर आध्यात्मिक आनन्द तथा हर्ष के अभिलाषी हैं अथवा नहीं ? यदि संसार ने सांसारिक मस्तियां तथा अश्लील बातें न त्यागीं तो फिर यह भयावह भविष्यवाणियां अवश्य पूरी होंगी तथा संसार की कोई शक्ति और कोई कृत्रिम ख़ुदा संसार को कथित भयंकर विनाश से बचा न सकेगा।

अत: स्वयं पर तथा अपनी सन्तानों पर दया करें तथा कृपालु और दयालु ख़ुदा की पुकार को सुनें। अल्लाह तआला आप पर दया करे और सच्चाई को स्वीकार करने तथा उससे लाभान्वित होने का सामर्थ्य प्रदान करे।"

(ख़ुत्बाते नासिर जिल्द 1 पृष्ठ 930-935)

जमाअत अहमदिया के चौथे इमाम हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब ने संसार में शान्ति की स्थापना के लिए और तीसरी विश्वव्यापी जंग से संसार को बचाने के बारे में यह नसहीत फरमाई:

" जमाअत अहमदिया का कर्तव्य है कि वह हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा से दुनिया की राजनीति को अवगत कराए और जिस देश में भी अहमदी बसते हैं वह एक जिहाद शुरू कर दें। उन्हें बताएं कि आपका अंतिम विश्लेषण हमें बताता है कि आपके सभी जोखिमों का आधार स्वार्थ और ना इंसाफी पर आधारित है। दुनिया के राष्ट्रों के बीच जो चाहें नए समझौते कर लें जिस प्रकार के नए नक्शे बनाने चाहते हैं बना लें और उन्हें उभारें लेकिन जब तक इस्लामी न्याय की तरफ वापस नहीं आएंगे ....जब तक कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण में आश्रय नहीं लेंगे, जिन्हें दुनिया भर में दया के रूप में भेजा गया था इस लिए केवल और एकमात्र आप की शिक्षा ही मानव जाति के लिए शांति प्रदान कर सकती है। बाकी की सारी बातें व्यर्थ और झूठी बातें हैं, राजनीति के झूठ हैं, कूटनीति के दंगे हैं, इस के अतिरिक्त उन के पास कुछ भी नहीं है। इसलिए विश्व शान्ति की स्थापना के लिए केवल आज जमाअत अहमदिया ही है जिस ने सही तरीके पर एक विश्व व्यापी जिहाद की नींव डालनी है। इसलिए, मैं आपको इस बात की तरफ ध्यान दिलाता हूं कि दुनिया में द्वेष के ख़िलाफ जिहाद शुरू करें और दुनिया से ज़ुल्म को नष्ट करने के लिए जिहाद करें। राजनीति को इंसाफ से अवगत कराने के लिए जिहाद शुरू करें। "

(ख़ुत्बा जुम्अ: 16 नवम्बर 1990 ई स्थान मस्जिद फज़ल लंदन)

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ दुनिया भर में शांति और दुनिया को तीसरी सार्वभौमिक युद्ध की भयानक तबाहियों से बचाने के लिए केवल अल्लाह तआला के लिए संलग्न हैं। एक ओर जहां आप अपने उपदेशों और भाषणों के द्वारा दुनिया को इन तबाहियों से अवगत कह रहे हैं जो मानवता को निगल जाने के लिए एक भयानक अजगर की शक्ल में मुंह फाड़े खड़ी हैं वहीं दुनिया भर के देशों में दौरा कर के दुनिया के दूरदराज़ क्षेत्रों में इस्लाम की शांतिपूर्ण शिक्षा प्रस्तुत कर रहे हैं ताकि किसी तरह से दुनिया को तीसरे विश्व युद्ध के भयानक विनाश से बचाया जा सके।

हुज़ूर अनवर बार बार इस बात की ओर ध्यान दिला रहे हैं कि अगर दुनिया ने इस ओर ध्यान न दिया तो तीसरा विश्व युद्ध छिड़ जाने की संभावना है क्योंकि वर्तमान युग की स्थिति इस प्रकार हैं मानो सारी दुनिया बमों के ढेर पर खड़ी है दुनिया भर में यात्रा करके सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जो मूल्यवान भाषण फरमाए उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जाता है:

(1) एक संबोधन हुज़ूर अनवर ने ब्रिटिश संसद के हाउस ऑफ कॉमन्स में 22 अक्तूबर 2008 ई में इरशाद फरमाया।

(2) एक संबोधन हुज़ूर अनवर ने 2012 में जर्मनी में एक सैन्य मुख्यालय में फरमाया था।

(3) एक सम्बोधन वाशिंगटन, संयुक्त राज्य अमेरिका के केपेटिल हिल में 2012 में फरमाया।

(4) एक संबोधन हुज़ूर ने लंदन में नौवें पीस संगोष्ठी में इरशाद फ़रमाया।

(5) पांचवां ख़िताब हुज़ूर अनवर ने दिसंबर 2012 में बीलजयम में यूरोपियन संसद सदस्यों और अन्य बुद्धिजीवियों के सामने पेश किया जिस में 30 देशों के सदस्य शामिल थे।

(6) इसी तरह एक भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने हमबरग जर्मनी की मस्जिद बैयतुल रशीद में इरशाद फ़रमाया था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने विश्व व्यापी शान्ति की स्थापना के लिए संसार के निम्नलिखित महान नेताओं और धार्मिक नेताओं को पत्र भी लिखे हैं।

(1) Holiness Pope Benedict the XVI

(2)Prime Minister of Israel

(3) President of the Islamic Republic of Iran

(4) President of the United States of America

(5) Prime Minister of Canada

(6)Custodian of the Two Holy Places the King of the Kingdom of Saudi Arabia

(7) Premier of the State Council of the People's Republic of China

(8) Prime Minister of the United Kingdom

(9)The Chancellor of Germany

(10) President of the French Republic

(11)Her Majesty the Queen of the United Kingdom and Commonwealth Realms

(12) The Supreme Leader of the Islamic Republic of Iran

मानवता को तीसरे सार्वभौमिक युद्ध के विनाश से बचाने के लिए शांति कांनफ्रेंसज़

शांति के इन्हीं प्रयासों में एक शांति सम्मेलन है जो हर साल जमाअत अहमदिया ब्रिटेन की ओर से ताहिर हल बैयतुल फुतूह लंदन में आयोजित किया जाता है। इस शांति कांनफ्रेसज़ में विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित मर्द तथा महिलाओं और विभिन्न सांसद, लंदन शहर के मेयर, सरकारी मंत्री, विभिन्न देशों के राजदूत और समाज के विभिन्न वर्गों से संबंधित अतिथि जमाअत अहमदिया के निमंत्रण पर तशरीफ़ लाते हैं और शांति स्थापना के लिए जमाअत की कोशिशों पर श्रद्धांजलि देते हैं इन कांनफ्रेसज़ का मुख्य बिंदु सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का ख़िताब होता है जिसमें आप इस्लामी शिक्षा और विश्व स्थिति के विश्लेषण कर विश्व में शांति की स्थापना के लिए उपयोगी सलाह देते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ग़ुलामी और आप के प्रतिनिधित्व में आपके पवित्र ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रहिल अज़ीज़ धर्म के नाम पर तलवार लेने के विचार को दूर करने के लिए ज्ञान की मशाल अपने हाथों में लिए ख़ुदा तआला के समर्थन तथा सहायता के साथ बहुत सफलता के साथ क़ुरआन और हदीस की शिक्षाओं और आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पवित्र आदर्श के प्रकाश में दुनिया भर में इस्लाम के शांति के संदेश के प्रकाशन के वास्तविक जिहाद में व्यस्त हैं।

ब्रिटिश दारुल उलूम हो या अमेरिका के कैपिटल हिल या बैलजियम में स्थित यूरोपीय संसद या कोबल्स जर्मनी का सैन्य मुख्यालय या अफ्रीका के विभिन्न देशों या ऑस्ट्रेलिया प्रधानमंत्री, सिंगापुर या न्यूजीलैंड या फिजी या जापान स्वंय जा-जा कर वहां के प्रमुख बुद्धिजीवियों और विभिन्न धर्मों के नेताओं को सामने बैठाकर और विभिन्न देशों के रेडियो, टी. वी और अख़बारों के प्रतिनिधियों के साथ साक्षात्कार में बड़ी हिम्मत और बहादुरी के साथ ज्ञान और उच्च नसीहत के द्वारा जिहाद के बारे में मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों, के झूठे विचारों को बता कर के, क़ुरआन की सच्ची अवधारणा को परिभाषित करके, क़ुरआन के सच्चे और स्पष्ट और सीधे और शांति और सुरक्षा की शिक्षाओं को प्रस्तुत कर रहे हैं। और शांति चाहने वाले को यह स्वीकार करना पड़ता है कि इस्लाम हरगिज़ आतंकवाद की शिक्षा नहीं देता बल्कि यह साक्षात शांति का धर्म है और यही वह रास्ता है जिस पर चल कर दुनिया से सभी प्रकार के क्षेत्रीय और जातीय और धार्मिक पूर्वाग्रहों और नफरतों को समाप्त कर के वास्तविक शांति की स्थापना संभव है।

इस विषय पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के संबोधन और दुनिया की बड़ी ताकतों और कुछ अन्य महत्वपूर्ण देशों और धार्मिक नेताओं के नाम ख़त एक महत्वपूर्ण और सुंदर पुस्तक World Crisis and Pathway to Peace में प्रकाशित किया गया है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह ने अपनी ख़िलाफ़त की शुरुआत से ही इस ओर विशेष ध्यान फ़रमाया और की बार ख़ुत्बों और भाषणों में अपनों और ग़ैरों के सामने इस्लाम की शांति की शिक्षा और जिहाद की वास्तविकता को उजागर किया है और जमाअत के दोस्तों को भी इस ओर ध्यान दिलाया कि इस्लाम की सुरक्षा के संदेश को दुनिया में फैलाएं। इसलिए हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला के नेतृत्व में सार्वभौमिक जमाअत अहमदिया सच्चे दिल से मानव जाति की पवित्र सहानुभूति के जोश से विश्व शांति के लिए संघर्ष में व्यस्त है।

हम अहमदियों का कर्तव्य है कि हम अपने इमाम के अनुकरण में इस महान अभियान में भर पूर हिस्सा लें और न केवल इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को लागू करें, बल्कि ग़ैर-मुस्लिमों को इस्लाम की शांतिपूर्ण सीमाओं में आने के लिए भी आमंत्रित करें ताकि पृथ्वी से सभी प्रकार के अत्याचार और अन्याय नष्ट हो जाऐं और संसार शांति से भर जाए।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

बुशरा इकबाल पत्नी

स्वर्गीय डाक्टर मिर्ज़ा मुहम्मद इक़बाल साहिब क़ादियान

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

अताउल हई पुत्र मुनीर परवेज़

जमाअत अहमदिया लोधीपुर शाहजहांपुर यू.पी

होमियोपैथी के द्वारा हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे की महान सेवाएं

फलाहुद्दीन क़मर, मुरब्बी सिलसिला, कादियान

पाठकों! ख़ुदा तआला ने मनुष्य को अनुकूलित समय में बनाया है यानी उसकी सृष्टि में संतुलन और अनुपात रखा है और उसे एक स्वस्थ शरीर को आकार देने के लिए निर्देश और मार्गदर्शन भी दिए हैं। लेकिन व्यक्ति अपनी सीमा से बढ़ने का कारण कभी इस महान नेअमत को खो देता है, परन्तु ख़ुदा तआला दयालु है और इस ने मानव स्वास्थ्य की देखभाल के साधन भी पैदा किए हैं है। जैसा कि अल्लाह तआला कुरआन में फरमाता है:

وَ اِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ (अश्शुअरा: 81) और जब मैं बीमार हो जाता हूं, तो वह मुझे ठीक करता है इसी तरह, हदीस शरीफ में, لِكُلِّ دَاءٍ دَوَاءٌ اِلَّا الْمَوتِ يع अर्थात हर बीमारी के लिए एक दवा है।

हदीस में आता है हज़रत इमाम शाफी फरमाते हैं कि اَلْعِلْمُ عِلْمَانِ عِلْمُ الْاَبْدَانِ وَعِلْمُ الْاَدْيَانِ अर्थात ज्ञान केवल दो ही हैं बदन का ज्ञान यानी चिकित्सा ज्ञान और धर्म यानी धर्मों का ज्ञान। इस युग में सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा इन दोनों ज्ञानों का दरिया तेज़ी से बह रहा है। सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जहां दुनिया को धर्म के ज्ञान से समृद्ध किया वहीं आप के आध्यात्मिक पुत्र और चतुर्थ ख़लीफा ने होम्योपैथी के द्वारा मानव जाति की बहुत अधिक सेवा की । आज विनीत आप की होमियोपैथी के द्वारा मानव जाति की सेवा के बारे में कुछ वर्णन करेगा।

माता की इच्छा और उस को पूरा करना

आपकी माता की हार्दिक इच्छा थी कि आप डॉक्टर बनें । इस बात का उल्लेख करते हुए, आप रहमहुल्लाह तआला फरमाते हैं: "मेरी मां मुझे डॉक्टर बनाना चाहती थीं हर बार मुझे कहती रहती थीं कि डाक्टर बनो और पढ़ाई लिखाई कर।"

जैसा कि हज़रत साहिबज़ादा साहिब ने खुद वर्णन किया है कि आप अपने स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया करते थे। पाठ्य पुस्तकें पढ़ कर कामयाबी हासिल करते हुए शिक्षा की मंज़िलें तय तो करते रहे मगर यह सफलता नियमित मेडिकल कॉलेज में प्रवेश की गुणवत्ता पर पूरी न उतरती थी इसलिए आप ने अपने शैक्षिक समय में उस ओर रुख ही नहीं किया। सुन्नतुल्लाह है कि अल्लाह तआला अपने प्यारों की इच्छाओं को अगर पूरा नहीं फरमाता तो वह उनकी इच्छाओं को स्वीकृत दुआओं में बदल देता है और अपनी विशेष हिकमतों के तहत किसी और उच्च रंग में स्वीकार करता है। हजरत उम्मे ताहिर दुआ करने वाली भी थीं और आप की दुआएं स्वीकार भी होती थीं। अल्लाह तआला ने स्वर्गीय की दुआओं को किस रूप में स्वीकार किया, इस का वर्णन फरमाते हुए हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला फरमाते हैं।

"अल्लाह तआला ने मुझे इस प्रकार होमियोपैथी डाक्टर बना दिया। सारी दुनिया की सेवा कर रहा हूं। किताब लिखी है और लोगों को दवाइयां भिजवाता हूं तो मेरी अम्मी की इच्छा भी पूरी हो गई और मुझे भी सेवा करने का अवसर मिला। अगर मैं डॉक्टर था, तो यह जो वर्तमान काम मेरे ज़िम्मे है यह मुश्किल हो गया होता।" (अलफज़ल 29 जून 2001 ई)

हुज़ूर के द्वारा हौम्योपैथी की उन्नति

ख़िलाफत से पहले ही होम्योपैथी और उसे के द्वारा मुफ्त मानवता की सेवा की भावना आप में भरपूर थी। 1960 के लगभग आप ने घर से दवाएं देना शुरू कीं । फिर 1968 में वक्फ जदीद में मुफ्त होम्योपैथी औषधि का शुभारंभ फरमाया और रोगियों के इलाज करते रहे। आप ने 23 मार्च 1994 से m.t.a पर होम्योपैथी कक्षाओं का शुभारंभ फरमाया और महान विस्तार के साथ विभिन्न रोगों और औषधीय स्वभाव और ठीक होनी की अद्भुत घटनाओं का वर्णन किया। लगभग 170 किक्षाओं की रिकॉर्डिंग के बाद उन्हें किताब के रूप में इलाज बिलमिसल अर्थात होम्योपैथी के नाम से प्रकाशित किया गया। इस के अब तक कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

हुज़ूर ने यह तहरीक भी फरमाई कि बहुत अधिक संख्या में मुफ्त होम्योपैथी डिस्पेंसरियों को स्थापित किया जाना चाहिए जहां से नि: शुल्क इलाज किया जाए और जमाअत के लोगों को इस से सूचित किया जाए। अत: ब्रिटेन सहित दुनिया भर में कई होम्योपैथी सेन्टर स्थापित हो चुके हैं जहां अहमदी और ग़ैर अहमदी दवाइयां प्राप्त करते हैं हुज़ूर के व्याख्यान और पुस्तक के कारण घर घर में छोटे होम्योपैथ बन गए हैं जो सामान्य रोगों के प्रारंभिक इलाज करने में सक्षम हैं और बहुत विशेषज्ञ होम्योपैथी भी हुज़ूर के अनुभवों और महानता को स्वीकार करते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक बार इल्हाम हुआ عِنْدِیْ مُعَالِجَاتٌ और 18 अक्टूबर 1902 को हज़रत अम्मा जान ने सपने में देखा कि शेख रहमतुल्लाह महोदय द्वारा एक सन्दूक दवाइयों से भरा आया है। जिस में डिबियां है शीशियां हैं।

यह रोया हुज़ूर के समय दौरान, होमियोपैथी को बढ़ावा देने और दवाइयों पर आधारित डिब्बे सारी दुनिया में भिजवाने से पूरी हो गई।

(अल-फज़ल 16 अगस्त 1999, पेज 2, दैनिक फज़ल सय्यदना ताहिर नंबर, 27 दिसम्बर 2003, पेज 35)

निस्संदेह इस तरीके इलाज का आविष्कारक जर्मन डॉक्टर हानीमेन सैमुअल था लेकिन उसे एक सार्वभौमिक और संगठित जमाअत द्वारा दुनिया भर में लोकप्रिय बनाने और असंख्य मरीज़ों का इलाज करने की अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली स्थापित करने का श्रेय हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह के सिर पर है आप का पवित्र दिल प्रत्येक क्षण दुखी मानवता के लिए तड़पता और चिन्ता में रहता था।

(दैनिक अल:फज़ल सय्यदना ताहिर नंबर, 27 दिसम्बर 2003, पेज 22)

हुज़ूर का होम्योपैथी पर उपकार

होम्योपैथी के साथ-साथ सही होम्योपैथी के नियम भी भूल रहे थे और होम्योपैथ ख़ुद उन उचित उसूलों से या तो अपरिचित हो चुके थे या जानबूझकर उन्हें भुला चुके थे। हालांकि होम्योपैथी की बुनियाद जिन सिद्धांतों पर है उन्हें अपनाए बिना इस इलाज के तरीका से पूरा लाभ उठाया ही नहीं जा सकता। हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला का एक बड़ा एहसान यह भी है कि होम्योपैथी के उचित दर्शन की ओर ध्यान दिलाया और होमिपीथियों को सही तरीके के अनुसार अभ्यास करने की ओर ध्यान दिलाया और केवल पैसे या व्यापार के लिए होम्योपैथी की शक्ल बिगाड़ने से मना फरमाया। होमियोपैथी में इलाज करते हुए आप ने आप ने होम्योपैथी के व्यक्ति नियमों की तरफ ध्यान केंद्रित किया। प्रत्येक रोगी के लक्षण अलग होते हैं और अलग अलग रोगियों का निरीक्षण करके दवाई देनी चाहिए और रोग के नाम पर दवा देने के स्थान पर रोगी के लक्षणों को देख कर दवाई देनी चाहिए।

अत: हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फरमाया:"होम्योपैथी में कोई भी टकसाली नुस्ख़ा नहीं चल सकता। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कुछ देर के लिए बीमारी को भूल कर रोगी को देखकर उसके व्यक्तिगत प्रतीकों के मद्देनजर रखें। गर्मी और सर्दी की दवाएं दिमाग़ में अलग अलग रखनी चाहिएँ। इस का बहुत लाभ होता है। जैसे अगर मरीज की तबियत गर्म है तो उसे शांत दवाएं देने से लाभ के बजाय नुकसान होता है। मरीज़ के स्वभाव के रुख को अच्छी तरह ध्यान में रखना चाहिए कि कौन सा ऐसा रोगी है जिस को गर्मी नुकसान पहुंचाती है। या ठंड से परेशानी बढ़ जाती है। अगर ये बातें ध्यान में हों तो मरीज से बात करते हुए रोगी से हटकर रोगी की ओर ध्यान दिया जा सकता है। (दैनिक अल-फज़ल 15अप्रैल 1995)

अहमदी जगत के दिल में आप ने होम्योपैथी तरीके इलाज से एक मुहब्बत और प्यार पैदा कर दिया और घर घर, बस्ती बस्ती नगर नगर होम्योपैथी डिस्पेंसरी खुलवाने में मुख्य भूमिका अदा की। M.T.A पर आप के लेकचरज़ सुनकर और इसी तरह सन 1996 ई में आप की पुस्तक '' होम्योपैथी तरीके इलाज बिल-मिसल 'छप कर सामने आई इस से लाभ उठाते हुए घर घर होम्योपैथी डॉक्टर पैदा हुए। मानव जाति इस विधि से इलाज से फायदा पहुंचाने में आपकी कोशिश बेनज़ीर है। एक बहुत बड़े महान रूहानी नेता होने के आधार पर शारीरिक चिकित्सा और इलाज में भी आप को पूर्णता प्राप्त हुई क्योंकि अल्लाह तआला के समर्थन और सहायता आप के साथ हो गई। सैंकड़ों लाइलाज रोगियों ने आप की दवा और दुआ से नया जीवन पाया।

हुज़ूर की होम्योपैथी कक्षाएं और लेकचरज़

हुज़ूर का मानव जाति पर यह बहुत बड़ा एहसान है कि आप ने होम्योपैथी कार्यशैली से इलाज को प्रत्येक तक पहुंचाया और एम टी.ए. पर दुनिया भर में होम्योपैथी इलाज की इस कार्यशैली को मशहूर किया और कुछ वर्षों में हजारों लोग इस ज्ञान के विशेषज्ञ हो गए और सारी दुनिया में लोग इस इलाज की कार्यशैली से लाभान्वित होने लगे। आप रहमहुल्लाह ने 23 मार्च 1994 ई को होम्योपैथी कक्षाओं का शुभारंभ किया। इन कक्षाओं में आप ने होम्योपैथी लेक्चर देते हुए विभिन्न रोगों के इलाज के लिए दवाएं वर्णन कीं और रोगों के निदान और प्रस्तावित औषधीय के उपयोग को भी पूरी स्पष्टता से वर्णन किया। बाद में आप की यह शिक्षा दुनिया के कोने-कोने में फैल गई। जिससे होम्योपैथी इलाज एक आम आदमी की पहुंच में आ गया। अब यह किताब पूरी दुनिया में हर चिकित्सक का मार्गदर्शन कर रही है। इसका अंग्रेज़ी अनुवाद भी Homoeopathy like cures like 'के नाम से उपलब्ध है।

आदरणीय सय्यद साजिद अहमद साहब ऑफ अमेरिका होम्योपैथी इस सर्व साधारण लाभ के बारे में तहरीर फरमाते हैं: '' इन दर्सों के कारण हम वर्षों से अपने घर में कई मौसमी बीमारियों का मुकाबला मामूली कीमत की दवाइयों से कर रहे हैं। एक बार एक डॉक्टर ने मुझे एक ऑपरेशन का अनुमान हज़ारों अमेरिकी डॉलर बताया। मैंने सोचा कि पहले होम्योपैथी को आज़माना चाहिए। जो कुछ मुझे हुज़ूर के व्याख्यानों और पुस्तक से समझ आई उसके अनुसार दवा शुरू की और दुआ की और जब कुछ समय बाद ही डॉक्टर ने नाक का निरीक्षण किया तो बहुत हैरान हुआ कि सब पालिपस (Polyps) समाप्त हो चुके थे। इसे इस बात से अधिक आश्चर्य हुआ कि दवा कुछ डॉलर से अधिक न थी।

(खुल्फाए अहमदियत की तहरीकात और उस के शीरीं समरात, पृष्ठ 469 से 469)

चिकित्सक के रूप में हुज़ूर की चिकित्सीय सेवाएं

हुज़ूर एक सफल और उत्कृष्ट होम्योपैथ थे। ज़ाहिर में हुज़ूर रहमहुल्लाह के पास कोई डिग्री नहीं थी और न ही किसी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया था। लेकिन ख़ुदा तआला ने अपने विशेष फज़ल से हुज़ूर को इस ज्ञान से सम्मानित और एक सफल चिकित्सक के रूप में इस दुनिया के सामने पेश किया।

होम्योपैथी के मैदान में सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह की सेवाए सार्वभौमिक थीं। आप की बरकतों की सीमा किसी एक देश और मुल्क तक न थी। बल्कि दुनिया के सारे उल्लेखनीय देशों से हर किस्म के रोगों के सताए हुए रोगियों ने आपसे सम्पर्क किया और अल्लाह तआला के फज़ल के साथ शफा पाई। आप के हाथ पर शफ़ा पाने के अनगिनत अद्भुत और ईमान वर्धक घटनाएं प्रकट हुईं। ऐसे चमत्कार ढंग से ठीक होने वालों की घटनाएं दुनिया के पूर्व तथा पश्चिम में बहुत अधिक संख्या में मौजूद हैं।

हुज़ूर के अपने ऊपर होम्योपैथी के अनुभव

आप ने पहले अपनी ज़ात पर कई सफल प्रयोग किए और अपने घरवालों और अपने अज़ीज़ों का भी सफल इलाज किया। बाद में आम जनता को नुस्खे देने शुरू किए। धीरे धीरे आप एक सफल होम्योपैथ बन गए। अब विनीत आप की अपनी ज़ात मुबारक पर जो सफल प्रयोग किए हैं, उनके कुछ उदाहरण पेश करेगा।

आप लिखते हैं कि " भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान बनने के प्रारंभिक वर्षों की बात है कि मुझे बार-बार सिरदर्द का दौरा पड़ा करते थे जिसे अंग्रेजी में माईग्रीन (Migraine) और हिन्दी में माइग्रेन का दर्द कहते हैं। यह बहुत गंभीर दर्द होता है जिसके साथ मतली, उल्टी और तंत्रिका की बेचैनी बहुत होती है। कई कई दिन इस बीमारी से पीड़ित रहता था। इलाज के रूप में एस्पिरिन उपयोग करता जिसकी वजह से पेट की झिल्ली और गुर्दे पर बुरा असर पड़ता और दिल की धड़कन भी तेज़ हो जाती। मेरे स्वर्गीय पिता एक एलापेथिक दवा सेनडोल (Sandole) अपने पास रखा करते थे जिसकी उन्हें ख़ुद भी जरूरत पड़ती थी। भारत के विभाजन के बाद यह दवा पाकिस्तान में नहीं मिलती थी बल्कि कलकत्ता से मंगावानी पड़ती थी। इससे मुझे जल्द आराम आ जाता। ''

आप फरमाते हैं: " एक बार जब मुझे सिरदर्द की गंभीर तकलीफ हुई तो स्वर्गीय अब्बा जान के पास सेनडोल मौजूद न था, इसलिए आप ने इसके बजाय कोई होम्योपैथिक दवा भिजवा दी। मुझे उस समय होम्योपैथी पर कोई विश्वास नहीं था लेकिन तबर्रुक के तौर पर मैंने यह दवा खाली। अचानक मुझे एहसास हुआ कि दर्द बिल्कुल समाप्त हो गया है और मैं बेवजह आंखें बंद किए लेटा हूँ। इससे पहले कभी किसी दवा का मुझे ऐसा असामान्य और इतना तेज़ असर नहीं हुआ था। ''

(पुस्तक होम्योपैथी इलाज बिलमिसल प्रस्तावना)

इसी तरह एक अन्य स्थान पर आप फरमाते हैं:

" मुझे 1960 या 1962 में पहली बार अपनडेक्स का हमला हुआ था। मैंने यह दवा (Arnica) खाई तो अल्लाह तआला की कृपा से ठीक हो गया। इसके बाद कभी कभी परेशानी होती थी जो इन्हीं दवाइयों से ठीक हो जाती थी। आपरेशन की ज़रूरत न आती। इसके अलावा 1972 ई में यात्रा के दौरान बीमारी का तीखा हमला हुआ। मैं कार भी चला रहा था, बच्चे भी साथ थे, बुख़ार उतर नहीं रहा था, मैं लगातार दवा खाता रहा और चार सौ मील कराची यात्रा की जब डॉक्टर ने ऑपरेशन किया तो वह यह देखकर हैरान रह गया कि अपनडेकस फट चुका था और इसमें जगह जगह छेद थे और मवाद बह बह कर सूख चुका था। उस के विश्लेषण के अनुसार ऐसे मरीज़ को कुछ घंटों के भीतर भीतर मर जाना चाहिए था लेकिन इस नुस्खा ने ख़तरनाक अवस्था में भी मुझे संभाले रखा। ''

(पुस्तक होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पेज 118)

हुज़ूर के वर्णन किए हुए साधारण जनता के चमत्कारी ढंग से ठीक होने की घटनाएं

हुज़ूर ने अपनी मुबारक हस्ती पर और अपने प्रिय लोगों पर सफल अनुभव करने के बाद साधारण जनता का इलाज चिकित्सा शुरू की।

लाखों रोगी अल्लाह तआला की कृपा से ठीक हुए।

* मिर्गी के इलाज का ज़िक्र करते हुए हुज़ूर ने फरमाया:

" दैनिक इलाज में यह बात याद रखें कि वे रोगी जो गहरी और पुरानी बीमारियों से पीड़ित हैं जैसे अस्थमा, मिर्गी आदि। उन्हें सरसरी नुस्ख़ा देना सही नहीं बल्कि समय निकालकर ऐसे रोगियों का साक्षात्कार लेना चाहिए और बीमारी के बारे में सभी बातें पूछकर उनके मिज़ाज की दवा तलाश करनी चाहिए ...... कुछ दवाएं ऐसी हैं जिनका मिर्गी रोग में उल्लेख नहीं मिलता। जैसे एक मरीज़ को सिर में शोर अनुभव होता था और शोर से चोट सी लगती थी जो उसे वहशत होती थी और नींद नहीं आती थी। सिर और दिल शिकंजे में जकड़ा हुआ अनुभव होता। इसे मैंने कैक्टस दी, तो उस की कायी पलट गई और आराम से सोने लगा और उसे मिर्गी से छुटकारा मिल गया जबकि कैक्टस का मिर्गी की औषधीयों में कोई ज़िक्र नहीं है। "

(होम्योपैथी इलाज बिलमिसल आधुनिक संस्करण जिल्द1 और 2, प्रस्तावना पेज: xi)

***गुर्दे के दर्द के इलाज का ज़िक्र करते हुए फरमाया कि**

"ज़िद्दी बीमारियों में ज़रूरी रोगियों को सामने बिठा कर अच्छी तरह से जांच की जानी चाहिए। ऐसा एक अनुभव लगभग एक किडनी रोगी था। मैं इस बीमारी के सख्त हमले को तुरंत रोकने के लिए एकूनाईट (Aconitum) और बेलाडोना (Belladonna) का प्रसिद्ध नुस्खा देता रहा लेकिन उसे कोई लाभ नहीं हुआ। तब मुझे ख्याल आया कि मैं उसे वह दवाएं दे रहा हूँ जो तब काम आती हैं जब मरीज़ को गर्मी नुकसान पहुंचाए और सर्दी से लाभ हो। इस रोगी को ठंडा स्नान करने से बहुत कष्ट होता था। मैंने इस बात को मद्देनजर रखकर जब उसे मैग्नीशिया फ़ास (Mag Phos) और कोलोस्नथ (Colocynthis) मिला कर दीं तो वह देखते ही देखते ठीक हो गया। " (होम्योपैथी इलाज बिलमिसल आधुनिक संस्करण जल्द 1 व 2, प्रस्तालना पेज: XII)

***गेगरीन जैसे घातक रोग से ठीक होने की घटना का वर्णन करते हुए फरमाया**

" एक युवक का हाथ मशीन में आकर कुचला गया, उसके घाव ठीक नहीं हुए और बिगड़ कर गेगरीन में बदल गए। डाक्टर ने निराश हो कर अंगूठे को काटने और फिर बाज़ू को काटने का सुझाव दिया। मैंने इसके लिए आर्सेनिक का सुझाव दिया और सप्ताह 10 दिनों के बाद इसे दोहराने के लिए कहा। कुछ हफ्ते बाद उन्होंने लिखा कि दर्द है, लेकिन स्याही धीरे-धीरे लाली में बदल जाती है। कुछ ही समय में अल्लाह तआला की कृपा से ठीक हो गया और हाथ कटवाना तो दूर, हाथ की उंगलियां कटवाने की नौबत भी नहीं आई। " (वही, पेज 96)

***कैंसर जैसे ख़तरनाक रोग से चमत्कारिक ढंग से ठीक होने का वर्णन करते हुए फरमाया**

" अगर प्रोस्टेट गलैंडज़, गुर्दे और मूत्राशय के रोगों में आरसनीक के लक्षण मौजूद हों लेकिन आरसीनक (Arsenic) अकेले पर्याप्त न हो तो फास्फोरस उसकी सहायक दवा साबित होती है। यह भी मेरे लिए एक साथ दोनों को देने के लिए उपयोगी है। यह नुस्ख़ा कैंसर में बहुत ज्यादा लाभदायक होता है। यह नुस्खा एक ऐसे मरीज़ भी इस्तेमाल किया गया जिसके बारे में डॉक्टरों का फैसला था कि एक सप्ताह से अधिक नहीं बचेगा लेकिन इसे इस दौरान इन दवाओं से बहुत लाभ हुआ और ख़ुदा तआला की कृपा से बाद में वह एक साल के अधिक बिना कष्ट के जीवित रहा। " (वही 97)

पोलियो के इलाज के बारे में बताया, एक बच्चे का पैर पोलियो के हमला के कारण टेड़े हो गए थे उसे सल्फर (Sulpher) और बराईटा कारबी (Baryta Carb) दी गईं जिनसे इतना स्पष्ट लाभ हुआ कि वह अब दिनचर्या का जीवन गुज़ार रहा है हालांकि पूर्ण स्वास्थ्य नहीं है लेकिन चलता फिरता है हालांकि डॉक्टरों ने कहा था कि उम्र बीतने के साथ यह तकलीफ बढ़ जाएगी। " (वही, पेज 131)

फैफड़ों में सूराखों के बंद होने के चमत्कारी इलाज के बारे में बताया, " एक महिला के फेफड़ों में टी.बी के परिणाम में छेद हो गए थे और डॉक्टरों के पास उनका कोई इलाज नहीं था जब होमियोपैथिक तरीके से उन का इलाज Merc Sol 200 और Kali Carb 30 से किया गया तो कुछ महीनों में वह बिल्कुल स्वस्थ हो गईं। जब अस्पताल के डॉक्टरों ने एक्स रे लिया तो इन छेदों का नाम तथा निशान नहीं था। वह यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि यह वही मरीज़ा हैं।

(वही, पेज 164)

दमे की चिंताजनक हालत इलाज का जिक्र करते हुए कहा कि

" एक बार अस्थमा का एक मरीज इसी स्थिति से (छाती बलग़म से भरी) चिंतित था और स्थिति बहुत चिंता की थी। मैंने उन्हें कार्बो वेग दिया, जिसने तुरंत उस के शरीर में कुछ शक्ति उत्पन्न की। बलग़म बाहर निकली थी और सांस जो बन्द हो रही थी जारी हो गई। उसके बाद अस्थमा का इलाज किया गया और रोगी ठीक हो गया। कारबवोज बहुत नाज़ुक क्षणों में काम आने वाली दवा है और अस्थमा के रोग में विशेष संकेत है कि ठंडा पसीना आता है और रोगी का शरीर भीग जाता है लेकिन वह हवा की मांग करता है तो कई बार उसके चेहरे पर तेजी से पंखा झलना पड़ता है। "

(वही, पृष्ठ 242 से 243)

जबड़े की हड्डी के कैंसर के इलाज के विषय में बताया: "एक मरीज़ा इस बीमारी से गंभीर संकट में थी एक तरफ चेहरा सख्त सूजा हुआ था, आंखों मैं दबाव भी था और दर्द इतना अधिक था कि चीख़ें निकल जाती थीं। लंबे समय तक एक अच्छे अस्पताल में दाख़िल रहीं। परन्तु डॉक्टर कुछ न कर सके। और आखिरकार उन्हें लाइलाज करार देकर अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। मैंने उन्हें सल्फर सी.एम की एक ख़ुराक दी जो उनके दर्द को कम कर देता था। दो हफ्तों में, सूजन काफी कम हो गई थी। फिर मैंने उन्हें साइलेशिया सी.एम की एक ख़ुराक दी, जिस से ठीक होने की रफ्तार जो थी वह बहाल हो गई। थोड़े समय के बाद, सल्फर फिर से दी तो रोग का नामतक वहां नहीं था। इस बात को कई साल बीत चुके हैं और आज तक वह बिल्कुल ठीक-ठाक और स्वस्थ हैं। "

(वही, पृष्ठ 427 से 428)

अपनडकस का चमत्कारी इलाज: " मैंने आयर्स टीनिकस (Iris Tenax) को आरनिका (Arnica) और बराईयोनिया (Bryonia) के साथ 200 शक्ति में मिला कर अपनडकस की तकलीफों में बार बार इस्तेमाल किया है और यह बेहद उपयोगी नुस्ख़ा साबित हुआ है और अद्भुत प्रभाव दिखाता है। अगर कसाव के लक्षण स्पष्ट हों तो ब्रायोनिया के स्थान पर बेलाडोना का उपयोग किया जाना चाहिए। अक्सर अपनडेक्स के कारण, एक बहुत खतरनाक स्थिति पैदा होती है और यह समस्या को जटिल बनाती है ये तीनों दवाएं मिल कर इस स्थिति पर काबू पा लेती हैं। " (वही, पृष्ठ 480 से 481)

नासूर के इलाज के बारे में कहा:

"आंत या कहीं और घाव या नासूर पाए जाएं तो यह जानना चाहिए कि रोगी के लक्षण कहीं पोटेशियम के नमक से तो नहीं मिलती। एक रोगी के पैर पर बहुत गहरा और पुराना नासूर था। जब मैंने इसे Kali Iodatum दी तो देखते ही देखते वह नासूर ग़ायब हो गया। इससे पहले, वह सर्वश्रेष्ठ सैन्य अस्पताल में भर्ती होकर इलाज करवा चुका था। मैंने केवल इसलिए दवा चुनी कि इस के बाकी निशान पोटेशियम से मिलते थे। " (होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पष्ठ 486)

***शराब की आदत से छुटकारा:** " एक व्यक्ति शराब का आदी था।

वह शराब के नशे के इस हद तक आदी हो चुके थे कि इसके बिना एक घंटा भी नहीं रह सकते थे। लेकिन चाहते थे कि इस लअनत से छुटकारा पाए लेकिन कभी किसी इलाज से उन्हें लाभ नहीं हुआ। मैंने सल्फ़ियूरक एसिड की एक बूंद पानी के गिलास में मिला कर वह उन्हें पानी के साथ दिन में तीन बार उपयोग करने की सलाह दी। दो महीने बाद, मुझे उनके बारे में जानकारी मिली कि वे पूरी तरह से ठीक हो गए थे। वास्तव में कुछ दिनों के भीतर ही उनकी काया पलट गई थी और उन्हें शराब से घृणा हो गई थी। " (होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पृष्ठ 797)

ऐसे रोगी जिन्हें ला इलाज करार दिया गया था हुज़ूर के इलाज से ठीक हो गए: नीचे विनीत कुछ ऐसे रोगियों की घटनाएं वर्णन करेगा जिन्हें डॉक्टरों ने लाइलाज घोषित किया था या सिर्फ ऑपरेशन ही इलाज बताया था ऐसे मरीज़ों के ठीक होने की कुछ घटनाएं पाठकों के लिए नीचे दी जा रही हैं।

हुज़ूर varicose veins की घटना बयान फरमाते हैं ॉ

" कभी कभी पैरों में नीली दर्दें फूल कर जाला सा बना देती हैं जिन्हें Varicose Veins कहते हैं। महिलाओं में यह समस्या अधिक होती है नाड़ियों में, यह ख़ून गाड़ा हो कर जम जाता है। ऐलोपैथी में तो केवल ऑपरेशन द्वारा ही इसका इलाज किया जाता है लेकिन होम्योपैथी में कई ऐसी दवाएं हैं जिनके द्वारा नसों का सुधार हो सकता है। सल्फ़र इन्हीं औषधीयों में से एक है। "

(पुस्तक होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पृष्ठ 801 से 802)

* हुज़ूर लीवर के कैंसर की घटना बयान फरमाते हैं: " कुछ ऐसे रोगी अनुभव में आए हैं जिन्हें डॉक्टरों ने निश्चित रूप से लीवर का कैंसर बताया था और हर प्रकार की रेडिएशन और औषधीय उपयोग के बाद लाइलाज घोषित कर दिया। जब यह समझा कि अब यह दो-तीन दिन के मेहमान हैं तो उन्हें अस्पताल से छुट्टी देकर घर भिजवा दिया गया। उसी समय जब इसी नुस्ख़ा (सल्फर, 30 ब्रायोनिया + 200 कार्डवोस मरियानस मदर टिंकचर) से उनका इलाज किया गया तो तीन दिन में मरने के बजाय तीन दिन में स्वास्थ्य के आसार लौटे। "

(पुस्तक होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पृष्ठ 190)

यह दोस्त आदरणीय उस्मान अहमद साहब वक्फे जदीद के कार्यकर्ता थे। और 14 साल के लिए जीवित रहे।

* हुज़ूर एक व्यक्ति के सूरज ग्रहण से अंधा होने की घटना बयान फ़रमाते हैं:

" सूर्यग्रहण के दौरान सूरज को देखा जाए तो आंख का पर्दा रेटीना बहुत प्रभावित होता है जिस का पता तुरंत नहीं होता। कई वर्षों में धीरे धीरे प्रभाव दिखाई देते हैं । स्थान स्थान पर काले धब्बे दिखने लगते हैं। कभी दाहिनी आंख की नज़र कम हो जाती है और कभी बाईं की। मरीज़ धीरे-धीरे बिल्कुल अंधा हो जाता है और ऐसे अंधापन का कोई इलाज पता नहीं। आजकल किरणों के द्वारा इलाज की कोशिश की जाती है। लेकिन यह एक अस्थायी लाभ है। इस मामले में मर्ककाल एक चोटी की दवाई है। एक लाख ताकत की दो ख़ुराकें महीना के अंतराल से अल्लाह के फज़ल से बहुत लाभ पहुंचाती है।

(पुस्तक होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पृष्ठ 556)

हुज़ूर की कोशिशें ऐसे रोगों के बारे में जिनका इलाज अभी ऐलोपैथी में नहीं:

चिकित्सा की दुनिया में यह समस्या विशेष रूप से डॉक्टर साहिबों का ध्यान केंद्रित करती है कि नई से नई बीमारियों के रोकथाम के लिए दवाइयों के इलाज के नए तरीकों को कैसे उपयोग में लाया जा सकता है। इसलिए, वर्तमान काल की कुछ रोगों का जो हूज़ूर ने होम्योपैथी इलाज तलाश किया उन में से कुछ के उदाहरण निम्नानुसार हैं:

(1) एडस का इलाज:

वर्तमान युग में एडस की बीमारी दुनिया के लिए बहुत बड़ा खतरा बनकर सामने आई है जिसका कोई ऐलोपैथी इलाज तलाश नहीं हो सका। लेकिन हुज़ूर ने MTA पर इस रोग के बारे में होम्योपैथी नुस्ख़े की घोषणा की और इस रोग के लिए सलेशिया (CM Silicea) चुनी और आप ने वे उदाहरण भी पेश किए जिन्होंने इस नुस्ख़ें को इस्तेमाल किया और अल्लाह तआला ने अपने फज़ल से एडस की जान लेने वाली बीमारी से नजात दी।

इस चमत्कारी चिकित्सा इलाज के बारे में आप रहमहुल्लाह ने फरमाया: " एडस को भी कैंसर जैसी जान लेवा बीमारी के रूप में माना जाता है। विभिन्न देशों में मेरे निगरानी में सेलेशिया सी एम के तजुर्बे हुए हैं। कई रोगियों में सेलेशिया ने अद्भुत प्रभाव दिखाया है।

(होम्योपैथी इलाज बिलमिसल, पृष्ठ 257)

(2) परमाणु तबाहियों से बचाव:

दुनिया इस समय परमाणु विनाश के डर से अस्थिर और परेशान है जिस समय पाकिस्तान और भारत ने परमाणु विस्फोट किए तो उपमहाद्वीप के लोगों के लिए विशेष कर के और दुनिया के लिए आमतौर पर हुज़ूर ने परमाणु विस्फोट के प्रभाव से बचने के लिए दवा चुनी थी। भविष्य में भी इन दवाओं का इस्तेमाल इस तरह की चिंता पर किया जा सकता है। अत: आप ने कारसीनोस्न (Carcinosin CM) अर्थात एक लाख शक्ति और रीडियम बरोमाईड (Radium Bromide CM) अर्थात एक लाख शक्ति में चुनी थीं। इन दवाइयों को बहुत अधिक प्रयोग करवाया गया।

(3) एल्यूमीनियम के ज़हर से बचाव:

प्राचीनकाल से ही एल्यूमीनियम के बर्तन का उपयोग जारी है। लेकिन वास्तविकता यह है कि एल्यूमीनियम का ज़हर मानव शरीर में धीरे धीरे शामिल होता चला जाता है और कई गहरे रोग पैदा हो जाते हैं। हुज़ूर ने मानवता पर यह एहसान भी किया कि इन बर्तनों के बुरे प्रभावों से अवगत कराया और यह निर्देश दिया कि इन बर्तनों का उपयोग छोड़ दें। आप ने इस के ज़हर के बुरे प्रभाव से बचने के लिए एल्यूमीनियम (Alumina 1000) एक हज़ार शक्ति में उपयोग करने का सुझाव दिया।

(दैनिक अल-फज़ल 27 दिसंबर 2003, पृष्ठ 66)

(4) **इसी तरह कैंसर की गिलटियों का इलाज है** कि " कैंसर की गलटियाँ जो त्वचा में प्रकट हो जाएं तो कोनियम उनमें बहुत उपयोगी है, क्योंकि शुरुआत ही में कैंसर पहचाना जाता है ऐसे उभारों में अगर घाव बनने लगे तो शुद्ध शहद का लेप करने से भी काफी लाभ होता है। यह बात चिकित्सा अनुसंधान से भी साबित हो चुकी है कि जहां कोई मरहम काम नहीं करता वहाँ शहद का लेप अद्भुत लाभ पहुंचाता है। '

' (अल-फज़ल अंतरराष्ट्रीय 31 मार्च 2000, पेज 10)

आदरणीय मौलवी अब्दुल करीम ख़ालिद साहिब घाना ब्लड कैंसर से पीड़ित हो गए। उनके इलाज के सिलसिले में हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला की सेवा में दुआ के लिए लिखा गया। आप ने उनकी मेडिकल रिपोर्ट मांगी और लंदन में अहमदी डॉक्टरों का एक बोर्ड बना कर उन्हें रिपोर्ट की रोशनी में सलाह देने का उपदेश दिया। इस बीमारी का एलोपैथी का इलाज उपलब्ध न होने की स्थिति में हुज़ूर ने बोर्ड की सलाह से होम्योपैथी कार्यशैली से इलाज करवाने का उपदेश फरमाया और दुआ भी की। उस समय स्थिति यह थी कि हर सप्ताह उन्हें ताजा ख़ून दिया जाता था और बलड स्तर बहुत कम था आप इकरा में एक उच्च तकनीक अस्पताल में दाख़िल थे जहां प्रोफ़ेसरों की देखरेख में इलाज हो रहा था लेकिन लाभ न होता था। अब वह उनका होमियोपैथी इलाज शुरू हुआ हुज़ूर की विशेष और दर्द भरी दुआओं की बरकत से ख़ुदा तआला

के फज़ल से मौलवी साहिब की बीमारी चमत्कारी तौर से ठीक होने के चिन्ह शुरू हुए। कुछ हफ्तों के भीतर, आप स्वस्थ हो गए अन्त में डाक्टरों ने टेस्ट लिए और उन्हें स्वस्थ्य होने के बाद घर भेज दिया। इस अवसर पर (हकीकतुल वह्यी, पृष्ठ 480 से 481 में सूचीबद्ध) उस " अब्दुल करीम " की याद ताज़ा हो जाती है जिसे हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में पागल कुत्ते ने काटा था। उसे डॉक्टरों के 'Nothing can be done for Abdul Karim' 'कहने के बावजूद ख़ुदा तआला ने हज़रत मसीह मौऊद की दुआओं की बरकत से मौत से मुक्ति देकर एक नए जीवन से सम्मानित किया गया था।

अत: आदरणीय मौलवी अब्दुल करीम ख़ालिद साहब स्वस्थ होकर वापस बराँग आफू पहुंचे और बतौर मुबल्लिग़ अपनी ज़िम्मेदारियां अदा करनी शुरू कीं।

(किताब सीरत तथा सवानेह हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद अध्याय " एक सफल होम्योपैथ ")

हुज़ूर के अनुभवों की रोशनी में होम्योपैथी में ज़हनी, नैतिक और आध्यात्मिक बीमारियों का इलाज:

हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला ने अपनी होम्योपैथी किताब में विभिन्न मौकों पर बात को बड़ी स्पष्टता के साथ पेश किया कि कुछ बीमारियां जो ज़ाहिरी तौर पर नैतिक और आध्यात्मिक मालूम पड़ती हैं वह दरअसल शारीरिक बीमारियां हैं और उन का इलाज होमियोपैथी दवाइयों से किया किया जा सकता है, नमूने के रूप में उनमें से केवल कुछ एक पाठकों के लिए प्रस्तुत हैं।

* एक होमियोपैथी दवाइ जिसका नाम लेक्सस है इस के उल्लेख में फरमाया: “लैचेस के रोगी ख़तरनाक किस्म के संदेह तथा शंकाओं में पीड़ित होते हैं। शुरुआत में वह सोचने लगते हैं कि सभी लोग उनके खिलाफ बातें कर रहे हैं या उनके खाने-पीने में कुछ मिला दिया गया। वह अपने करीबी रिश्तेदारों पर भी संदेह कर ते हैं। बाद में यह लक्षण बढ़ते चले जाते हैं। ऐसे रोगी को लेक्सस देना चाहिए। "

(पुस्तक होम्योपैथी, आधुनिक संस्करण शामिल, जिल्द 1 व 2, संपादन और वृद्धि के साथ, प्रकाशित इस्लामाबाद यू. के पष्ठ 547) इसी दवा के बारे में आप बताते हैं: “एक मरीज़ा मेरे पास लाई गई थी जिसे चोरी की आदत थी। पूछने पर कहती थी कि अल्लाह का हुक्म है इस लिए करती हूँ ऐसे मरीज का इलाज लेक्सस से करना चाहिए। जो ख़ुदा के हुक्म पर ही इस की अवज्ञा करें।.... धार्मिक रुझान असामान्य तीव्रता धारण कर लेते हैं। यह तीव्रता भई लेक्सस से संबंध रखती है लेकिन उसका सबसे ख़तरनाक संकेत यह है कि उनके दिल में कई बार यह विचार उठता है कि अल्लाह तआला का हुक्म है कि वह किसी को कत्ल करें ..... ऐसे रोगी कई बार सचमुच कत्ल भी कर देते हैं या कत्ल करने की कोशिश ज़रूर करते हैं। ” (वही पेज 548)

फिर कहते हैं: " डॉक्टर केंट का मानना है कि यह दवा किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित नहीं है, लेकिन यह दुनिया भर में हर जगह उपयोगी है। लेक्सस ज़हर में जो बुराई और तेज़ी पाई जाती है वह दुनिया के सभी दुष्ट इंसानों और बिगड़े हुए मिज़ाजों में पाई जाती अर्थात गंभीर ईर्ष्या और शरारत, दंगे आदि की प्रवृत्ति। " (वह पेज 540)

* एक अन्य होमियोपैथी दवा सल्फर के बारे में हुज़ूर फरमाते हैं:

सल्फर के रोगी को दार्शनिक बनने का बहुत शौक होता है और मिज़ाज से दार्शनिक हो जाते हैं। यदि यह शोक जुनून की सीमा तक बढ़ जाए है, तो ऊंची ताकत में सल्फर की एक दो ख़ुराकों से बहुत फर्क पढ़ जाता है। उनमें से कुछ आर्थिक दार्शनिक होते हैं जो हर समय योजना बनाते हैं। लेकिन व्यावहारिक रूप से कुछ भी नहीं .... बहुत धीमे होते हैं किसी भी काम में उन का दिल नहीं लगता अपनी सोचों में ही कैद रहते हैं उनका इलाज भी सल्फर की एक उच्च शक्ति है। (पेज 784)

* हुज़ूर एक महत्वपूर्ण दवा कैमोमीला देने के लिए रोगी की पहचान और इसमें पाए जाने वाले लक्षण का वर्णन करते हुए कहते हैं: " कीमोथेरेपी के मिज़ाज का यह स्थायी स्वभाव है कि रोगियों के मन में उदारता की कमी होती हे। तबीयत में किसी प्रकार की कंजूसी पाई जाती है। किसी दूसरे की परवाह नहीं करते। न किसी की असुविधा अनुभव करते हैं न किसी की ज़रूरत का ध्यान रखते हैं लेकिन आपके मामले में बहुत सारे भावुक होते हैं। हर समय अपनी ज़ात से चिमटे होत हैं और सिर्फ अपना निजी हित सामने रखते हैं । दूसरों पर अचानक ग़ुस्सा आना भी इसी स्वभाव का हिस्सा है। "

(पुस्तक होम्योपैथी, आधुनिक संस्करण शामिल, जिल्द 1 व 2, संपादन और वृद्धि के साथ, प्रकाशित किया इस्लामाबाद यू. के, पेज 271)

एक और मुख्य दवा नेट्रम मयूर के बारे में फरमाते हैं " नेट्रम मयूर का रोगी एक काल्पनिक बीमारी से पीड़ित होता है। कुछ बूढ़ी उम्र की महिलाएं भी ऐसी बीमारी से पीड़ित होती हैं। अगर मुहब्बत का इलाज दवा से संभव है तो ऐसी महिलाओं का इलाज नेट्रम मयूर से हो सकता है। "

(पुस्तक होम्योपैथी, आधुनिक संस्करण शामिल, जिल्द 1 व 2, संपादन और वृद्धि के साथ, प्रकाशित किया इस्लामाबाद यू.के, पेज 619)

अन्तिम बात

हज़ूर रहमहुल्लाह तआला ने होम्योपैथी इलाज को जमाअत में लागू करवाकर और उसके द्वारा मुफ्त इलाज साधारण करके मानवता पर बहुत बड़ा एहसान फ़रमाया है और निस्संदेह लाखों अहमदी अब दैनिक तकलीफों का इलाज ख़ुद ही होम्योपैथी दवाओं के द्वारा कर लेते हैं। इस तरह न केवल उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है बल्कि डाक्टरों की भारी फीस, अस्पतालों के चकर और दवाइयों के भारी खर्च की बचत भी होती है और अपने अपने माहौल में वे होम्योपैथी के द्वारा दूसरों का भी मुफ्त इलाज करके मानवता की सेवा में व्यस्त रहते हैं।

हमारे वर्तमान इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ डॉक्टरों, रिसर्च करने वालों और रोगियों को नसीहत करते हुए फरमाते हैं

हर अहमदी डॉक्टर और रिसर्च करने वाले को अपने रोगियों के लिए इस मानवीय भावना से काम करना चाहिए। अल्लाह तआला की कृपा से हमारे डॉक्टर (रबवा अस्पतालों में भी अफ्रीका में भी) अपने नुस्ख़ों के ऊपर “हुवश्शाफी” लिखते हैं। अगर हर डॉक्टर दुनिया में हर जगह इस तरह लिखता हो और साथ उसका अनुवाद भी लिख दे तो यह दूसरों पर एक अच्छा प्रभाव डालने वाली बात होगी और अल्लाह तआला की कृपा को अवशोषित करने के लिए भी होगी और इसकी वजह से अल्लाह तआला उनके हाथ में शफ़ा भी बढ़ा देगा। इसी तरह रोगी हैं उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि अमुक डॉक्टर मेरा इलाज करेगा तो ठीक हो जाऊंगा अमुक अस्पताल सबसे अच्छा है वहाँ जाऊँगा तो ठीक हो जाऊंगा। ठीक है सुविधाओं से लाभ उठाना चाहिए लेकिन पूरा भरोसा उन पर नहीं हो सकता । बल्कि हमेशा यह सोचना चाहिए कि शाफी ख़ुदा तआला की हस्ती है।”

(ख़ुत्बा जुम्अ: 19 दिसंबर 2008, स्थान मस्जिद बैयतुल फुतूह मोडरन लंदन)

अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला हमें हुज़ूर के उपदेश की रोशनी में होमियोपैथी इलाज के तरीके को समझने की तौफीक दे और अल्लाह तआला सारे अहमदियों को शारीरिक और आध्यात्मिक हर लिहाज से भरपूर स्वास्थ्य प्रदान करे और सभी रोगियों को ठीक कर दे और दुखी मानवता की भरपूर और मकबूल सेवा की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।

☆ ☆ ☆

विश्व शान्ति के लिए हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्ला तआला की विश्वव्यापी कोशिशें

(अब्दुल अलीम आफताब, नूरुल इस्लाम कादियान)

आज दुनिया एक ऐसे भयंकर दौर से गुजर रही है जहां मुठभेड़, बेचैनी और शरारत एक बाढ़ की तरह बढ़ती चली जा रही है। कुछ देशों में जनता आपस में ही लड़ाई और जंग कर रहे हैं और कुछ देशों में जनता सरकार से जूझ रही हैं या उसके विपरीत अधिकारी अपनी जनता के विरुद्ध खड़े हैं। दहशत गर्द तत्व अपने विशिष्ट हितों को प्राप्त करने के लिए अराजकता और उपद्रव की आग भड़का रहे है और निर्दोष महिलाओं, बच्चों और बूढ़ों की अंधाधुंध हत्या कर रहे हैं। कुछ देशों में सियासी पार्टियां अपने हितों को प्राप्त करने के लिए आपस में मिल कर अपने देश की भलाई के लिए काम करने के बजाय एक दूसरे से लड़ रहे हैं। कुछ सरकारें और देश दूसरे देशों के प्राकृतिक संसाधनों के निरन्तर लालचों से देख रहे हैं दुनिया की बड़ी ताकतें अपनी श्रेष्ठता और वर्चस्व को कायम रखने के लिए अपने सभी प्रयास कर रही हैं और अपने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कोई रणनीति और हथकंडा उपयोग करने से परहेज नहीं करतीं।

वैश्विक वित्तीय संकट के कारण लगभग हर सप्ताह नए और पहले से बड़े जोखिम सम्मुख आ रहे हैं। इन दिनों को द्वितीय विश्व युद्ध से कुछ पहले के ज़माने से समानता करार दिया जा रहा है और स्पष्ट नज़र आ रहा है कि घटनाएं दुनिया को असामान्य तेज़ी से एक भयानक तीसरे विश्व युद्ध की दिशा में आगे धकेल रही हैं इस बात को बहुत तीव्रता से अनुभव किया जा रहा है कि हालात तेज़ी से नियंत्रण से बाहर हो रहे हैं और लोग किसी ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं जो सामने आए और ऐसा ठोस और गंभीर मार्गदर्शन करे जो विश्वसनीय हो जिस की बातें मन दिमाग़ दोनो पर समान प्रभावी हों और वह उन्हें एक किसी ऐसे पथ के मौजूद होने की उम्मीद दिलाए जो शांति का रास्ता हो। मौजूदा दौर में एक परमाणु युद्ध के परिणाम इतने भयानक और विनाशकारी होंगे कि उन का सही अर्थों में कल्पना किया जाना संभव नहीं है।

ऐसे हालात में एक शांति का राजदूत जो मानवता के लिए बहुत अधिक हमदर्दी अपने अंदर रखता है इस दुखियारी मानवता को बचाने के लिए अकेला सामने आता है जिस का नूरानी चेहरा किसी को भी एक नज़र में अपना दीवाना बना दे। जिस की आवाज़ धीमी, लेकिन दिल तथा दिमाग़ पर जादू का असर करने वाली हो। जिस की नज़र बिजली की चमक अपने अन्दर समाए हुए हो और जिसकी एक मुस्कान पाने के बदले में हर कोई अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तय्यार हो। जिसका साथ और हर कदम अन्धेरों की अथाह अंधेरे से निकाल कर सही प्रकाश की ओर ले आता हो। मेरा अभिप्राय अन्तिम युग के मसीह हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी के पांचवें ख़लीफा हजरत मिर्ज़ा मस्रूर अहमद ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह बेनस्रेहिल अज़ीज़ हैं, जिन्होंने दुनिया में शांति की स्थापना के लिए अपने आका हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं की रोशनी और आख़री युग के मसीह हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी के मार्गदर्शन में ऐसे आयोजन और ठोस कदम उठाए हैं जिस का उदाहरण समकालीन में नहीं मिलता।

आप ने ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस चुन जाने के बाद दुनिया में शांति के बारे में इस्लाम का संदेश पहुंचाने के लिए प्रिंट मीडिया और डिजिटल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया द्वारा एक अभियान शुरू किया। आप के मार्गदर्शन में जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के चैनलों ने ऐसी कोशिशें जारी रखी हुई हैं जिनसे इस्लाम की सच्ची और शांतिप्रिय शिक्षा का प्रचार हो रहा है। अहमदी मुसलमान मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दुनिया में शांति के संदेश लाखों बल्कि करोड़ों विज्ञापन के द्वारा वितरण में लगे हुए हैं। धर्मों के मध्य धार्मिक सद्भाव और शांति की कांफ्रेंसें आयोजित की जा रही हैं। कुरआन की प्रदर्शनियां लगाई जा रही हैं ताकि कुरआन का पवित्र संदेश दुनिया तक पहुंच सके इस मुबारक प्रयत्न से दुनिया भर की मीडिया में प्रोत्साहन प्राप्त हो रहा है और यह साबित हो रहा है कि इस्लाम शांति, देशभक्ति और मानवता की सेवा का धर्म है।

आप ने शांति की स्थापना की इस कोशिश में दुनिया के हर वर्ग प्रत्येक स्तर तक अर्थात एक आम आदमी से लेकर दुनिया के बड़े बड़े पालसी बनाने वालों, सीनेटरों, पाल्टीशनज़, और शासकों को लक्ष्य किया। विनीत इस लेख में आपके द्वारा की गई कोशिशों में से कुछ पर प्रकाश डालने की कोशिश करेगा

संसदों में संबोधन

आप ने विश्व के कई संसदों में जैसे The British Parliament House Of Common ,

Military Headquarters Koblenz Germany
Capital Hill ,Washington D.C,USA,
Europion Parliament Brussels, Belgium ,
New Zealand Parliament,
Canadian Parliament

आदि कई जगह जाकर दुनिया में शांति की स्थापना के लिए भाषण दिए। विशेष कर के उनमें से कुछ का उल्लेख बतौर नमूना प्रस्तुत है।

The British Parliament House Of Common में सम्बोधन

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ब्रिटिश संसद The House of Common 2008 ई में "वैश्विक संकट इस्लामी दृष्टिकोण" पर संबोधन किया। आप फरमाते हैं कि:

"वास्तविक न्याय इस बात की मांग करता है कि उन लोगों की भावनाओं और धार्मिक रीति-रिवाजों का भी आदर किया जाए। यही वह उपाय है जिससे लोगों की मानसिक शान्ति को क़ायम रखा जा सकता है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि जब किसी व्यक्ति की मानसिक शान्ति को भंग किया जाता है तो उस समाज की मानसिक शान्ति भी प्रभावित होती है। ...... परन्तु धर्म के नाम पर यदि कोई ऐसी परम्पराएं हों जो दूसरों को हानि पहुंचाएं तथा राष्ट्रीय कानूनों के विपरीत हों तो ऐसी स्थिति में उस देश में कानून स्थापित करने वाले हरकत में आ सकते हैं क्योंकि यदि किसी धर्म में कोई अप्रिय परम्परा प्रचलित है तो यह परमेश्वर के किसी नबी की शिक्षा नहीं हो सकती। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति स्थापित करने के लिए यही मूल सिद्धान्त है।

कोई समाज , गिरोह या हुकूमत आप के धार्मिक कर्तव्यों को अदा करने में रोक बनती है और कल हालात आप के पक्ष में तबदील हो जाते हैं तो इस्लाम हमें यह शिक्षा देता है कि कभी भी अपने दिल में उन के

लिए द्वेष या नफरत न रखें। आप को कभी भी प्रतिशोध का ख़्याल नहीं आना चाहिए अपितु न्याय और समानता स्थापित करनी चाहिए। पवित्र क़ुर्आन का कथन है -

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के लिए मज़बूती से निगरानी करते हुए न्याय के समर्थन में साक्षी बन जाओ और किसी जाति की शत्रुता तुम्हें कदापि इस बात की ओर प्रेरित न करे कि तुम न्याय न करो। न्याय करो, यह तक़वा के सबसे अधिक निकट है और अल्लाह से डरो। जो तुम करते हो निस्सन्देह अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है।

(सूरह अलमाइदह आयत - 9)

फिर आप फरमाते हैं कि

"पवित्र क़ुर्आन ने विश्व-शान्ति स्थापित करने के लिए बड़े ही सुनहरे सिद्धान्त प्रस्तुत किए हैं। यह एक स्पष्ट वास्तविकता है कि लालसा शत्रुता को जन्म देती है। कभी यह सीमाओं का अतिक्रमण करने के रूप में प्रकट होती या फिर प्राकृतिक सम्पदाओं पर अधिकार करने के रूप में अथवा दूसरों पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए। और फिर यह शत्रुता अन्याय और अत्याचार की ओर ले जाती है। चाहे यह अत्याचार क्रूर निरंकुश शासकों की ओर से हो जो प्रजा के अधिकारों का हनन करते हैं तथा अपने व्यक्तिगत हितों के लिए अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करते हैं या फिर ये अत्याचार आक्रमणकारी सेना के द्वारा हों। प्राय: इन अत्याचारों के शिकार लोगों का चीत्कार और क्रोध बाह्य देशों को आवाज़ देता है।

बहरहाल इस्लाम के पैग़म्बर ने हमें निम्नलिखित सुनहरे सिद्धान्त सिखाए हैं कि अत्याचारी और पीड़ित दोनों की सहायता करो।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के एक सहाबी रज़ि. ने पूछा कि - अत्याचार से पीड़ित की सहायता करना तो समझ में आता है परन्तु एक अत्याचारी की सहायता वे किस प्रकार कर सकते हैं ? आपस. ने उत्तर दिया - उसके हाथ को अत्याचार से रोक कर। क्योंकि उसका अत्याचार में बढ़ जाना उसे परमेश्वर के अज़ाब का पात्र बनाएगा।

(सही बुख़ारी, हदीस संख्या - 6952)

अत: उस पर दया करते हुए उसे बचाने का प्रयत्न करना है। यह सिद्धान्त समाज के सब से छोटे स्तर से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी व्याप्त है। इस सन्दर्भ में पवित्र क़ुर्आन की आयत है -

यदि मोमिनों के दो गिरोह आपस में झगड़ पड़ें तो उन दोनों में संधि करा दो फिर यदि संधि हो जाने के पश्चात उन दोनों में से कोई एक दूसरे पर चढ़ाई करे तो सब मिल कर उस पर चढ़ाई करने वाले के विरुद्ध युद्ध करो यहां तक कि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए फिर यदि वह अल्लाह के आदेश की ओर लौट आए तो न्याय के साथ (उन दोनों लड़ने वालों) में संधि करा दो तथा न्याय को दृष्टिगत रखो। अल्लाह न्याय करने वालों को बहुत पसन्द करता है।

(अलहुजुरात आयत - 10)

आप फरमाते हैं "यद्यपि यह शिक्षा मुसलमानों से संबंधित है परन्तु फिर भी इस सिद्धान्त को अपनाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शान्ति की नींव रखी जा सकती है। अत: जब दो कौमों का मतभेद जंग का रूप धारण कर ले तो दूसरी क़ौमों को चाहिए कि वे उन्हें बातचीत और सयासी सम्पर्कों की तरफ लाने की कोशिश करें ताकि वह बातचीत की बुनियाद पर सुलह कर सकें परन्तु अगर एक पक्षा सुलह की शर्तों को स्वीकार करने से मना कर दे और जंग की आग भड़काए तो दूसरे देश उस को रोकने के लिए इकट्ठे हो जांए और उस से जंग करें। जब आक्रमण करने वाली क़ौम पराजित हो कर बातचीत करना चाहे तो तब सारे पक्ष एक ऐसे सुलह नामा के लिए कोशिश करें जिस के फल स्वरूप सुलह हो और स्थायी सुलह हो। ऐसी कठोर और अन्याय पूर्ण शर्तें नहीं होनी चाहिए जो किसी क़ौम के हाथ पैर बांध देने जैसी हों क्योंकि इन शर्तों से एक एसी बैचेनी पैदा होगी। जो बढ़ती फैलती जाएगी और अन्त में एक और युद्ध की तरफ ले जाएगी। अत: ऐसी अवस्था में जो हुकूमत दोनों पक्षों के मध्य सुलह की कोशिश करे तो उसे पूरी इमानदारी और निष्पक्ष हो कर काम करना चाहिए। अगर कोई पक्ष इस के विरुद्ध बोले तब भी यह निष्पक्षता स्थापित रहनी चाहिए। अत: इस अवस्था में न्याय करने वाले को कभी ग़ुस्सा को प्रकट करना या कोई प्रतिशोधात्मक कारवाई नहीं करनी चाहिए और न ही किसी रंग में कार्य करना चाहिए। प्रत्येक पक्ष को इस के जायज़ अधिकार मिलने चाहिए।

कैपिटल हिल वाशिंगटन डी सी
अमरीका में ख़िताब

27 जून 2012 को कैपिटल हिल वाशिंगटन में एक ऐतिहासिक घटना घटित हुई कि जमाअत अहमदिया के वर्तमान और पंचम ख़लीफ़ा ने अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों में सेनेटर्स, राजदूतों, व्हाइट हाउस और स्टेट डिपार्टमेन्ट स्टाफ़, एन.जी.ओज़ के अधिकारियों, धार्मिक नेताओं, प्रोफेसरों, नीति सलाहकारों, सरकारी अधिकारियों, डिप्लोमेटिक कोर (Corps) के सदस्यों, विचारकों, पेन्टागन के प्रतिनिधियों एवं मीडिया के संपादकों को शान्ति-पथ राष्ट्रों के मध्य न्यायपूर्ण संबंध विषय पर सम्बोधित किया।

आप फरमाते हैं "वास्तविकता यह है कि शान्ति और न्याय परस्पर अनिवार्य हैं। आप इन में से एक के अभाव में दूसरे को नहीं देख सकते। निश्चय ही यह ऐसा सिद्धान्त है जिसे समस्त बुद्धिमान लोग समझते हैं। जो लोग विश्व में अशान्ति फैलाने पर कटिबद्ध हैं उन्हें एक ओर रखते हुए कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि किसी समाज और देश यहां तक कि सम्पूर्ण विश्व में जहां न्याय होता हो वहां अव्यवस्था एवं शान्ति का अभाव हो सकता है तथापि हम देखते हैं कि विश्व के कई देशों में अशान्ति फैली हुई है। यह अशान्ति दोनों प्रकार से अर्थात देशों के आन्तरिक और बाह्य तौर पर भी विभिन्न राष्ट्रों के मध्य संबंधों की दृष्टि से दिखाई देती है।

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के पश्चात् कुछ राष्ट्रों के शासकों ने भविष्य में समस्त देशों के मध्य अच्छे और शान्तिपूर्ण संबंधों की इच्छा की तो विश्व-शान्ति की प्राप्ति के लिए लीग ऑफ़ नेशन्स (Leage of Nations) बनाई गई। उसका मुख्य उद्देश्य विश्व-शान्ति को यथावत् रखना था तथा भविष्य में युद्धों को रोकना था। दुर्भाग्यवश इस लीग के सिद्धान्त और जो प्रस्ताव पारित किए गए उनमें कुछ कमियां और दोष थे। इसलिए उन्होंने समस्त लोगों और समस्त देशों के अधिकारों की यथोचित रक्षा न की। परिणामस्वरूप जो असमानता पैदा हुई तो स्थायी शान्ति जारी न रह सकी। लीग के प्रयास विफल हो गए यह बात सीधे तौर पर द्वितीय विश्व युद्ध का कारण बनी।

जो भयंकर विनाश और बरबादी हुई उससे हम सब परिचित हैं जिसमें सम्पूर्ण विश्व के लगभग पचहत्तर मिलियन लोगों के प्राण नष्ट हुए जिनमें अधिकांश निर्दोष जनता थी। यह युद्ध विश्व की आंखें खोलने के लिए पर्याप्त होना चाहिए था। यह उन बुद्धिमत्तापूर्ण नीतियों को उन्नति देने का माध्यम होना चाहिए था जो कि समस्त दलों को न्याय पर आधारित उनके अनिवार्य अधिकार प्रदान करता। इस प्रकार विश्व में शान्ति स्थापित करने का माध्यम सिद्ध होता। उस समय विश्व की सरकारों ने किसी सीमा तक शान्ति क़ायम करने का प्रयत्न किया और संयुक्त राष्ट्र संघ (U.N.O.) की स्थापना की गई परन्तु यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र संघ के महान और महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पूरे नहीं किए जा सके और आज कुछ विशेष सरकारें स्पष्ट तौर पर ऐसे बयान देती हैं जिन से उनकी असफलता सिद्ध होती है।

न्याय पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय संबंध जो शान्ति स्थापित करने का एक माध्यम हों उनके संबंध में इस्लाम क्या कहता है ? पवित्र क़ुर्आन

में अल्लाह तआला ने यह स्पष्ट किया है कि यद्यपि हमारी जातियां और जातीय परिदृश्य हमारी पहचान का एक माध्यम हैं परन्तु वह किसी प्रकार की श्रेष्ठता के औचित्य का माध्यम नहीं हैं।

अत: पवित्र क़ुर्आन यह स्पष्ट करता है कि समस्त लोग समान हैं। इसके अतिरिक्त वह अन्तिम ख़ुत्बा (भाषण) जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दिया, उसमें आपस. ने समस्त मुसलमानों को नसीहत की कि सदैव स्मरण रखो कि किसी अरबी को किसी ग़ैर अरबी पर और न ही किसी ग़ैर अरबी को किसी अरबी पर कोई श्रेष्ठता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह शिक्षा दी कि एक गोरे को काले पर और न ही किसी काले को गोरे पर श्रेष्ठता है। अत: इस्लाम की यह एक स्पष्ट शिक्षा है कि समस्त जातियों और नस्लों के लोग बराबर हैं। यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि समस्त लोगों को बिना किसी भेदभाव अथवा द्वेष के समान अधिकार दिए जाने चाहिएं। यह एक बुनियादी और सुनहरी सिद्धान्त है जो विभिन्न गिरोहों और देशों के मध्य एकता और शान्ति की नींव डालता है।

बहरहाल आज हम देखते हैं कि शक्तिशाली और निर्बल देशों के मध्य एक फूट और खाई है। उदाहरणतया संयुक्त राष्ट्र संघ में हम देखते हैं कि विभिन्न देशों के मध्य अन्तर किया जाता है और इसी प्रकार विश्व सुरक्षा परिषद में कुछ स्थायी और कुछ अस्थायी सदस्य हैं। यह विभाजन फूट और अशान्ति का एक आन्तरिक माध्यम सिद्ध हुआ है। अत: हम निरन्तर इस असमानता के विरुद्ध प्रदर्शनों पर आधारित विभिन्न देशों की रिपोर्ट सुनते रहते हैं। इस्लाम समस्त मामलों में पूर्ण न्याय और समानता का पाठ पढ़ाता है और इस प्रकार हम पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह आयत - 3 में एक और निर्देश पाते हैं। इस आयत में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि न्याय की मांगों को पूर्णतया पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि उन लोगों से भी जिन्होंने घृणा और शत्रुता की समस्त सीमाओं को पार कर लिया हो

एक प्रश्न जो स्वाभाविक तौर पर पैदा होता है वह यह है कि इस्लाम किस प्रकार के न्याय की मांग करता है। सूरह अन्निसा आयत -126 में पवित्र क़ुर्आन वर्णन करता है कि यदि तुम्हें अपने स्वयं के विरुद्ध या अपने माता-पिता या अपने प्रियजनों के विरुद्ध भी गवाही देनी पड़े तो न्याय और सच्चाई को क़ायम रखने के लिए तुम्हें अवश्य ऐसा करना चाहिए।"

(ख़िताब हुज़ूर अनवर वैश्विक संकट और शांति पथ)

हालेंड पार्लियामेंट में ख़िताब

हुज़ूर अनवर फरमाते हैं:

"पवित्र क़ुर्आन की सूरह अन्नहल की आयत 127 में इस्लामी सरकारों को आदेश दिया गया है कि यदि उन पर कभी आक्रमण हो जाए तो वह केवल अपनी प्रतिरक्षा के तौर पर यथानुकूल उत्तर दें। अत: पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा बहुत स्पष्ट है कि दण्ड मूल अपराध के अनुसार हो न कि उस से अधिक।

सूरह अन्फ़ाल की आयत 62 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि यदि तुम्हारा शत्रु बुरी नीयत से तुम पर आक्रमण करने का इरादा रखता है परन्तु बाद में फिर उपेक्षा करते हुए सुलह का हाथ बढ़ाता है तो उसके प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार करते हुए परस्पर शान्तिपूर्ण मैत्री की ओर बढ़ो इस बात को न देखो कि उनकी नीयत कैसी है।

पवित्र क़ुर्आन की यह शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय अमन और सुरक्षा की स्थापना के लिए सुनहरी सिद्धान्त है। आज के विश्व में बहुत से उदाहरण मौजूद हैं जहां कुछ देशों ने केवल कल्पना पर आधारित किसी देश के काल्पनिक अत्याचारों के विरुद्ध आतंकवादी कार्य-प्रणाली ग्रहण कर ली। मालूम होता है कि मानो वे इस सिद्धान्त का पालन कर रहे हों कि It is better to destroy them, before they destroy us "शत्रु पर आक्रमण कर दो ऐसा न हो कि वह पहल कर दे।" इस्लाम की शिक्षा तो यह है कि शान्ति की स्थापना के किसी भी अवसर को नष्ट न किया जाए चाहे उसकी आशा बहुत ही काल्पनिक क्यों न हो। पवित्र क़ुर्आन की सूरह अलमाइदह की आयत-9 में अल्लाह तआला फ़रमाता है कि किसी क़ौम की शत्रुता तुम्हें इस बात पर न उकसाए कि तुम उस से न्याय न करो। इस्लाम सिखाता है कि परिस्थितियां चाहे कैसी ही प्रतिकूल हों न्याय और इन्साफ का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। युद्ध की स्थिति में भी न्याय और इन्साफ की स्थापना बहुत महत्त्वपूर्ण है तथा युद्ध के पश्चात् विजेता के लिए आवश्यक है कि वह न्याय से काम ले। और कभी भी अनुचित अत्याचार करने वाला न हो।

परन्तु आज हमें विश्व में सहनशीलता के ऐसे उच्च नैतिक मापदण्ड दिखाई नहीं देते, अपितु युद्ध की समाप्ति पर विजेता देश ऐसी पाबंदियां और प्रतिबंध देते हैं जो पराजित देश की उन्नति की संभावनाओं को सीमित करके उन क़ौमों की स्वतंत्रता और संप्रभुता को अवरुद्ध कर देते हैं। ऐसी कार्य-पद्धति अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में बिगाड़ का कारण है और उनका परिणाम असंतोष और नकारात्मक प्रभावों के अतिरिक्त और कुछ नहीं। वास्तविकता यह है कि स्थायी अमन तब तक स्थापित नहीं हो सकता जब तक समाज के प्रत्येक स्तर पर न्याय की स्थापना न हो जाए।

Peace Symposiums आयोजित

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की शांति के प्रयासों में एक peace symposium का आयोजन है जिस का आरम्भ आप ने साल 2004 ई में किया। ऐसे Symposiums न केवल ब्रिटेन, भारत बल्कि दुनिया के हर हिस्से में आयोजित किए जाते हैं, जहां जमाअत अहमदिया सार्वभौमिक की स्थापना हो चुकी है। इन कांफ्रेंसों में शांति और सद्भाव के विचार को बढ़ाने के लिए सभी वर्ग के लोग शामिल होते हैं। इन में से कुछ उदाहरण आपके सामने पेश हैं।

(1) हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ 24 मार्च 2012 को नौंवे वार्षिक शांति सम्मेलन आयोजित बैयतुल फुतूह मोर्डन में " परमाणु युद्ध के विनाशकारी परिणाम और सही न्याय की आवश्यकता पर" बोलते हुए फरमाते हैं:

"मुझे याद है कि कुछ साल पहले इसी हॉल में शांति सम्मेलन के दौरान मैंने एक भाषण में दुनिया में शांति के तरीके और साधन पर विस्तार से प्रकाश डाला था और मैंने यह भी उल्लेख किया था कि संयुक्त राष्ट्र को कैसे काम करना चाहिए। बाद में हमारे बहुत प्रिय दोस्त लार्ड ईरक एयूबरी ने कहा कि यह भाषण तो संयुक्त राष्ट्र में सुनाया जाना चाहिए था। यह उनका उच्च हौसला था कि उन्होंने उच्च हौंसला और प्यार से इस बात का इज़हार किया। बहरहाल यह कहना चाहता हूँ कि केवल तक़रीरें और भाषणों का कर लेना पर्याप्त नहीं और केवल इस बात से शांति नहीं हो सकता। दरअसल इस महत्त्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त करने की बुनियादी शर्त सभी मामलों में पूर्ण इंसाफ और न्याय है। कुरआन के सूर: नंबर 4 और आयत 136 हमें इस बारे में एक सुनहरा नियम और सबक बताती है।

इसमें बताया गया है कि न्याय की आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिएं चाहे आपको अपने ख़िलाफ, अपने माता-पिता के ख़िलाफ, अपने मित्रों और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ गवाही क्यों न देनी पड़े। यह वास्तविक न्याय है जिस में सामूहिक हितों के लिए निजी हितों का बलिदान कर दिया जाता।"

अगर हम इस सिद्धांत की समग्र समीक्षा करें तो हमें एहसास होगा कि अन्याय पूर्ण सुझाव मनवाने के तरीके जो धन और बलबूते के प्रभाव पर धारण किए जाते हैं छोड़ दिए जाने चाहिए। इसके बजाय प्रत्येक देश के प्रतिनिधि और राजदूतों को ईमानदारी के साथ और न्याय और समानता के

सिद्धांतों का समर्थन की इच्छा के साथ आगे आना चाहिए। हमें हर प्रकार के पूर्वाग्रहों और भेदभाव को पूर्णता मिटाना होगा क्योंकि शांति का यही एकमात्र रास्ता है। अगर हम संयुक्त राष्ट्र महासभा या सुरक्षा परिषद की समीक्षा करें तो अक्सर हम देखते हैं कि वहाँ किए गए भाषणों और जारी किए जाने वाले बयानों की तो बहुत प्रशंसा की जाती हैं और सराहना की जाती है लेकिन यह सराहना व्यर्थ है क्योंकि मूल निर्णय तो पहले से ही हो चुके होते हैं। अत: जहां निर्णय बड़ी शक्तियों के दबाओ और प्रभाव के अधीन और न्याय और वास्तविक हक सच्चेनिर्णयों के ख़िलाफ किए जांए तो एसी तकरीरें खोखली और अर्थहीन हैं और केवल दुनिया को धोखा देने के काम आती हैं

तो अगर बड़ी शक्तियों ने न्याय से काम न लिया और छोटे देशों की वंचित होने की भावना को समाप्त नहीं किया और उत्कृष्ट रणनीति न अपनाई तो स्थिति अंतत: हाथ से निकल जाएगी और फिर जो तबाही और बर्बादी होगी वह हमारी सोच और कल्पना से बढ़कर होगी बल्कि दुनिया के अधिकतर जो शांति के इच्छुक हैं वे भी इस तबाही की लपेट में आ जाएंगे। अत: मेरी हार्दिक इच्छा और आकांक्षा है कि बड़ी शक्तियों के नेता इस भयानक तथ्य को समझ जाएं और जो आक्रामक रणनीति अपनाने और अपनी महत्वाकांक्षाओं और लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ताकत के प्रयोग के स्थान पर ऐसी रणनीति अपनाने की कोशिश करें जिनसे न्याय को बढ़ावा दिया जाए और इसे सुनिश्चित करें।

(2) इसी तरह सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ बारहवें शांति सम्मेलन आयोजित दिनांक 14 मार्च 2015 ई स्थान बैयतुल फ़ुतूग मार्डन में "विश्व शांति के लिए सुनहरा नियम" विषय पर ख़िताब करते हुए फरमाते हैं

"यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जब कभी और जहाँ भी कोई अपने घृणित अत्याचार और अन्याय की पुष्टि इस्लाम के नाम से करने की कोशिश करता है तो उसकी ज़रूर निंदा की जानी चाहिए और यह बात भी ठीक है कि ऐसे अत्याचार और अन्याय का इस्लाम की सच्ची और शांति वाली शिक्षा से किसी प्रकार का कोई संबंध नहीं है। हुज़ूर कहते हैं कि जैसा कि मैंने पहले भी कहा था कि मैं यह नहीं मानता कि मौजूदा परिस्थितियों में Policy makers और सरकारों द्वारा आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आवश्यक और प्रभावी कदम उठाए गए हैं।

"मेरे विचार में यह कहीं अधिक उपयोगी और प्रभावी होगा कि बड़ी शक्तियां स्थानीय सरकारों की मदद करें और उन्हें अपने भरोसा में लेते हुए तथा एक दूसरे पर भरोसा करने के विश्वास को मज़बूत करें और आपस के सहयोग के साथ एक व्यावहारिक रणनीति को बनाते हुए चरमपंथ और नफरत भरे विचारों को फैलने से रोकने की कोशिश की जानी चाहिए। और यह काम कहीं अधिक प्रभावी साबित होगा इस के स्थान पर यह बात कि सरकार स्थानीय विद्रोहियों को सैन्य प्रशिक्षण और हथियार प्रदान किए जांए। इस प्रकार की नीति केवल उन देशों में और अधिक शरारत और बुराई फैलाने का कारण हो सकती है, हालांकि हम ऐसे नकारात्मक उपायों के ख़तरनाक परिणाम अपनी आँखों के साथ देख चुके हैं।

कुछ समय पहले कुछ बड़ी शक्तियों ने सीरिया सरकार के विद्रोहियों को Military Training दी थी जिनके बारे में फिर यह खबरें आईं कि विद्रोहियों ने सैन्य प्रशिक्षण और आधुनिक हथियार प्राप्त करने के बाद आतंकवादी संगठनों में शामिल हो गए इसके बावजूद आज भी हज़ारों सीरियाई विद्रोहियों को तुर्की, कतर और सऊदी अरब में सैन्य प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

मैं विश्वास रखता हूँ कि यह कहीं अधिक विस्तार योग्य होगा कि बड़ी ताकतें आपसी विश्वास पैदा करके आतंकवाद को समाप्त करने के लिए स्थानीय सरकारों को सहायता प्रदान करवाएं और यह मदद इस शर्त पर दी जानी चाहिए कि वे अपने देश की जनता के साथ न्याय की आवश्यकताओं को पूरा करेंगे और किसी भी तरह से उनके अधिकारों को नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा।

सारांक्ष यह है कि उग्रवाद को समाप्त करने के लिए जो कदम अभी तक उठाए गए हैं वे प्रभावी साबित नहीं हुए अगर हम लीबिया के मामले पर नज़र डालें तो पाते हैं कि अब कुछ साल पहले ही कुछ शक्तियों ने जनरल गद्दाफी की सरकार को समाप्त करने के लिए स्थानीय विद्रोहियों की मदद की थी, लेकिन प्राप्त क्या हुआ? क्या उससे कुछ लाभ हुआ लीबिया की जनता के जीवन में कोई सुधार पैदा हुआ? बेशक नहीं, लेकिन इसके बजाय पूरा देश तबाह हो गया और दहशत गर्द लोगों के लिए breedin ground बन गया।

अहमदिया मुस्लिम पीस प्राइज

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शांति की कोशिशों को और अधिक बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2009 ई से Peace Symposium ब्रिटेन अवसर पर ऐसे संगठनों या लोगों को जो दुनिया में शांति के प्रयास करते हैं चुन कर Ahmadiyya Muslim Peace Prize देना आरम्भ किया जिस में सम्मानित पुरस्कार के साथ, 10,000 पाउंड का नकद पुरस्कार है।

इस सिलसिले में सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ द्वारा सबसे पहला Ahmadiyya Muslim Peace Prize आदरणीय लार्ड एरिक एयूब्यूरे (Lord Eric Avebury) को उनकी ओर से मानवाधिकार की स्थापना के लिए लगातार किए गए प्रयासों को स्वीकार करते हुए वर्ष 2009 ई में दिया गया। जबकि सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने भारत के प्रांत महाराष्ट्र की आदरणीया सिंधू ताई सपकाल साहिबा Mother of Orphans को यह सम्मान पीस संगोष्ठी ब्रिटेन 2015 ई के अवसर पर आपके द्वारा अनाथों और बेसहारा बच्चों के विकास तथा उन्नति के लिए किए जाने वाली सेवाओं को सम्मान की दृष्टि से देखते हुए अपने मुबारक हाथों से दिया।

दुनिया के प्रमुखों के नाम ख़त

इसी तरह सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुनिया में शांति की स्थापना के लिए एक ओर प्रशंसनीय और प्रभावी प्रयास के अधीन दुनिया के धार्मिक और राजनीतिक शासकों को पत्र लिखे, जिस में आप ने उन सभी को यह समझाने की कोशिश की आज दुनिया विशेषकर मानवता को किस प्रकार घातक खतरों का सामना करना पड़ रहा है, साथ ही आप ने इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में यह भी बताया कि मानवता और दुनिया को बचाने के लिए हम सब पर क्या ज़िम्मेदारियां निहित हैं और ज़िम्मेदारियों को हमें किस तरीके से अदा करना चाहिए? इन में से कुछ पत्र संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।

(1) इसराईल के प्रधानमंत्री को पत्र में आपने लिखा है:

मेरा आप से यह निवेदन है कि विश्व को एक विश्व युद्ध में झोंकने की बजाए विश्व को यथासंभव विनाश से बचाने का प्रयत्न करें। शक्ति द्वारा विवादों का समाधान करने के स्थान पर वार्तालाप के द्वारा उनका समाधान करने का प्रयास करना चाहिए ताकि हम अपनी भावी पीढ़ियों को बतौर उपहार एक उज्ज्वल भविष्य दें, न कि हम उन्हें विकलांगताओं जैसे दोषों को उपहार दें।

(2) ईरान के इस्लामी गणराज्य के राष्ट्रपति को ध्यान:

आजकल विश्व में बहुत अशान्ति और बेचैनी है। बहुत से देशों में छोटे स्तर के युद्ध आरंभ हो चुके हैं जबकि अन्य स्थानों में महा-शक्तियां शान्ति स्थापित करने के बहाने हस्तक्षेप कर रही हैं। प्रत्येक देश किसी अन्य देश

की सहायता या विरोध में प्रयासरत है परन्तु न्याय की मांगे पूर्ण नहीं की जा रहीं। मैं खेद के साथ कहता हूं कि यदि अब हम विश्व की वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानपूर्वक देखें तो हमें ज्ञात होगा कि एक और विश्व-युद्ध की नींव पहले ही रखी जा चुकी है। बहुत से छोटे और बड़े देशों के पास परमाणु हथियार मौजूद होने के कारण परस्पर द्वेष और शत्रुता में वृद्धि हो रही है। ऐसी कठिन परिस्थिति में तृतीय विश्व-युद्ध भयानक रूप में निश्चय ही हमारे निकट है। जिस प्रकार कि आप जानते हैं कि परमाणु हथियारों के उपलब्ध होने का तात्पर्य यह है कि तृतीय विश्व-युद्ध एटमी युद्ध होगा। उसका अन्तिम परिणाम बहुत विनाशकारी होगा तथा ऐसे युद्ध के दूरगामी प्रभाव भावी पीढ़ियों के विकलांग एवं कुरूप पैदा होने का कारण होंगे।

(3) पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति आर ओबामा ने लिखा:

हम सभी परिचित हैं राष्ट्र संघ की विफलता और 1932 ई. के आर्थिक संकट द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण बने थे। आज के अग्रगण्य अर्थशास्त्री यह कहते हैं वर्तमान और 1932 ई. के आर्थिक संकट में बहुत सी समानताएं हैं। हम यह देखते हैं कि राजनैतिक और आर्थिक समस्याएं छोटे देशों के मध्य पुन: युद्ध का कारण बनी हैं और उन देशों में इन के कारण आंतरिक अशान्ति और असंतोष का वातावरण व्याप्त हो चुका है। इस स्थिति में अन्तत: कुछ ऐसी शक्तियां अनुचित लाभ उठाकर संसार की बागडोर सम्भाल लेंगी जो विश्व युद्ध का कारण बन जाएंगी। यदि छोटे देशों के परस्पर विवादों का राजनीति अथवा कूटनीति से समाधान नहीं ढूंढा जा सकता तो इस के कारण विश्व में नए गुटों और समूहों का जन्म होगा और यह स्थिति तृतीय विश्व युद्ध का पूर्वावलोकन प्रस्तुत करेगी। अत: मेरा यह विश्वास है कि इस समय विश्व के विकास पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाए यह अति आवश्यक और नितान्त अनिवार्य है कि हम विश्व को इस विनाश से सुरक्षित रखने के अपने प्रयासों में शीघ्र से शीघ्र तीव्रता पैदा करें। इस बात की भी अत्यन्त आवश्यकता है कि मानवजाती परमात्मा जो कि एक है और हमारा स्रष्टा है को पहचाने, क्योंकि संकट और विपदाओं में मानवता के जीवित बचने को केवल यही सुरक्षित बना सकता है, वरन् यह संसार निरन्तर आत्म-विनाश की ओर तीव्रता से अग्रसर होता रहेगा।

(4) ब्रिटेन के प्रधान मंत्री के लिए लिखा:

मेरा यह निवेदन है कि प्रत्येक स्तर पर और दृष्टिकोण से हमें अनिवार्य रूप से प्रयास करना होगा ताकि नफ़रत की ज्वाला को शान्त किया जा सके। इस प्रयास की सफलता के पश्चात् ही हम भावी पीढ़ियों को उज्जवल भविष्य का आश्वासन दे सकते हैं परन्तु यदि हम इस कार्य में सफल न हुए तो हमारे मन में इस संबंध में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए कि परमाणु युद्ध के फलस्वरूप भावी पीढ़ियों को हर जगह हमारे कर्मों के भयानक परिणाम को भुगतना पड़ेगा और वे अपने पूर्वजों को पूरे विश्व को विनाश की ज्वाला में झोंकने के कारण कभी क्षमा नहीं करेंगी। मैं आपको पुन: स्मरण कराता हूं कि ब्रिटेन भी उन देशों में से है जो विकसित और विकासशील देशों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं और डालते हैं। यदि आप चाहें तो आप न्याय और इन्साफ़ की मांगों को पूरा करते हुए विश्व का पथ-प्रदर्शन कर सकते हैं। अत: ब्रिटेन तथा अन्य शक्तिशाली देशों को विश्व-शान्ति की स्थापना के लिए अपनी भूमिका निभानी चाहिए। अल्लाह तआला आपको और विश्व के अन्य नेताओं को यह सन्देश समझने का सामर्थ्य प्रदान करे।

लीफ लेटस का वितरण

सय्यदना हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपनी विश्व शान्ति की कोशिशों में दुनिया के प्रत्येक वर्ग को टारगेट करके लीफ लेटस का वितरण किया। और इस शांति मिशन के साथ प्रत्येक विशेष और साधारण व्यक्ति को जोड़ने की कोशिश की। आप ने किसी भी देश के साधारण वर्ग को इस्लाम की धार्मिक शिक्षाओं के प्रकाश में शांति के विषय पर आधारित विभिन्न लीफ लेटस वितरण करने की जमाअत अहमदिया को हिदायत फरमाई। आप की इस हिदायत की रोशनी में जमाअत अहमदिया के लाखों परवाने दुनिया के सारे क्षेत्रों में करोड़ों लीफ लेटस छपा कर बांट रहे हैं। और शांति के इस मिशन के साथ लोगों को जोड़ रहे हैं।

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने 23 नवंबर, 2015 ई को हिल्टन होटल, ओडोबो टोकियों में सम्माननीय मेहमानों को संबोधित करते हुए फरमाया

"मैं आप सब से निवेदन करता हूं कि अपनी पैठ और पहुंच को प्रयोग में लाते हुए विश्व में अमन और परस्पर एकता के लिए प्रयास करें। हमारा सामूहिक दायित्व है कि विश्व में जहां कहीं भी अशान्ति और तनाव है हम न्याय के लिए आवाज़ उठाएं और शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयास करें ताकि हम वैसे भयंकर युद्ध से सुरक्षित रह सकें जो आज से सत्तर वर्ष पूर्व लड़ा गया था, जिसके विनाशकारी प्रभाव कई दशकों पर छाए हुए थे अपितु आज तक महसूस किए जाते हैं। यद्यपि सीमित स्तर पर एक विश्वयुद्ध का प्रारंभ हो चुका है। परन्तु हमें चाहिए कि हम अपने दायित्वों को यथा समय निभाएं ऐसा न हो कि कहीं उसके प्रभाव फैलकर विश्व को अपनी लपेट में ले लें और वे रक्त बहाने वाले और घातक हथियार दोबारा प्रयोग हों जो हमारी भावी नस्लों को तबाह कर दें।

अत: आइए, सब मिलकर अपने दायित्वों को निभाएं। विरोधी संगठन बनाने की बजाए हम सब को एकमत होकर परस्पर सहयोग करना चाहिए। हमारे पास अब कोई और चारा नहीं। क्योंकि यदि तृतीय महायुद्ध नियमित रूप से आरंभ हो गया तो उसके परिणामस्वरूप आने वाला विनाश और बरबादी के सिलसिलों की कल्पना भी असंभव है। निस्सन्देह ऐसी स्थिति में अतीत के युद्ध इस की तुलना में बहुत साधारण महसूस होंगे।

मेरी दुआ है कि विश्व इस स्थिति की कठोरता को समझे। इससे पूर्व कि विलम्ब हो जाए, मानवजाति ख़ुदा तआला के सामने झुकते हुए उसके अधिकारों तथा आपसी अधिकारों को अदा करने लगे।

अल्लाह तआला उन्हें समझ और विवेक प्रदान करे जो धर्म के नाम पर अशान्ति का वातावरण पैदा कर रहे हैं तथा उन्हें भी जो अपने आर्थिक हितों के उद्देश्य८ से भौगोलिक एंव राजनीतिक युद्ध कर रहे हैं। काश उन्हें ज्ञात हो जाए कि उनके उद्देश्य कितने अनुचित और विनाशकारी हैं। ख़ुदा करे कि विश्व के हर क्षेत्र में चिरस्थायी शान्ति स्थापित हो। आमीन

☆ ☆ ☆

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"इस्लाम की सुरक्षा और सच्चाई प्रकट करने का लिए तो सब से पहले तो यह पक्ष है कि तुम सच्चे मुसलमान का नमूना दिखाओ।"

जमाअत के समस्त दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2017 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

एम बी ज़हीर अहमद

सदर जमाअत अहमदिया मरकरह कर्नाटक

जमाअत अहमदिया की मानवता की सेवा के बारे में दूसरों की अभिव्यक्तियां

(एच शम्सुद्दीन कावाशेरी, सम्पादक बदर मलयालम)

इस्लाम एक संतुलित धर्म है और एक सम्पूर्ण जीवन का आदर्श है। इस्लाम प्रत्येक उस काम के लिए प्रोत्साहित करता है जिस से इंसान की धार्मिक और आख़रत का जीवन संवर सकता है। यही कारण है कि इस्लाम का मौलिक सिद्धांत अल्लाह तआला और उस के बन्दों का हक अदा करना है। इन दो अधिकारों का अदा करना न केवल ख़ुदा तआला की ख़ुशी लाता है, बल्कि ख़ुदा तआला की प्रशंसा का अधिकारी भी बना देता है।

नबियों के इतिहास के अनमोल उदाहरण

इंसान की सेवा के उत्तम उदाहरण हमें निबयों की तारीख़ों में मिलते हैं। हज़रत सालेह अलैहिस्सलाम के नेक आचरण पर उन की क़ौम ने विरोद्धी होने के बावजूद कहा कि قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَا (सूरह हूद 63) अर्थात हे सालिह तू इस से पहले हमारी आशाओं का केन्द्र था।

प्रत्येक नबी के बारे में उस की क़ौम ने स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है कि यह आदमी और इस की जमाअत इंसानियत की सेवा में आगे रहते हैं। इस सुन्दर इतिहास का सर्वोत्तम नमूना हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र जीवन है। आप ने फरमाया सारी सृष्टि अल्लाह तआला का परिवार है। जो कोई अल्लाह के परिवार से मुहब्बत करता है उस की सेवा करता है अल्लाह तआला भी उस से मुहब्बत करता है।

एक बार बोझ उठाने वाली एक बूढ़ी औरत की सेवा के लिए अपने अपने आप को पेश किया। जब आप उस महिला का समान पहुंचा कर घर जाने लगे तो उस बुढ़िया ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नसीहत करते हुए कहा कि हे मेरे पुत्र समय बहुत बुरा है। ध्यान से रहना याद रखना मुहम्मद नामक एक व्यक्ति एक नए धर्म के माध्यम से लोगों को भटका रहा है कहीं तुम उस के जादू में न फंस जाना। यह सुन कर, आप ने मुस्कराते हुए फरमाया: मेरी माँ! जिस मुहम्मद से तुम डर रही हो वह मुहम्मद मैं ही हूं। यह सुनकर वह औरत कहने लगी कि अगर ऐसा है तो मैं आप पर ईमान लाती हूं।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ اِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ

कभी हरकल के दरबार में आपका सबसे बड़ा दुश्मन अबू सुफ़यान अपने पक्ष में गवाही देने पर मजबूर हो जाता है कभी दुश्मन आप के विशाल हृदय के बारे में जानते हुए अकाल पीड़ितों को अनाज भिजवाने का आपसे अनुरोध करता और आप उन के व्यर्थ विरोद्ध को पीछे छोड़ते हुए उन्हें खाना पहुंचाने का आदेश देते हैं।

प्रसिद्ध शोधकर्ता विलियम म्यूर लिखते हैं:

"जहां तक इस्लामी सरकार का तरीका है यह तरीका कैदियों के लिए कभी दर्दनाक नहीं था बल्कि बेशक इस में उनकी आजकल के शाही कैदियों की तुलना में भी अधिक आराम मिलता था क्योंकि आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जोरदार शिक्षा और सरकार की चौकस निगरानी की वजह से काफिरों के कैदी मुसलमानों के जिन परिवारों में रहते थे उस के नौकर और सेवक बन कर नहीं रहते थे बल्कि परिवार के सदस्य समझे जाते थे और उन का ध्यान मेहमानों की तरह किया जाता था अत: हम देख चुके हैं कि बदर के कैदियों को जो आमतौर पर इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन थे मुसलमानों ने इस आराम और सुविधा के साथ रखा कि वह उनकी प्रशंसा में बात करते थे और उनमें से कई बस इस उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर मुसलमान गए।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन, लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, पृष्ठ 465)

इसी तरह, आपके सच्चे आशिक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भी मानव जाति से बहुत प्यार करते थे। एक अवसर पर आप ने फरमाया: "मैं मानव जाति से ऐसा प्यार करता हूँ जैसे कि माता-पिता अपने बच्चों से बल्कि इस से बढ़ कर।"

(रूहानी ख़ज़ायान, जिल्द 17, अरबईन नंबर 1, पृष्ठ 344)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क्या ख़ूब फरमाया है

اَحِنُّ اِلٰی مَنْ لَا یَحِنُّ مَحَبَّةً
وَاَدْعُوْ لِمَنْ یَدْعُوْ عَلَیَّ وَیَھْذَرُ

अर्थात मैं तो मुहब्बत के कारण उस की तरफ आकर्षित होता हूं जो मेरी तरफ आकर्षित नहीं होता और मैं उस के लिए भी दुआ करता हूं जो मुझ पर बद दुआ करता है और बकवास करता है।

(हमामतुल बुशरा, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 7,पृष्ठ 32)

जमाअत अहमदिया की मानव सेवा और दूसरों की अभिव्यक्तियां

भारत की आज़ादी के बाद अभी सात साल गुज़रे थे कि 1 9 55 ई में पंजाब के विभिन्न ज़िले बाढ़ की चपेट में आ गए। कादियान में उस समय 500 के लगभग अहमदी रहते थे, वे भी इससे प्रभावित हुए, लेकिन अपने नुकसान की परवाह न करते हुए उन लोगों ने अपना गेहूं, चावल और खाद्यान्न बिना किसी धार्मिक भेदभाव के बाढ़ पीड़ितों में बांट दिया। इन अहमदियों को अपने से अधिक दूसरों की चिंता हुई और उन्होंने कादियान से बाहर निकल कर मानव जाति की सेवा का सबसे अच्छा नमूना पेश किया। इस बात का ज़िक्र करते हुए सर बिशन सिंह साहिब उप तहसीलदार क्षेत्र बेट ब्यास ने कहा:

" मैं क्षेत्र बेट के पीड़ित विभिन्न गांवों में दिनांक 26 अक्तूबर 1955 ई से ग्रांट बांटने के लिए आया हूं और मुझे यह देखकर ख़ुशी हुई है कि जमाअत अहमदिया कादियान के सज्जन कई दिनों से उन गांवों में चिकित्सा और अन्य राहत कार्य बड़ी गतिविधि और तेज़ी से कर रहे हैं एक राहत शिविर एक भीड़ भरे इलाके में भी खुला रहता है जहां हर तरह से बीमारों और रोगियों की मदद की जाती है। अहमदी युवाओं की पार्टियां दवाइयां कपड़े और राशन आदि लेकर विभिन्न बाढ़ प्रभावित गांवों में इलाज कर रहे हैं। मुझे इस बात की अभिव्यक्ति से ख़ुशी है कि जो सार्वजनिक सेवा का काम कादियान के अहमदी दोस्त पूरी सहानुभूति और सेवा भावना के साथ अंजाम दे रहे हैं, इससे क्षेत्र बेट के मुसीबत प्राप्त जनता को बहुत आराम पहुँचा है।"

(अख़बार बदर, 14 नवंबर, 1 9 55 ई पृष्ठ 8)

1 99 0 ई में ईरान में एक गंभीर भूकंप आया था, जिस में हज़ारों लोग मारे गए थे। जमाअत अहमदिया ने इस मुसीबत के अवसर पर शीघ्र ईरानी हुकूमत को दो लाख बीस हज़ार रुपए की सहायता पहुंचाई। इस का शुक्रिया ईरानी राजदूत दिल्ली ने इन शब्दों में किया

"जमाअत अहमदिया की इस बेहतरीन सेवा का जो भूकम्प के सम्बन्ध में की गई हम दिल की गहराई से शुक्रिया अदा करते हैं। और हमारा यह शुक्रिया जमाअत के शीर्ष लोगों तक पहुंचा दिया जाए।

(अख़बार बदर, 23 दिसंबर 2000, पृष्ठ 138)

जमाअत अहमदिया के चौथे ख़लीफा हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहिब रहमहुल्लाह तआला देश विभाजन के समय का वर्णन करते हुए एक स्थान पर फरमाते हैं

"यह जगह औद्योगिक और व्यावसायिक प्रतिष्ठा के जमाअत अहमदिया का केंद्र होने के कारण भी प्रसिद्ध है। इसके आसपास गांवों में सिखों की आबादी है। इसलिए दंगों के दिनों में बीस-बीस मील के मुसलमान भी कादियानी शरीफ में शरण लेने के लिए आ गए।"

(उद्धरण खुत्बाते ताहिर, जिल्द 4, पृष्ठ 187)

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर हज़रत ख़लीफतुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला देश के विभाजन के हालात का ज़िक्र करते हुए फरमाते हैं:

"मुझे याद है कि इन शरणार्थियों को नियमित भोजन दिया जाता रहा क्योंकि ख़तरनाक स्थितियां नज़र आ रही थीं इसलिए हज़रत मुस्लेह मौऊद ने बड़ी रणनीति के साथ स्थिति को जांच कर जलसा सालाना की आवश्यकताओं से कहीं अधिक गेहूं एकत्र हुई थी। तो ख़ुदा तआला की कृपा से वहां एक भी मुसलमान को भूख से मरने नहीं दिया गया था बल्कि ज़रूरत मन्दों की आवश्यकता को प्राथमिकता देते हुए दहेज के बहुमूल्य कपड़े भी उन में वितरित किए गए। हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने सब से पहले ख़ुद अपनी बेगम के कीमती कपड़े बांट कर इस काम का आरम्भ किया। हज़रत बेगम साहिबा चूंकि नवाब मालेर कोटला के परिवार से संबंध रखती थीं इसलिए इन कपड़ों में कुछ इतने कीमती और पुराने पारिवारिक कपड़े चले आ रहे थे कि वह उन्हें ख़ुद भी नहीं पहना करती थीं कि कहीं ख़राब न हो जाएं लेकिन हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस रहमतुल्लाह ने सबके सामने और सबसे पहले, अपने घर से कपड़ों के बक्से खोलने शुरू कर दिए और देखते ही देखते इन ग़रीबों को जिन के ख़बाव में भी इस प्रकार के कपड़े नहीं आ सकते थे बांट दिए। लेने वाले लगभग सारे ग़ैर अहमदी मुसलमान थे फिर इस के बाद तो हर घर के हर कमरे के हर बक्से के मुंह खुल गए और जो कुछ था वह अपने मुसीबत प्राप्त मुसलमान भाइयों में बांट दिया मैं जब आख़िर में कादियान में निकला हूं तो मेरे पास एक ख़ाकी थैला था जिस में केवल एक जोड़ा था यह नहीं कि कोई चीज़ ला नहीं सकता था बल्कि हमारे सारे घर खाली पड़े हुए थे और जो कुछ था बांट दिया था।"

"चूंकि इन शरणार्थियों को उपद्रवीयों ने बिल्कुल ग़रीब और लूट लिया था। इसलिए कादियान के निवासियों ने इन के ध्यान रखने का बेड़ा उठाया। ज़ाहिर है इतनी बड़ी भीड़ के लिए खाद्य और रहायश का बोझ उठाना कोई मामूली काम नहीं है और ऐसे दिनों में जबकि ज़िन्दगी की आवश्यकताओं की इतनी महंगाई हो अत: यह अशिक्षित मेहमान कादियान की शरण में उस समय तक रहे जब तक सरकार ने जान बूझकर उन्हें ऐसा करने से रोक न दिया। "

ख़ुत्बाते ताहिर, जिल्द 4, पृष्ठ 187)

अख़बार "ज़मींदार" लिखता है:

"बटाला के शरणार्थियों की स्थिति बहुत बुरी है छिपाने के लिए कोई भी आश्रय नहीं है, न ही कुछ भी खाने के लिए। उपद्रवियों ने क़यमात सिर पर उठा रखी है, ज़ेवरों और सामानों पर डाके डाले जाते हैं अब तो औरतों की मर्यादा का हनन किया जा रहा है। दूसरा कैम्प श्री हरि गोबिन्दपुर में है वहां की अवस्था भी बटाला से कम नहीं हैं तीसरा केम्प कादियान में है । इस में शक नहीं कि मिर्ज़ाइयों ने मुसलमानों की सेवा शुक्रिया योग्य की है। इस समय हज़ारों शरण लेने वाले मिर्ज़ाइयों के घरों से रोटियां खा रहे हैं। कादियान के मुसलमानों ने हुकूमत से राशन के लिए निवेदन नहीं किया।

(ज़मीनदार 16 अक्तूबर 1947 ई उद्धरण ख़ुत्बाते ताहिर जिल्द 4 पृष्ठ 187)

29 फरवरी 1968 को श्री वी. के गुप्ता साहिब चीफ मेडिकल ऑफिसर गुरदासपुर ने कादियान का दौरा करते हुए अहमदिया अस्पताल का भी निरीक्षण किया उन्हें सूचित किया गया कि सभी कर्मचारियों और दवाओं का खर्च सदर, अंजुमन अहमदीया कादियान सहन करती है। रोगियों का नि:शुल्क इलाज किया जाता है इसके अलावा, जनवरी 1 9 48 से दिसंबर 1 9 67 के दौरान 370 9 78 मुसलमान और 2737 9 0 ग़ैर-मुसलमानों का इलाज किया गया। डॉक्टर वी के गुप्ता साहिब ने अस्पताल के सभी विभागों की विस्तृत समीक्षा की और स्टाफ की मानवीय सेवा के इन उत्कृष्ट काम पर जो वह धर्म के बिना भेदभाव के उन्नीस साल से अंजाम दे रहा था, पसंदीदगी का वर्णन किया। और निरीक्षण बुक पर अंग्रेज़ी में अपने विचार भी दर्ज करे जिनका हिन्दी अनुवाद है:। "अस्पताल का निरीक्षण किया गया और इसे मुसलमानों और ग़ैर मुसलमानों में समान रूप से बहुत अधिक लोकप्रिय पाया।" उन दिनों में डॉ ग़ुलाम रब्बानी साहिब हस्पताल में इन्चार्ज के कर्तव्य अदा कर रहा थे।" (तारीख़े अहमदियत, जिल्द 24, पृष्ठ 762)

जलसा सालाना सिएरा लियोन 2016 ई भागीदारी करने वाले उपाध्यक्ष ऑफ नेशनल काउंसिल ऑफ पएरा माऊंट चीफ ने अपने भाषण में जमाअत की शिक्षा, चिकित्सा और धार्मिक क्षेत्र में सेवाओं का शुक्रिया अदा किया। महोदय ईसाई धर्म से संबंध रखते थे लेकिन जलसा सालाना की बरकत और अहमदियत की सच्चाई से प्रभावित होकर उन्होंने जलसा सालाना में ही अपने मुसलमान होने का ऐलान कर दिया। الحمدلله على ذلك

ग़ैर अहमदियों के प्रमुख इमाम BO ज़िला अल्हाज मुस्तफा कोका ने अपने भाषण में कहा कि जमाअत अहमदिया जो कि एक लंबे समय से न केवल शिक्षा के क्षेत्र में सेवा कर रही है बल्कि राष्ट्र और देश के विकास के लिए भी दिन रात प्रयासरत है। जमाअत अहमदिया के इन कामों की सराहना करता हूं।

*सैक्टरी जनरल सिएरा लियोन मुस्लिम कांग्रेस अल्हाज प्रोफेसर ए। बी करीम ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने सिएरा लियोन के शिक्षा और चिकित्सा के क्षेत्र में जो सेवाएं प्रदान की हैं उन्हें अनदेखा नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि इस रैली में ईसाई और मुसलमानों की उपस्थिति सिएरा लियोन और जमाअत अहमदिया में धार्मिक सहिष्णुता की गवाह है।

* सदर सिएरा लियोन Hon Dr Ernest Bai Koroma ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम सभी जमाअत अहमदिया के सिएरा लियोन में सेवाओं के हर स्तर पर महत्व देते हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने लोगों को शांतिपूर्ण समाज में रहने का तरीका सिखाया है ... इस्लाम के शांति के संदेश, और भलाई का व्यावहारिक नमूना हमें जमाअत अहमदिया की राष्ट्रव्यापी सेवाओं में नज़र आता है।...... इस अवसर पर जमाअत अहमदिया की इयोलाबा महामारी के दौरान सेवाओं का भी शुक्रिया अदा करता हूं। जमाअत अहमदिया ने Humanity First का व्यावहारिक रंग नमूना दिखाया है।

(अल-फज़ल इंटरनेशनल, 11 नवंबर 2016, पृष्ठ 16)

हैती के आसपास कुछ साल पहले एक भूकंप आया था। इस अवसर पर, जमाअत को आपदा निवारण सेवाओं की तौफीक मिली। अल्हम्दो लिल्लाह। 2015 में बेनिन में आयोजित जलसा सालाना में भाग लेते हुए

हैती के राजदूत ने कहा कि जमाअत अहमदिया हमारी बहुत सेवा करती रही है हम जमाअत के कामों की सराहना करते हैं।

(अल-फज़ल अंतरराष्ट्रीय 1 अप्रैल 2016)

Priyanka Radhi Krishna (Labour Party) ने कहा: " जिस बात की मैं विशेष रूप से सराहना करना चाहता हूँ वह आप की जमाअत की ओर से शांति को बढ़ावा देने और हर प्रकार के चरमपंथ के ख़िलाफ खड़े होने का अडिग इरादा और असामान्य जोश है और आप की तरफ से मानवता की सेवा, जिसके लिए सारी दुनिया में प्रतिबद्ध हैं, भी सराहनीय है।"

Honourable Peseta Sam Lotu Liga (Minister for Ethnic Communities) ने कहा " मैं भी शांति के इन संदेशों की भी सराहना करना चाहता हूं, जिसके बुलाने वाले अहमदिया ख़लीफा हैं। नि:सन्देह आप लोग अंतरराष्ट्रीय अधिकारों को बहाल करने और अल्पसंख्यक अधिकारों और अधिकारों की आवाज बढ़ाने पर प्रशंसा के पात्र हैं। (अहमदिया) ख़िलफात निश्चित रूप से शांति, सहिष्णुता और प्यार सिखाती है।"

(अल-अजीज इंटरनेशनल, 22 / अप्रैल 2016)

Thomas Yayi Boni अपने मंत्रियों के साथ प्रेसीडेंसी राष्ट्रपति के लऊंजा में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला पवित्र से मुलाकात के लिए आए। राष्ट्रपति ने कहा: "यह एक बढ़िया काम है जो आप कर रहे हैं। ख़ुद मैं आप का आभारी हूँ कि आप हमारे साथ राष्ट्र सेवा में भाग ले रहे हैं। "

(अल-फज़ल अंतरराष्ट्रीय, 6 से 12 जून 2008, पृष्ठ 10)

दैनिक नवाए वक्त लाहौर ने अपनी 17 जून 1969, पृष्ठ 5 में शीर्षक "मानव सेवा का शानदार प्रदर्शन" लिखा "रबवा (संवाददाता) पिछले दिन रबवा और चिनोट के बीच एक ट्रेन का इंजन पटरी से उतर गया जिस से रेलवे लाइन भी प्रभावित हुई। कई वाहनों को स्टेशन पर रोकना पड़ा। दोपहर की भयंकर गर्मी में, रब्वा के छोटे बच्चों और युवा लोगों ने ठंडा पानी और भोजन के वाहनों में एक संगठन के साथ सभी यात्रियों को प्रदान किया। यह उल्लेखनीय है कि मानव सेवा का यह अदभुत कार्य करने वाले बच्चे और युवा ख़ुद भूखे और प्यासे थे और उन्होंने इस सेवा का कोई बदला नहीं लिया और न स्वीकार किया। एक अनुमान के अनुसार कुल छह हज़ार लोगों को ठंडा पानी और भोजन प्रदान किया गया।"

(उद्धरण तारीख़े अहमदियत, जिल्द 25, पृष्ठ 82)

गवर्नर लेगोस स्टेट (नाइजीरिया) के बड़ों के प्रतिनिधि अल्हाज इब्राहीम साहिब ने कहा: "मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि ख़लीफतुल मसीह यहां इस्लामिक केंद्र की नींव रख रहे हैं। यह एक वैध और सही दिशा है और इस्लाम के प्रसार में मददगार होगा। जमाअत अहमदिया की सभी परियोजनाएं शैक्षणिक हों या प्रशासनिक हैं, वे सभी मानवता के लिए बहुत मददगार बन रही हैं मैं अहमदिया जमाअत के सभी दोस्तों को बधाई देता हूं।"(अल-फज़ल इंटरनेशनल, 20 से 26 जून 2008, पृष्ठ 11)

यूरोपियन संसद की सदस्य सुश्री बैरोनेस ईमानकलसन ने ख़िलाफत जयंती के सौ वर्ष की बधाई देते हुए कहा: "जमाअत अहमदिया सारी दुनिया में एकता शांति और मानवता की सेवा के लिए बहुत मूल्यवान काम कर रही है और इस मामले में ब्रिटेन सरकार भी आप के साथ है। "

(अल-फज़ल अंतरराष्ट्रीय, 15 से 21 अगस्त 2008 ई, पृष्ठ नंबर 2)

लाइबेरिया के सूचना और पर्यटन मंत्री श्री वेज़ली मोमो जॉनसन ने लाइबेरिया सरकार का प्रतिनिधित्व करते हुए जलसा सालना यू.के 2008 ई की पूर्व संध्या पर राष्ट्रपति लाइबेरिया और लाइबेरिया की अवाम की तरफ से इस संदेश को पढ़ कर लोगों को बधाई दी, और कहा: "अहमदिया मिशन लाइबेरिया, बड़ी सफलता के साथ, पूरे देश में शांति का संदेश फैल रहा है। लाइबेरिया को अमन, सहिष्णुता और ग़रीबी दूर करने की जरूरत है और इस सिलसिले में जमाअत अहमदिया का पूरा सहयोग सरकार और जनता को प्राप्त है।... लाइबेरिया के देश जमाअत अहमदिया के सहयोग की वजह से विकास की राह पर अग्रसर है।"

(अल-फज़ल अंतरराष्ट्रीय, 26 सितंबर से 2 अक्तूबर 2008, पृष्ठ नंबर 2)

पूर्व मंत्री पंजाब नथा सिंह जी दालम ने गुजरात में आए भूकंप के लिए कादियानी से राहत को रवाना करते हुए कहा, रोगियों, ज़रूरतमंदों और दुखी मानवता की सेवा दुनिया की सर्वोच्च सेवा है और दुनिया के सभी धर्म इंसान की सेवा और आपसी प्रेम की शिक्षा देते हैं। श्री दालम ने अहमदिया जमाअत के द्वारा समाज की भलाई के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि इस जमाअत ने देश में स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में विशेष सहयोग के अलावा जब भी देश में कोई आपदा आई तो उन्होंने सबसे पहली पंक्ति में खड़े होकर दुखी मानवता की सेवा की है और गुजरात के भूकंप पीड़ितों के लिए 35 लाख रुपए की राहत सहायता भेजी है। उन्होंने कहा कि जमाअत ने बंगाल राहत कोष को बड़ी रकम देकर अपना समर्थन दिया है। अहमदिया जमाअत की लंदन और अन्य देशों से आई टीमों ने सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र भुज में जाकर सेवा की, जो सराहनीय है।"

(दैनिक जागरण, जालंधर, 23 मार्च 2001)

वर्ष 1992 में भारत के प्रांत यूपी में दंगों के मौके पर जमाअत अहमदिया की सेवा का ज़िक्र करते हुए एक अखबार ने लिखा: दंगा ज़दगा पीड़ितों की सेवा के लिए जमाअत अहमदिया की ओर से राहत समिति गठित की गई है जहां विभिन्न शिविरों में मदद पहुंचाई जा रही हे। खाने पीने का सामान , ओढ़ने के कंबल, बर्तन और दवाइयां प्रदान की जा रही हैं और काम अभी भी चल रहा है। अहमदिया राहत समिति की ओर ऐसे लोगों को जो पूरी तरह ख़ाली हाथ हो गए थे और अपने वतन वापस जाना चाहते थे बहुत बड़ी संख्या में टिकटें खरीद कर दी गईं। शिविरों में, ऐसा महिलांए जो गर्भवती थीं उन के लिए नर्सिंग होम में प्रवेश कराने और खर्च की व्यवस्था की गई । अहमदिया राहत समिति का इरादा है कि कुछ लोगों को घर भी बना दिए जाएं जिसके लिए समीक्षा की जा रही है। "

(दैनिक हिंदुस्तान उर्दू 24 जनवरी 1993, उद्धरण ट्रैक्ट "जमाअत अहमदिया की सामाजिक सेवांए, प्रकाशित नज़ारत दावत इलल्लाह भारत, 2005 ई)

जमाअत अहमदिया दुनिया भर में सच्ची ख़िलाफत इस्लामिया की देखरेख में इंसानियत की बड़ी जिम्मेदारी को केवल अल्लाह तआला के लिए कर रही है और जमाअत अहमदिया हमेशा इस नियम पर इंसानियत की राह पर अग्रसर है कि اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰی رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ उनके ाजरय इल्ला अली रब्ब ालिलमयन (अश्शुअरा: 165) अर्थात मेरा इनाम सारी दुनिया के रब्ब के ज़िम्मा है। इसी प्रकार डंके की चोट पर यह एलान करती है कि لَا نُرِیْدُ مِنْکُمْ جَزَآءً وَّ لَا شُکُوْرًا (अद्दहर: 10) कि हम इस सेवा के बदले में तुम से न कोई बदला चाहते हैं और न यह चाहते हैं कि आप हमारा शुक्रिया अदा करो।

अल्लाह तआला जमाअत के लोगों को अपनी शिक्षाओं के प्रकाश में निस्वार्थ और ईमानदारी से सेवाओं की तौफीक प्रदान करे। आमीन।

☆ ☆ ☆

शुक्रिया

अख़बार बदर हिन्दी के इस विशेष नम्बर की प्रूफ रीडिंग में आदरणीय महबूब हसन साहिब कादियान ने विशेष सहयोग दिया है। इदारा आप का शुक्रिया अदा करता है। सम्पादक

पृष्ठ 1 का शेष

* मुसलमान जो मसीह की ज़िन्दगी के मानने वाले थे उन का सुधार किया और मज़बूत दलीलों के साथ मसीह का फोत हो जाना प्रमाणित किया यह ऐसा अकीदा था कि जिस के कारण मुसलमानों को प्रत्येक क्षेत्र में ईसाइयों से साफ हार मिल रही थी और बहुत अधिक संख्या में मुसलमान ईसाई हो रहे थे क्योंकि यह अकीदा हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अफज़ल प्रमाणित कर रहा था। इस ख़तरनाक आस्था का आप ने सुधार फरमाया।

* खूनी महदी के अकीदा को रद्द किया।

* इस अकीदा को भी रद्द किया कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है यह तो इसाइयों का इस्लाम पर एक बहुत बड़ा आरोप था और है परन्तु दुर्भाग्य से कुछ मुसलमानों में यह आस्था आ गई।

* नबी ख़ुदा का चेहरा दुनिया को दिखाते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जिस समय दुनिया में आए ख़ुदा तआला दुनिया की नज़रों से छुप चुका था और ऐसा छुप चुका था कि वास्तविक लोगों का सम्बन्ध अल्लाह तआला से बिल्कुल कट चुका था हज़रत मिर्ज़ा साहिब ने निशान दिखा कर ख़ुदा तआला को ख़ुदा पूर्ण गुणों के साथ दुनिया पर प्रकट किया।"

(भाषण हज़रत मुस्लेह मौऊद 28 दिसंबर 1927 जलसा सालाना कादियान)

* और जहां तक नबियों का संबंध है " मुसलमानों में से सुन्नी सिवाय औलिया उल्लाह और सूफ़ियों के गिरोह और उनके मानने वालों के नबियों के पवित्र होने के विरोधी थे कुछ तो संभावनाओं की सीमा तक ही मानते थे परन्तु बहुत से व्यवहारिक रूप से गुनाह को उन की तरफ सम्बंधित करते और उन में कमियां महसूस करते थे। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में कहते कि उन्होंने तीन झूठ बोले हैं हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के बारे में कहते कि उन्होंने चोरी की। हज़रत इलसाय के बारे में कहते कि वह ख़ुदा से नाराज़ हो गया। हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम के बारे में कहते कि वह एक ग़ैर की पत्नी पर आशिक हो गए, और उसे प्राप्त करने के लिए उस के पति को युद्ध में भेजकर मरवा दिया। यह बीमारी यहां तक तरक्की कर गई कि सय्यद वुलदे आदम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हस्ती भी इस से सुरक्षित न रही। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि यह विचार बहुत बिल्कुल ग़लत हैं, और जो बातें कही जाती हैं वे बिल्कुल झूठ हैं। यह कभी नहीं हो सकता कि नबी कोई गुनाह करे।

(भाषण हज़रत मुस्लेह मौऊद 28 दिसंबर 1927 जलसा सालाना कादियान)

* कुरआन मजीद से संबंधित भी कई प्रकार की त्रुटियों में मुसलमान पीड़ित थे और अब भी हैं। एक ख़तरनाक आस्था नासिख़ और रद्द की है जिस से पूरे कुरआन से भरोसा उठ जाता है। इसी तरह कुरआन के बारे में यह भी एक ख़तरनाक अकीदा था कि कुरान हदीस के अधीन है आपने कुरआन मजीद से संबंधित सभी पैदा हुई गलत मान्यताओं और विचारों का सुधार किया।

* फरिश्तों के बारे में ग़लत गलतफहमियों दूर कीं और उनकी वास्तविक स्थिति बताई।

* दुआ के बारे में आप ने बहुत कुछ लिखा और व्यवहार में दुआ की स्वीकृति के निशान दिखाए जब कि मुसलमान दुआ के मूजज़ा से बिल्कुल बेख़बर थे यहां तक कि सर सैय्यद जैसे विद्वान कहलाने वाले उलमा भी दुआ की स्वीकृति को अस्वीकार करते थे।

* मुसलमानों का विश्वास था कि अल्लाह तआला के इल्हाम तथा कलाम का सिलसिला बंद हो गया है, आप ने इस ग़ैर-इस्लामिक मान्यता को भी ठीक किया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आख़िरी ज़माना के मुस्लेह की स्थिति से अन्य धर्मों की गलतियों को भी उन पर प्रकट किया लेकिन बहुत ही प्यार और मुहब्बत और पूर्णता सहानुभूति के साथ उन पर साबित किया कि इस्लाम ही वास्तविक समृद्धि और मोक्ष की गारंटी देता है।

ईसाई धर्म को तौहीद की शिक्षा दी और यह समझाया कि ब्रह्मांड का निर्माता, सृजनकर्ता एक है तीन ख़ुदाओं का विश्वास ग़लत और कानून कुदरत के ख़िलाफ है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम न तो सलीब पर फौत हुए और न ही लानती हुए। लानत (अभिशाप) का अभिप्राय बताता है कि शापित व्यक्ति का कण मात्र भी ख़ुदा से सम्बन्ध नहीं हो सकता है बल्कि इसका मतलब यह होगा कि ख़ुदा उस से बेज़ार और वह ख़ुदा से बेज़ार। ऐसे में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जैसे महान नबी को शापित ठहराना उन पर बेहद क्रूरता है। सलीब की घटना से अल्लाह तआला ने उन्हें

अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने दोस्तों को भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अख़बार बदर के विशेष नम्बर नवम्बर 2014 ई के लिए अपना पैग़ाम भिजवाते हुए फरमाया कि

"यह बात बदर के दफतर और पाठकों को हमेशा याद रखनी चाहिए कि यह अख़बार जमाअत के दोस्तों के आध्यात्मिक सुधार और उन्नति के लिए जारी किया गया था और हमारे बुज़ुर्गों ने बावजूद विपरीत परिस्थतियों के पूरे यत्न से उसे हमेशा जारी रखने की कोशिश की और उनकी दुआओं और पवित्र प्रयासों से ही यह आज तक जारी है और यह चीज़ इस बात की मांग करती है अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और लाभ प्राप्त करें। अल्लाह तआला अपने फज़ल से हिन्दुस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से और बाकी दुनिया के अहमदियों को प्राय: इसका अध्ययन करने की और इस से जुड़ी हुई बरकतों को समेटने की तौफ़ीक़ प्रदान करे। आमीन।"

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस महत्त्वपूर्ण और ईमान वर्धक उपदेश को सामने रखते हुए जमाअत अहमदिया भारत के दोस्तों की सेवा में अनुरोध किया जाता है कि हर घर में अख़बार बदर का अध्ययन किया जाना बहुत ज़रूरी है। इसमें कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर के जुम्ए के ख़ुत्बे और भाषणों तथा हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों के दौरों की बहुत दिलचस्प और ईमान वर्धक रिपोर्ट नियमित प्रकाशित होती हैं जिस का अध्ययन हर अहमदी लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला के फज़ल से अब यह अख़बार हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलुगु , मलयालम, उड़िया भाषा में प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी दोस्तों ने अभी तक अखबार बदर अपने नाम नहीं लगवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर लगवाकर ख़ुद भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य लोगों को भी इस अध्ययन का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर के उपदेशों को पर अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।

मीटिंग से संबंधित किसी भी शिकायत या फीस को खोजने के लिए निम्नलिखित नंबरों से संपर्क करें। (नवाब अहमद, प्रबंधक अख़बार बदर)

managerbadrqnd@gmail.com +91 94170 20616 ,+91 1872 224757

जीवित बचा लिया और`हत के बाद नसीबैयन के रास्ते अफगानिस्तान होते हुए वह भारत पहुंचे और एक सौ पच्चीस साल की उम्र पाकर फौत हुए और श्रीनगर मुहल्ला ख़ानियार में आपकी कब्र है।

जहां तक हिन्दुओं का संबंध है इन के सभी समुदायों को आप ने तौहीद(एकेश्वरवाद) की तरफ बुलाया और बताया कि ब्रह्मांड का कण कण अल्लाह तआला का पैदा किया हुआ है। कोई भी चीज़ अल्लाह तआला को छोड़कर, न तो हमेशा से हैं और न हमेशा रहेगी । रूहें और शरीर सब कुछ अल्लाह तआला की पैदा की हुई हैं। आवागमन के अकीदा को जोश भरे तर्कों के साथ रद्द फरमाया। हिंदुओं के एक समुदाय आर्य धर्म के नियोग की आस्था को अत्यंत बेशर्मी भरी आस्था और अमानवीय हरकत करार दिया और कहा " मेरी राय यही है कि यह वेद की कभी शिक्षा नहीं।" आप फरमाते हैं:

"शाबाश हे सनातन धर्म कि तूने न तो प्रत्येक कण और प्रत्येक जीव को न अपने अस्तित्व का उन्हीं को परमेश्वर समझा, और न तूने नियोग की गंद को अपनी आस्था में शामिल किया। अत: मैं सच सच कहता हूँ कि यदि तू इतना और आगे कदम बढ़ाए जो ख़ुदा तक पहुंचे हुए जोगयों की तरह हो जो परमेश्वर की मुहब्बत से भरे होते हैं और ऐसा उस से निकट हो कि मूर्ति पूजा को भी अपने दामन से फेंक दे तो आर्यों की तुलना में तेरी हर क्षेत्र में जीत है वे एक रास्ते से तेरे मुक़ाबिल पर आएंगे और सात मार्ग से भागेंगे और यह नई बात नहीं प्राचीनकाल से जोगियों का जो प्रेम की आग में जल जाते हैं यही धर्म है कि सिवाय परमेश्वर के सब तुच्छ है। (सनातन धर्म, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 19 पृष्ठ 479)

नीचे हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कुछ उपदेश प्रस्तुत करते हैं आप फरमाते हैं

"याद रहे कि इंजीलों में दो प्रकार की भविष्यवाणियां हैं जो हज़रत मसीह के आने के बारे में हैं।

(1) एक वह जो अन्तिम युग में आने का वादा है वह वादा आध्यात्मिक (रूहानी) तौर पर है और वह आना उसी प्रकार का आना है जैसा कि एलिया नबी मसीह के समय दोबारा आया था। अत:वह हमारे इस युग में एलिया की भांति आ चुका और वह यही लेखक है जो मानव-जाति का सेवक है जो मसीह मौऊद हो कर मसीह अलैहिस्सलाम के नाम पर आया।

(मसीह हिन्दुस्तान में रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 38)

"इस अंधकारमय युग का प्रकाश मैं ही हूं। जो व्यक्ति मेरा अनुसरण करता है वह उन गढ़ों और खाइयों से बचाया जाएगा जो शैतान ने अन्धकार में चलने वालों के लिए तैयार किए हैं। मुझे उसने भेजा है ताकि मैं अमन और सहनशीलता के साथ संसार का सच्चे ख़ुदा की ओर मार्ग-दर्शन करूं और इस्लाम में नैतिक अवस्थाओं को पुन: स्थापित कर दूं, और मुझे उसने सत्याभिलाषियों की सन्तुष्टि के लिए आकाशीय निशान भी प्रदान किए हैं तथा मेरे समर्थन में अपने अदभुत कार्य दिखाए हैं और ग़ैब (परोक्ष) की बातें तथा भावी रहस्य जो ख़ुदा तआला की पवित्र किताबों की दृष्टि से सच्चे की पहचान के लिए मूल मापदण्ड हैं मुझ पर खोले हैं तथा मुझे पवित्र ज्ञान एवं आध्यात्म ज्ञान प्रदान किए हैं। इसलिए उन रूहों ने मुझ से शत्रुता की जो सच्चाई को नहीं चाहतीं तथा अंधकार से प्रसन्न हैं, परन्तु मैंने चाहा कि जहां तक मुझ से हो सके मानव जाति की हमदर्दी करूं।

अत: इस युग में ईसाइयों के साथ बड़ी हमदर्दी यह है कि उनको उस सच्चे ख़ुदा की ओर ध्यान दिलाया जाए जो पैदा होने, मरने और दु:ख-दर्द इत्यादि हानियों से पवित्र है, वह ख़ुदा जिस ने सम्पूर्ण प्रारंभिक शरीरों तथा ग्रहों को गेंद (गोलाकार) की आकृति पर पैदा करके अपने प्रकृति के नियम (क़ानूने-क़ुदरत) में यह निर्देश अंकित किए कि उस के अस्तित्व में गोलाई की भांति एकत्त्व तथा समानता है। इसलिए विस्तृत वस्तुओं में से कोई वस्तु तीन कोनों वाली पैदा नहीं की गई अर्थात् जो कुछ ख़ुदा के हाथ से पहले पहल निकला, जैसे पृथ्वी, आकाश, सूर्य, चन्द्र तथा सारे सितारे और तत्त्व वे सब गोल हैं जिनका गोलाकार होना तौहीद की ओर संकेत कर रहा है। अत: ईसाइयों से सच्ची हमदर्दी तथा सच्चा प्रेम इससे बढ़ कर और कुछ नहीं कि उस ख़ुदा की ओर उनका मार्ग-दर्शन किया जाए जिसके हाथ की वस्तुएं उसको तस्लीस से पवित्र ठहराती हैं।

और मुसलमानों के साथ बड़ी हमदर्दी यह है कि उनकी नैतिक अवस्थाओं को ठीक किया जाए तथा उनकी उन झूठी आशाओं को कि एक ख़ूनी महदी और मसीह का प्रकट होना अपने दिलों में ऐसे जमाए बैठे हैं जो इस्लामी निर्देशों के सर्वथा विपरीत हैं दूर किया जाए और मैं अभी उल्लेख कर चुका हूं कि वर्तमान के कुछ उलेमा (मौलवियों) के ये विचार कि ख़ूनी महदी आएगा और तलवार से इस्लाम को फैलाएगा ये समस्त विचार क़ुर्आनी शिक्षा के विरुद्ध और केवल इच्छाएं हैं तथा एक नेक और सत्य प्रिय मुसलमान के लिए इन विचारों को त्यागने के लिए केवल इतना ही काफी है कि क़ुर्आनी निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़े और थोड़ा ठहर कर सोच-विचार से काम लेकर देखे कि ख़ुदा तआला का पवित्र कलाम क्योंकर इस बात का विरोधी है कि किसी को धर्म में सम्मिलित करने के लिए वध करने की धमकी दी जाए

(मसीह हिन्दुस्तान में रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 15 पृष्ठ 13)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:"ख़ुदा तआला ने सभी विरोधियों को निरुत्तर और लाजवाब करने के लिए मुझे भेजा है और मैं निसन्देह जानता हूं कि हिंदुओं और ईसाई और सिखों में कोई भी नहीं है जो आसमानी निशानों और स्वीकृति और बरकतों में मेरा मुकाबला कर सके। यह बात स्पष्ट है कि जीवित धर्म वही एक धर्म है जो आसमानी निशान अपने साथ रखता है और पूर्ण स्पष्टता का नूर उसके सिर पर चमकता हो अत: वह इस्लाम है। क्या ईसाईयों में या हिंदुओं में या सिखों में कोई ऐसा है जो मेरे साथ मुकाबला कर सके? इसलिए, मेरी सच्चाई के लिए, यह पर्याप्त सबूत है कि मेरे ख़िलाफ किसी कदम को स्थिरता नहीं है अब जिस तरह चाहो अपनी तसल्ली कर लो कि मेरे प्रकट होने से वह पेशगोई पूरी हो गई जो बराहीने अहमदिया में कुरआन की इच्छा के अनुसार थी और वह यह है

هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ رَسُوۡلَہٗ بِالۡہُدٰی وَ دِیۡنِ الۡحَقِّ لِیُظۡہِرَہٗ عَلَی الدِّیۡنِ کُلِّہٖ

(तिरयाकुल कुलूब, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 15, पेज 249)

अल्लाह से दुआ है कि वह दुनिया में तौहीद की हवा चलाए, लोगों के दिलों में तौहीद की मुहब्बत डाल दे, और मानव जाति को इस्लाम की तरफ लाकर उनकी निजात और स्थायी ख़ुशहाली के सामान पैदाकर दे। आमीन।

(मंसूर अहमद मसरूर)

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad